माह जुलाई 2022 से दिसम्बर 2022 वर्ष 8 अंक 3-4 मूल्य 30

# साहित्य सरोज

RNI No- UPHIN/2017/74520 साहित्यिक पत्रिका

## मेअला छोना बाबू अइछा न..

02 अप्रैल 2017
साहित्य सरोज पत्रिका की संस्थापिका
श्रीमती सरोज सिंह
की 5वीं पुण्य तिथि पर विनम्र श्रद्धांजली
अशोक कुमार सिंह पति, प्रशांत सिंह-पूजा सिंह पुत्र-पुत्रवधू ,विकास सिंह-रीवा सिह पुत्र-पुत्रवधू
अखंड प्रताप सिंह-ममता सिंह पुत्र-वधू ,प्रीति सिंह-संजय सिंह पुत्री-जमाई चम्पू व चपलू पौत्र, सीमू व चीची सुपौत्री
एवं समस्त साहित्य सरोज सरंक्षक, संपादक मंडल एवं समस्त प्रभारी पदाधिकारी साहित्य सरोज
02 अप्रैल नारीशक्ति उत्थान दिवस के रूप में

# साहित्य सरोज

## एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

**वर्ष–8 अंक –3–4**

RNI No- UPHIN/2017/74520

माह जुलाई 2022 से दिसम्बर 2022

संस्थापिका -: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादिका -: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक -: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादिका -: श्रीमती रेनुका सिंह गाजियाबाद

प्रधान कार्यालय -:

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो० 9451647845

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट-: https://www.sarojsahitya.page/

मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर– साहित्य सरोज

प्रति अंक –30रूपये मात्र, चार वर्ष शुक्ल –: 500 रूपये मात्र, आजीवन 5000 रूपये मात्र

**संपादक मंडल**

सहायक प्रधान संपादक श्रीमती रेखा दुबे विदिशा मध्यप्रदेश

उप संपादक डॉ प्रिया सूफी होशियारपुर, पंजाब

तकनीकी संपादक - श्री राजीव यादव, नोएडा, गौतमबुद्धनगर

प्रसार प्रभारी -राम भोले शर्मा, हरदोई, उत्तर प्रदेश

प्रधान कार्यालय प्रभारी - प्रशांत सिंह गहमर, गाजीपुर



**जिला प्रतिनिधि बनें**

**सम्पर्क करें 9451647845**



स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ०प्र० पिन २३२३२७ द्वारा पंकज प्रकाशन



पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।



तकनीकि पक्ष-: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''
प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर
चित्र -गूगल ईमेज द्वारा।


## आपके नाम

साहित्य सरोज पत्रिका के आठवें वर्ष का तृतीय एवं चतुर्थ अंक का संयुक्तांक आपके हाथों में पहुँच चुका है। आप के उत्साहवर्धन एवं समर्थन के कारण कोरोना के काल के बाद यह प्रथम अंक है जो प्रिंट होकर आपके हाथों में आया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप पहले की तरह अपना स्नेह बनाये रखेंगें।

साहित्य सरोज केवल एक पत्रिका नहीं हैं, बल्कि एक सोच है, कार्य करने की शक्ति है, जिसका उद्वेश्य केवल अपनी पहचान बनाना नहीं है, बल्कि इसका उद्वेश्य समाज में छुपी प्रतिभाओं को निकालना, परिस्थितियों से परेशान साहित्यकारों की मदद करना, बुजुर्ग साहित्यकारों को आज के जमाने के साथ चलाना, उनके ख्वाब पूरे करने में उनकी मदद करना। जो आपके सहयोग के बिना संभव नही।

साहित्य सरोज पत्रिका द्वारा आयोजित होने वाले गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव हर साल की भाँति इस वर्ष दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह में आयोजित किये जायेगें, हमें आशा है कि आप पहले की तरह अपना स्नेह बना कर कार्यक्रम में जरूर प्रतिभाग करेगें।

हमें गर्व है कि हम धीरे-धीरे ही सही चलते हुए अपनी पहचान बनाने में सफल रहे हैं। हम कभी अपने नाम के लिए काम नहीं करते, हम हमेशा से यह चाहते रहे हैं कि हम आपका सहयोग करें और आप आगे बढ़े। हम अपनी इस बात को भारत के कोने-कोने में पहुँचाना चाहते हैं, जिसको लेकर हमने पूरे भारत के हर जिले में अपना प्रतिनिधि बनाने की सोची है।आप इसके लिए सादर आमंत्रित हैं।

**कान्ति शुक्ला–प्रधान संपादक**

# इस अंक में


| | | | |
|---|---|---|---|
| संपादक का पन्ना | | | 04 |
| पंच से पक्षकार | कहानी | अंकुर सिंह | 05 |
| गीतिका | | डॉ सोनिया | 05 |
| सजृन, सफेद खून, ईच्छापूर्ति | लघुकथाएं | अनीता श्रीवास्तव, मनोज कर्ण, रेखा दुबे | 06 |
| सब्र का फल | कहानी | रोहित मिश्रा | 07 |
| जिम्मेदारी | सत्यकथा | रणजीत यादव | 08 |
| सॅंवरकी | गीत | धीरज श्रीवास्तव | 09 |
| चीत्कार | सत्यकथा | डॉ प्रभात पाण्डेंय | 10 |
| तारीफ | कहानी | संतोष शर्मा शान | 15 |
| निशान | कहानी | डॉ प्रतिभा पराशर | 15 |
| रोटी | कहानी | आशु गुप्ता | 16 |
| सेफ अनसेफ | कहानी | डा उपमा शर्मा | 17 |
| ग़ज़ल | | विजय बेशर्म | 18 |
| संस्कार | लघुकथा | सुर्वाणा जाधव | 19 |
| वरिष्ठता पाने के हथकड़े | हकीकत | पूनम झा प्रथमा | 19 |
| लीव इन रिलेशनशिप | लेख | डॉ गिरिश वर्मा | 20 |
| एक नया पागलपन | कटाक्ष | विमल शुक्ल | 21 |
| श्री ओलंम्पिक चिंतनम | व्यंग्य | रामभोले शर्मा | 22 |
| बंटवारा | कहानी | ऋतु गुप्ता | 23 |
| भोर हुई | कविता | अंजु गाँधी | 23 |
| पराम्परिक कलाएं | जानकारी | किरण बाला | 24 |
| बाढ़ नहीं बहार | व्यंग्य | विनोद कुमार विक्की | 26 |
| संजय गिरी की ग़जलें | | | 26 |
| नया नियम | बाल कहानी | अनिता गंगाधर शर्मा | 27 |
| महेन्द्र अग्रवाल की ग़ज़लें | | | 28 |
| आह स्टेट्स वाह स्टेट्स | कहानी | हेमलता गोलछा | 29 |
| अद्‌भुत मिलन | कहानी | डॉ रंजना शर्मा | 30 |
| नवगीत | नवगीत | जयप्रकाश श्रीवा | 32 |
| प्यार तेरे कितने रूप | हास्य व्यंग्य | अश्विनी राय अरूण | 33 |
| मौत जब मुस्कुराने लगे | कविता | उमेश कुमार पाठक | 36 |
| भारतीय सिनेमा अब तक | आलेख | कौशल कुमार सिंह | 37 |
| सरस्वती वंदना | भक्ति रचना | कुमकुम कुमारी | 38 |
| उड़ने की आजादी | मन की बात | सरिता सिंह | 38 |
| आया ऊंट पहाड़ के नीचे | व्यंग्य | डा0 पुष्पलता | 39 |
| इतनी नफरत | कविता | किशोर श्रीवास्तव | 40 |

## संपादक का पन्ना

नमस्कार

साहित्य सरोज के सपांदक के रूप में पत्रिका द्वारा आयोजित 8वें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव एवं सम्मान समारोह 2022 में यह अंक मेरा पहला प्रकाशित अंक है। गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन के बारे में आप सभी जानते हैं कि यह कार्यक्रम प्रसिद्व जासूसी उपन्यासकार गोपाल राम गहमरी एवं साहित्य सरोज पत्रिका की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की स्मृति में प्रत्येक वर्ष सिखने सिखाने के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसमें देश विदेश के साहित्यकारों का सम्मान किया जाता है। उनकी कला का प्रदर्शन किया जाता है। इस कार्यक्रम में आये सभी सम्मानित साहित्यकारों एवं कलाकारों का मैं रेनुका सिंह एक बार पुनः हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करती हूँ।

साहित्य सरोज के इस अंक के पूर्व सभी अंक आपने केवल पी0डी0एफ0 के रूप में देखे हैं। परन्तु अब यह पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशन में आ गई है। आप सब अपना स्नेह बनाये रखेंगें और जल्द ही यह पत्रिका जन मानस पर अपनी छाप छोड़ देगी ऐसा मुझे पूर्व विश्वास है। क्योंकि हम इसे हर तरह से पठनीय बना देंगे । कहानी ,कविता ,आलेख ,बच्चो का कोना हर उम्र के व्यक्ति को इसमे साम्रगी मिल जाएगी । हमारी सनातन संस्कृति को बचाने व आगे बढ़ाने का पूरा यत्न किया जाएगा । हम अपनी सभ्यता को नए कलेवर में प्रस्तुत करेंगे जिस से हमारी नई पीढ़ी भी जुड़ सके । लोक कथाएं ,लोक गीत सभी इस मे शामिल किए जाएंगे। हमने अपनी पत्रिका के माध्यम से केवल हर वर्ग के पाठकों को जोड़ने का ही प्रयास नहीं किया बल्कि हमने हर वर्ग के हर उम्र के लोगों के समाजिक, शैक्षिक, आर्थिक उत्थान की भी योजना बनाई है। जिससे हमारा हर वर्ग उत्थान कर सके।

आज सोशलमीडिया के युग में पुस्तकें अपना अस्तिव खो रही है, पहले हम यात्रा के दौरान पुस्तकें पढ़ा करते थे, समाचार पत्र पढ़ा करते थे लेकिन अब मोबाइल में खो जा रहे हैं। सारा सारा दिन चैट एवं गेम में व्यतीत कर दे रहे हैं और कहते हैं समय नहीं मिल पाता। जबकि पुस्तकों के साथ बीताया हुआ समय हमें न केबल जीवन में नई दिशा प्रदान करता है बल्कि जीवन के नये आयाम को सीखने का मौका देता है।

साहित्य सरोज के साथ-साथ हम तीन दो पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं, जिसमें धर्म पर आधारित पत्रिका धर्मक्षेत्र और महिलाओं के स्वाथ्य, फैंशन, ब्यूटी एवं रोजगार पर आधारित पत्रिका ब्लैक ब्यूटी जिससे के लिए एक महिला संपादक की तलाश भी हमने शुरू कर दिया है।

आप सभी को नववर्ष की हार्दिक बधाई देते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करती हूँ। जय हिन्द, जय हिन्दी, जय हिन्दू।

**रेनुका सिंह**
**संपादक साहित्य सरोज**

## पर्यावरण

क्या मेमसाहब ! आप भी फालतू के काम करती रहती हो । कभी तीन डस्टबिन बनाओ कभी किचन का कूड़ा उसमे न डालो कोई ये बेकार के काम नही करता ।और आप ये किचन के कूड़े को फिर खाद बनाने में इस्तेमाल करती हो । आपको ये सब करना गन्दा नही लगता क्या ? अरे पुष्पा ! तू तो बावली है ,कुछ समझती ही नही है। ये सब मै अपने लिए नही कर रही हूं तो फिर किसके लिए ? "तेरे बच्चो के लिए ,अपने बच्चो के लिए अपनी पूरी नई पीढ़ी के लिए 'अच्छा वो कैसे ? तो सुन ! तू ये जो जगह जगह कूड़े के पहाड़ देख रही है न ये हम सबके घरों से ही निकला है जो पूरी दुनिया का वातावरण खराब कर रहा है ।धरती में प्रदूषण फैला रहा है हमारी साँस लेने की हवा को खराब कर रहा है ये जो बगल वालों की छोटी बच्ची बीमार हुई थी न ?वो भी प्रदूषण से ही हुई थी । बस तब से ही मैने ठान लिया कि अपने स्तर से जो भी हो सकता है करूंगी । खाली सरकार के भरोसे बैठे रहने से कुछ नही होगा ।अच्छा तो ये बात है ! तो मै भी अब इस काम मे अपना योगदान दूंगी और कूड़ा सही जगह डालने में किचकिच नही करूंगी ।

रेनुका सिंह गाज़ियाबाद

कहानी

# पंच से पक्षकार

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक जौनपुर,
मोबाइल – 8367782654.

हरिप्रसाद और रामप्रसाद दोनों सगे भाई थे। उम्र के आखिरी पड़ाव तक दोनों के रिश्ते ठीक-ठाक थे। दोनों ने आपसी सहमति से रामनगर चौराहे वाली अपनी पैतृक जमीन पर दुकान बनाने का सोचा, ताकि उससे जो आय हो उससे उनका जीवन सुचारू रूप से चल सके।

दुकान का काम चल ही रहा था तभी हरिप्रसाद और रामप्रसाद के बीच कुछ बातों को लेकर विवाद हो गया और उनमें बातचीत होना बंद हो गया। जिससे उनकी दुकान का काम भी रुक गया। दोनों एक दूसरे पर खूब आरोप-प्रत्यारोप भी लगाने लगे। बढ़ते विवाद को देख उसे सुलझाने के लिए उनके पड़ोसियों ने मोहल्ले के कुछ लोगों को जुटाकर एक पंचायत बुलाई, परन्तु पंचायत के सामने भी दोनों आपसी विवाद को खत्म करने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। बल्कि एक दूसरे पर एक से बढ़कर एक आरोप-प्रत्यारोप लगाए जा रहे थे।

पंचायत ने भी मामले को बढ़ते देख उन्हें कुछ दिनों के लिए एक-दूसरे से दूर रहने की कड़ी हिदायत दी जिससे उनका विवाद हिंसा का रूप धारण ना कर सके। इसके साथ ही पंचायत ने दुकान के बचे आधे-अधूरे काम को पूरा करने की जिम्मेदारी गाँव के पढ़े-लिखे एक व्यक्ति विनोद को दे दिया ताकि दोनों भाईयों के विवाद से उनके धन का नुकसान ना हो।

हरिप्रसाद और रामप्रसाद ने भी विनोद को पंच परमेश्वर का दर्जा देते हुए दुकान के बचे हुए काम को पूरा करने के लिए विनोद के नाम पर सहमत हो गए। परन्तु विनोद का झुकाव हरिप्रसाद की तरफ जल्दी हो गया। विनोद हरिप्रसाद के हर बातों का अमल दुकान के कार्यों में करता और यदि रामप्रसाद इसका विरोध करना चाहता तो उसकी बातों को अनसुना कर देता या रामप्रसाद को तीन-पांच पढ़ाकर उसकी बात टाल देता। कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा और धीरे-धीरे रामप्रसाद को भी इस बात का एहसास होने लगा की वह ठगा जा रहा है और उसके साथ अन्याय हो रहा है। उसने इसके संदर्भ में विनोद से सीधा बात करना ही उचित समझा।

अगली सुबह खेत और घर के जरूरी काम निपटा रामप्रसाद विनोद के घर जा पहुंचा और कहने लगा- " विनोद भाई, पंचायत की सहमति पर मैंने आपको पंच परमेश्वर माना है और इसलिए एक पंच के नाते आपसे निष्पक्ष न्याय करने की गुहार लगाने आया हूँ।"

इतना सुनते ही विनोद गुस्से में रामप्रसाद को भला बुरा कहते हुए हरिप्रसाद के सामने उसकी तुच्छ औकात की बात करने लगा और हरिप्रसाद के तारीफों की पुल बांधने लगा। विनोद के इस स्वभाव और एक पक्षीय नजरिया को देखते हुए रामप्रसाद ने कहा- " विनोद जी, आज भले ही मेरी आर्थिक औकात हरिप्रसाद से छोटी है, परन्तु हरिप्रसाद के चंद रुपयों के लालच में आपने अपनी औकात पंच परमेश्वर जैसे ऊँचे दर्जे से गिराकर एक पक्षकार के स्तर की बना ली।"

इतना सुनते ही विनोद के चेहरे का रंग उड़ गया और रामप्रसाद गमछे से अपना पसीना पोंछते हुए अपने घर की तरफ चल पड़ा।

## गीतिका

जिन्दगी को अब मनाना आ गया
बेवजह ही मुस्कुराना आ गया।।

रूठ जाते थे सभी अपने यहाँ
आज उन सबको हँसाना आ गया ।।

नफरतें सबके दिलों से दूर कर
नेह का दीपक जलाना आ गया ।।

ठोकरें खाई यहाँ खुद ही कई
आज गिरते को उठाना आ गया ।।

"सोनिया" कुछ और तुमसे क्या कहे
आज जीने का बहाना आ गया ।।

डॉ सोनिया
डेरा बस्सी, जिला मोहाली,
पंजाब 140507
मोबाइल : 6280420736

**लघु कथाएं**

## सृजन– अनीता श्रीवास्तव टीकमगढ़

तोपचंद- आप गीत अच्छा लिखती हैं।
हम- धन्यवाद।
एक ठो अमुक पर लिखिए ना!
क्यों?
अरे बढ़िया लिखती हैं इसलिए कह रहा हूँ?
क्यों?क्यों लिखूँ?
कमाल है! मैंने कुछ गलत कह दिया?
हम रसगुल्ले भी बढ़िया बना लेते हैं। तो क्या आप कह देंगे दो किलो बना लाइये?
-अरे!
हम सिलाई भी कर लेते हैं तो क्या कह देंगे - दो जोड़ी कुर्ता- पजामा सी कर लाइये?
ऐसे कैसे कह देंगे? सब में कुछ न कुछ लगता है। ऐसे ही नहीं बन जाता।
सृजन में भी लगता है... कुछ। जिसमें नहीं  लगता वह सृजन, सृजन नहीं होता।

## इच्छापूर्ति – मनोज कर्ण

जा बेटा जा......माँ की अन्तिम इच्छा पूरी कर दे। पिता जी ने पुचकारते हुए कहा।माँ की अंतिम इच्छा थी की मैं विदेश जाकर नौकरी करूँ और आर्थिक तंगी से निजात पा लूँ। ना नुकूर करने के बाद भी मैं मलेशिया चला आया। रवि, " तेरी माँ आज दुर्घटनावश हम सब को छोड़ चली गई ।"

मलेशिया आने के दूसरे दिन ही पिता का मेल पढते- पढ़ते दिमाग सुन्न,और शरीर काठ सा हो गया। नो, नो, नो रवि ! आप हमारे कंपनी करार के अनुसार तीन साल तक स्वदेश नही लौट सकते। मानव संसाधन अधिकारी ने छुट्टी का मेल पढ़ते ही अपना निर्णय सुना दिया। ओह ! मैं माँ की अंतिम संस्कार मे शामिल नही हो पाया.लेकिन, कोई बात नही , माँ की अन्तिम इच्छा तो पूरी कर दी। और अंतिम तो एक ही बार होता है ना  । "

# सफेद खून

आज सुबह -सुबह सुमन अंजली भाभी का फोन देखकर हैरान रह गई।  अरे आज अंजली भाभी का फोन कैसे आ गया?.फोन उठा कर जैसे ही सुमन ने हैलो किया भरपूर आत्मियता भरी आवाज कानों में पड़ी ,अरे सुमन कहाँ हो?.. इतने दिन से!.तुम्हें मालूम है। तुम्हारे भाई साहब को विधायक के लिए टिकिट मिल गया है'। बस..अब तुम तैयार हो जाओ चुनाव प्रचार के लिए कोई बहाना नहीं सुनूंगी। अभी नौ बजे तक घर से निकलेंगे अपन सब एक-एक दिन एक-एक एरिया कवर करेंगे । आ रही हो ना ?.. सुमन के पास हां करने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह गया था। इसलिए वह बोल पड़ी , ठीक है भाभी ,बस अभी थोड़ी देर से आती हूँ ।जब वह वहां पहुंची तैयार गाड़ियों में , सभी सवार हो कर चल दिए।

चुनाव प्रचार-प्रसार के लिए..पहला दिन शहर के शुरु में बनी झुग्गी-झोंपड़ियों में जाने के लिए निश्चित किया गया । जब सभी गाड़ियों से उतरे तो सुमन उनकी गरीबी को देख कर सिहरन से भर उठी !.उफ दरिद्रता की ऐसी मार.."दो जून की रोटी और दो कपड़े" शायद उनके लिए स्वर्ग के चरम सुख को देने वाले थे!. उसका ह्रदय वेदना से भर उठा और मुँह से स्वतः ही निकल गया चलो कम से कम सुभाष भाई जीतेंगे तो कुछ तो बदलेगा। तभी पार्टी की एक सदस्या सुमन को खींचते हुए आगे की ओर ले गई और हंसते हुए बोल भाभी यहां कुछ नहीं बदलेगा जैसा है,वैसा ही रहेगा "कोई सी भी पार्टी आ जाये".. आप तो सुभाष भाई के लिए वोट माँगो.हो सकता है जीतने पर वह आगे-पीछे हमारे कुछ काम आ जाएं " सुनते ही सुमन ने उसे देखा हँसते हुए उसका खून सफ़ेद होकर जम रहा था, सुमन ने झट अपनी हथेली को देखा, उसे  राहत महसूस हुआ कि उसका खून अभी तक सफ़ेद होना बाकी था.।

**रेखा दुबे**
**विदिशा, मध्यप्रदेश**

कहानी

# सब्र का फल

रोहित मिश्र, प्रयागराज

रवि रोज की तरह आज भी सुबह सुबह इस आस में अपनी सब्जियों की दुकान खोलकर बैठ गया कि आज अच्छी बोहनी होगी। पर दोपहर के 2 बज गये, पर एक भी ग्राहक उसकी दुकान पर सब्जी लेने नही आया। रवि बोला - हे... भगवान, मुझसे कौन सा अपराध हो गया ?जो मुझे ये दिन देखने पड़ रहे है। बोहनी तक नही हो रही है।

सब्जियां कोई गेहूँ, चावल तो थे नही, जो महिनो खराब न होते, अब उन सब्जियो का क्या करता वो ?तभी उधर से रामलाल गुजर रहा था। उसकी भी हालत रवि के जैसे ही थी। आजकल कँही मजदूरी नही मिल रही थी। जिस कारण उसके घर का चूल्हा भी नही जल रहा था।

तभी रवि रामलाल से बोला - कैसे हो रामलाल ?

रामलाल - क्या बताऊ रवि भाई, कँही काम नही मिल रहा है, दो दिन से घर का चूल्हा नही जला है। कँही काम हो तो बताओ। कुछ पैसो का इंतजाम ही हो जाय। तभी रवि ने सोचा ,इसकी भी हालत मेरे जैसे ही है। क्यो न थोड़ी सब्जी रामलाल को दे दी जाए... सब्जी खराब होने से अच्छा उससे किसी की भूख मिट जाएगी। रवि- ऐसा है रामलाल, कुछ सब्जियां ले लो और जाओ घर में बच्चे इंतजार कर रहे होगे।

रवि की इस तरह की बाते सुनकर रामलाल का हदय द्रवित हो गया, और उसकी आँखो से आँसू आ गये। रामलाल बोला- ऐसी मुश्किल समय तुम्हारा एहसान में कैसे चुकाऊंगा ?अभी तो मेरे पास फूटी कौड़ी नही है। रवि ने कहा- जब पैसै होगे तब दे देना। अभी घर जाओ , सब इंतजार कर रहे होगे। रामलाल को कुछ टमाटर, पालक, मूली जैसी कुछ सब्जियां देकर विदा किया।

शाम 6 बजे तक इक्का दुक्का ग्राहक छोड़, रवि की दुकान पर को नही आया था। जो आए थे, वो भी 5 -10 रुपये की सब्जियां लेकर चले गये थे। अँधेरा छा ही रहा था कि तभी उसकी दुकान के पास एक सफारी आकर रुकती है, और उसमें से एक सफेद पैंट शर्ट पहने व्यक्ति मोबाइल से बाते करते हुए निकलता है। उस व्यक्ति का घर शहर से आउट आफ एरिया में था। जिस कारण सुविधाओं की उस इलाके में कमी थी। अचानक ही उस व्यक्ति के यहाँ परिवार के कुछ सदस्य आ रहे थे, तो लोगो के खाने के लिए सब्जियाँ खरीदने निकला था, काफी ढूड़ने के बाद उसे रवि की दुकान मिली थी। तब जाकर उसने राहत की साँस ली थी।

हाँ, जल्दी ही लेकर आ रहा हूँ... मिल गया है एक.... देखता हूँ.... कहते हुए, रवि की दुकान के पास आकर बोला - क्या भाव दिए हो टमाटर ?

रवि - बीस रुपये किलो है, बाबू जी

व्यक्ति - और ये नींबू

रवि - बाबू जी एक रुपये की एक है।

व्यक्ति - ये लौकी और पालक कैसे है ?

रवि - अरे बाबू जी ये लौकी बहुत मुलायम है, सुबह ही खेत से तोड़े है। पालक तो एकदम ताजी है।

व्यक्ति - अच्छा ऐसा करो दो लौकी, एक किलो टमाटर, एक किलो पालक, कुछ धनिया और मिर्च और दस नीबू दे दो।

रवि - सभी सब्जियां तौलकर व्यक्ति के झोले में भर देता है। तभी व्यक्ति बोलता है कि सब का कितना हुआ ?

रवि - अँगुली पर गिनते हुए... टमाटर का 20 रुपया और लौकी का दस - दस बीस, मिलाकर 40 नीबू का मिलाकर 50 और पालक का दस मिलाकर 60 और धनिया मिर्च का मिलाकर 65 रुपये हुआ।

व्यक्ति ने अपनी जेब से 65 रुपये रवि को देकर गाड़ी में सब्जियां रखकर चला गया।

65 रुपये पाकर रवि आकाश की तरफ देखते हुए, भगवान का शुक्रिया किया, और खुशी खुशी सामान समेटकर घर चला गया।

सत्यकथा

# जिम्मेदारी

बात उस समय की है जब मैं आठवीं क्लास में पढ़ाई कर रहा था। शाम का समय था, मैं घर पर पढ़ाई करने के बाद टहलने के लिए निकला था।हमारे गॉव के बगल से रेलवे लाइन गुजरती है,मैं उसी तरफ घूमनें निकल पड़ा।कुछ दूर आगे जाने पर छोटे बच्चों की टोली उछल-कूद करते हुए रेलवे-लाइन की तरफ से वापस आती नजर आयी।बच्चों की टोली मेरे बगल से गुजरी तो मैंनें एक बच्चे के मुंह से सुना-"ट्रेन पलट जायेगी तो हम सब उसमें बैठ जायेंगे।" दूसरे ने कहा "तब तो सभी यात्री भींग जायेंगे", क्योकि उस समय हल्की-हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी। मैंनें उनकी बात को बीच में ही काटते हुए पूछा "क्या हो गया? ट्रेन क्यों पलटेगी?-तुम लोग इस तरह की बात क्यों कर रहे हो?" उनमें से उम्र में बड़े एक लड़के ने बताया "भइया पटरी टूटी गयी है न, तभी हम लोग कह रहे हैं।" मैंनें तुरन्त उनसे पूछा- "कहॉ,?? किस तरफ टूटी है?" लड़को ने बताया "पोखर के बगल की तरफ" और सब भाग गये। मेरे दिमाग में प्रश्न कौधा-"क्या ये सब सही कह रहें हैं?" अगले ही मैंनें रेलवे-लाइन की तरफ अपनें कदम बढ़ा दिये।

रेलवे-लाइन पर पहुंच कर पोखरे की तरफ आगे बढ़ने लगा और वहॉ, पहुंच कर बारिश में भीगने की परवाह किये बिना टूटी रेल-पटरी को ढूढ़नें लगा। सायंकालीन अँधकार और आसमान में काले बादल घिरे होने के कारण कुछ स्पष्ट दिखाई नहींदे रहा था। फिर मैंनें एक उपाय ढूढ़ निकाला, मैंनें हाथ से घसिटकर टूटी रेल-पटरी को ढूढ़ना शुरू किया। लगभग 200 मीटर पटरी पर हाथ घसिटने के बाद भी टूटी पटरी नही मिली। मैं हताश नहीं हुआ और दूसरी पटरी पर उसी तरीके से ढूढ़ते हुए आगे बढ़ने लगा। लगभग 50 मीटर हाथ घसिटने के बाद मैं टूटी रेल-पटरी को ढूढ़नें में सफल हो गया।

यह तो रहा मेरा 'टूटी पटरी को खोज निकालने का अभियान।'अब प्रश्न यह था कि इसकी सूचना रेलवे-स्टेशन को कैसे दी जाय?मेरे गॉव से शाहगंज रेलवे-स्टेशन लगभग आठ किमी दूर था। मेरे पास उस समय फोन भी नही था, जिससे स्टेशन-मास्टर को इसकी सूचना देता। मैंनें पास से मदार का एक पौधा उखाड़ कर रेलवे-पटरी के बीच में पत्थरों के सहारे गाड़ दिया, ताकि यह, से हटने के बाद में पहचान सकूं कि कहॉ पर रेलवे-पटरी टूटी है। क्या करे?.क्या न करें? इन्हीं विचारों में उलझा ही था कि पूरब की तरफ दूर रेल लाइन के बीचो-बीच हल्की रोशनी प्रकट हुयी। रोशनी तेज होती जा रही थी,स्पष्ट था...कि को ट्रेन आ रही है। मैंनें सोचा अब क्या किया जाये?अब तो ट्रेन पलट जायेगी? मैंनें तुरन्त ही ट्रेन को रोकने का निर्णय लिया और रेलवे-ट्रेक पकड़कर पूरब की तरफ दौड़ पडा। रेल-पटरी पर पत्थर होने और बारिश की वजह से फिसलन होने के कारण दौड़ते समय मेरा चप्पल भी टूट गया,परन्तु मैंने नंगे-पांव ही दौड़ना जारी रखा। टूटी-पटरी से लगभग छः-सात सौ मीटर दूर पहुंचने के बाद रेलवे-पटरी के बीचो-बीच खड़ा हो गया।... खड़ा हो गया अपनी जिम्मेदारी को निभाने के लिए। मैंने अपनी लाल टी-शर्ट उतार कर हाथ में ले लिया.. .....तब तक ट्रेन भी काफी नजदीक आ चुकी थी। मेरा हृदय रेल-इंजन से भी तेज गति से धड़क रहा था,मैंने फिर भी धैर्य के साथ हिम्मत बांधे रखा। ट्रेन एकदम से मेरे सामने आ गयी। मैं जोर से चिल्लाता हुआ पटरी के बगल में कूद गया- "जाओ सब मरोगे. .??"जिन्दगी और मौत के इस खेल में अब मैं सुरक्षित था,परन्तु मेरा हृदय किसी अनहोनी की आशंका में थमा जा रहा था।

मेरा शरीर बारिश में भी पसीने से भीग गया और बुरी तरह से कॉपने लगा। ट्रेन किसी तरह से टूटी रेल-पटरी से सकुशल गुजर गयी। तब जाकर मेरे जान में जान आयी। मैंने सोचा मेरा टी-शर्ट पुराना हो जाने की वजह से लाल रंग हल्का हो गया है,इसी कारण से ट्रेन नहीं रूकी।

अब मैंने निर्णय किया कि साइकिल से स्टेशन जाकर इसकी सूचना दूंगा। मैं रेलवे-पटरी पकड़कर नंगे पांव ही घर की तरफ वापस जाने लगा। टूटी पटरी से कुछ ही दूर पहुंचा था कि दो रेलवे-कर्मचारी शाहगंज रेलवे-स्टेशन की तरफ से मेरी तरफ भागते हुए चले आ रहें थे। अंधेरा होते हुए भी लाल रंग के कपड़े पहने होने की नाते वे दूर से ही नजर आ रहे थे। पास आने पर मैंने उनसे पूछा"क्या हुआ ?"तो हॉफते हुए दोनों बोल पड़े "भइया कहॉ पटरी टूटी है क्या ?"मैंने जवाब दिया "हॉ,....टूटी है. .....परन्तु बिना किसी उपकरण के......क्या पटरी पर लेटकर उसे ठीक करोगे?"उन्हें भी मेरी बात सही लगी।उनमें से एक वापस पास में बने उपकरण स्टोर की तरफ भागा और दूसरा मेरे साथ टूटी पटरी देखने चल पड़ा।नंगे पांव चलने में मुझे काफी कष्ट हो रहा था और ऊपर से बारिश की बौछार भी परन्तु मुझे तकिन भी गम नहींथा क्योकि मैं अपनी जिम्मेदारी जो बखूबी निभा रहा था।मैनें पटरी के बीच में पहचान के

लिए लगाये मदार के पौधें से टूटी पटरी का तुरन्त ही पहचान कर लिया। मैंने उस रेल-कर्मचारी से पूछा-"आप लोगों को कैसे सूचना मिली?"उसने बताया-"हमें स्टेशन-मास्टर द्वारा सूचना मिली और स्टेशन-मास्टर को सूचना रेलगाड़ी के उस ड्राइवर ने दी थी जो ट्रेन अभी-अभी स्टेशन की तरफ गयी है"

एक प्रश्न जो काफी देर से मुझे परेशान कर रहा था।मैंने उससे पूछा-"भइया टूटी हुयी पटरी से ट्रेन कैसे सकुशल पार हो गयी ?"उसने कहा-"पटरी इस तरह से टूटी है कि अगर ट्रेन पश्चिम की तरफ से आती तो अवश्य ही पलट जाती।"फिर मैंने पूछा-

"मैंने पटरी के बीच में खडा होकर ट्रेन को रोकने का प्रयास किया था परन्तु ड्राइवर ने ट्रेन क्यों नहीं रोकी?"उसने जवाब दिया-"रात में ट्रेन अक्सर लूट ली जाती है इसीलिए ड्राइवर ने रोकने का संकेत देने के बावजूद भी ट्रेन नही रोकी थी" । कुछ देर बाद दूसरा कर्मचारी भी उपकरण लेकर आ गया।उसने उपकरण रखकर सबसे पहले टूटी पटरी से दोनों तरफ दो-दो सौ मीटर की दूरी पर एक-एक लाल झण्डा रेलवे-पटरी के बीच में गाड़ दिया ताकि पटरी को ठीक करते समय कोई ट्रेन आने पर दूर ही खड़ी हो जाये।

उसने कहा-

"अब हम लोग ठीक कर लेंगे, आप जाइये" सुबह सूचना मिली कि दोंनो रेल-कर्मचारी टूटी रेल-पटरी को बगल से सपोर्ट लगाकर रातभर वह बारिश में तम्बू लगाकर निरीक्षण करते रहे। ईश्वर का लाख-लाख धन्यवाद् उस दिन सभी यात्रियों की और मेरी जान बचाने के लिए।मुझे लगा कभी-कभी अपनी जान को जोखिम में डालकर भी जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है।

**रणजीत यादव'क्षितिज**
**सब इंस्पेक्टर यू पी पुलिस अयोध्या**

## सँवरकी

आज अचानक हमें अचम्भित,
सुबह-सुबह कर गयी सँवरकी।
कफ़ ने जकड़ी ऐसे छाती,
खाँस-खाँस मर गयी सँवरकी।

जूठन धो-धोकर,खुद्दारी,
बच्चे दो-दो पाल रही थी।
विवश जरूरत जान बूझकर,
बीमारी को टाल रही थी।
कल ही की तो बात शाम को
ठीक-ठाक घर गयी सँवरकी।

लाचारी पी-पीकर काढ़ा
ढाँढस रही बँधाती मन को।
आशंकित थी, दीमक बनकर,
टीबी चाट रही है तन को।
संघर्षों से हाथ छुड़ाकर
भव सागर तर गयी सँवरकी।

करवानी थी जाँच खून की,
मदद पाँच सौ माँग रही थी।
हमको लगा गरीबी शायद,
रच फिर कोई स्वाँग रही थी,
फूट-फूट कर रोई पीछे,
सम्मुख हँसकर गयी सँवरकी।

देती रही दुहाई सेवा,
कुटिल स्वार्थ ने व्यथा न जानी।
करती रही याचना झोली
अडिग रहा बटुआ अभिमानी।
वैभव के पनघट से लेकर,
खाली गागर गयी सँवरकी।

खड़ी हुई लज्जित निष्ठुरता,
शव के आगे शीश झुकाये।
पूछ रहा सामर्थ्य स्वयं से,
अब वह किससे खेद जताये।
जाते-जाते, पढ़ा प्रेम के,
ढाई आखर गयी सँवरकी।

**धीरज श्रीवास्तव**
**मनकापुर, गोण्डा**

**सत्य कथा**

# 'चीत्कार'

**डॉ प्रभात पांडेय**
**भोपाल**

करीब पाँच या छ साल पहले की, मेरे सोशल मीडिया अकाउंट पर बार -बार एक लड़का फ्रेंड रीक्वेस्ट भेजता था। मैने पहले तो इग्नोर किया, लेकिन फिर कई बार रीक्वेस्ट आने पर मैने अनमने ढ़ग से रिक्वेस्ट एक्सेप्ट कर ली। वो कभी 2 या 3 महीने में एक बार कोई मैसेज भेजता था। किसी त्यौहार पर या किसी खास मौके पर। बस इतनी ही दोस्ती की शुरुआत में था। फिर एक बार 6 महीने बीत जाने पर भी उसका कोई मैसेज नहीं आया। पता नहीं क्यों दिल उसके मैसेज का इंतजार कर रहा था। एक दिन अचानक वह उसका मैसेज गुड मानिंग का मैसेज आया। पता नहीं क्यों मेरी अंगुलियाँ अपने उसके मैसेज का जबाब देने को चल पड़ी। मैनें भी गुडमार्निंग लिख दिया।धीरे-धीरे बातों का दौर शुरू हुआ। काफी देर तक हम लोग बातें करते रहे। बातों ही बातों में उसने बताया कि कुछ दिन पहले उसका फेसबुक किसी ने हैक कर लिया था इस लिए वह बहुत दिनों तक सोशल मीडिया से कटा रहा ।

अब तो फेसबुक पर घंटो घंटो बात होना एक दिनचर्या सी हो गई थी। लेकिन अभी तक हमारे बीच कभी मोबाइल या फोन से बात नहीं हुई थी। एक दिन मैनें उससे वाटसएप नम्बर माँग कर काल कर दिया। उसने काल नहीं उठाया । पूरा दिन बीत गया उसका काल नहीं आया। मैं मन ही मन उसके काल का इन्तजार कर रही थी। अचानक रात 11 बजे उसका फोन आया। अहमदः हैलो क्या कर रही थी आप ? दिन में आपका फोन आया था मैं उठा नहीं पाया। कोई बात नहीं प्रीति ने रूखा सा जबाब दिया? अहमदः आपको अच्छा नहीं लगा क्या इतनी रात को फोन करना? प्रीतिः नहीं नहीं ऐसी कोई बात नहीं। अच्छा लगा आपने फोन किया। वैसे ही आप इतनी कम बातें करते हैं। अहमदः अच्छा नहीं लगता किसी लड़की को इतनी रात गए काल करना। मुझे भी नहीं करना चाहिए था। पर आपसे बहुत दिनों से बात करने के बारे में सोच रहा था। और आपका फोन आया तो उठा नहीं पाया इस लिए फोन कर दिया। आपका फोन आना अच्छा लगा। मैं उसे अपराध बोध से निकालने की कह बैठी। मेरे इतना कहते ही उसकी आवाज में खनक आ गई।

आपका वो फोटो बहुत अच्छा था। एकदम अलग लग रही थी आप उसमे। बिल्कुल मासूम, प्यारी गुड़िया जैसी। मुझे ऐसे लोग बहुत अच्छे लगते हैं। जिनमे कोई दिखावा न हो, अहमद कह बैठा।

मैने तो पिक पाँच मिनट बाद ही डिलीट कर डी थी, फिर इसने केसे देख ली, मैं मन ही मन बुदबुदा पड़ी। और उससे कहा कि आपको अच्छी लगी तो वाकई अच्छी होगी। "आपसे बात करके लगता ही नहीं की किसी अजनबी से बात हो रही है। आप बहुत अच्छी हैं। आप सो जाइए। माफी चाहता हूँ इतनी रात गए आपको डिस्टर्ब किया।" अहमद ने दुबारा मॉफी मॉगते हुए बिना मेरे उत्तर को सुने अहमद ने फोन काट दिया। इस काल के साथ हमारी बातें शेयर होने लगी। फोटो, बीडियो एक दूसरे से शेयर होने लगे।। एक दिन बात करते हुए अहमद ने पूछा तुमने कभी किसी से प्यार किया है?

अच्छा लगता था एक लड़का। फिर बाद में वो अब्रॉड शिफ्ट हो गया। बहुत मन खराब हुआ। काफी दिन तक दुख होता रहा। तुम बताओ? तुम तो इतने कूल से हो, वेल एज्यूकैटड हो, कोई न कोई लड़की तो होगी तुम्हारी ज़िंदगी में।

ठीक तुम्हारी तरह ही मेरी भी ज़िंदगी में एक लड़की थी। शबाना हमारी कम्यूनिटी की नहीं थी। में सुन्नी मुस्लिम हूँ और वो शिया थी। इस सबके बाद भी मैने समाज से, दुनिया से और यहाँ तक की खुदा से भी लड़ने की ठान ली थी। मेरे घर वाले तो तैयार हो गए थे। पर वो ही पीछे हट गई। मैने उसे इतना प्यार किया, की इस दुनिया में कोई किसी से नहीं कर सकता। पर उसने मुझे धोखा दिया। में उसे भूल ही नहीं पा रहा। बस तब से ही मैं ऐसा हो गया हूँ। किसी काम में मन नहीं लगता। कहीं नौकरी नहीं कर पाता। पिछले दो सालों से ऐसे ही घूम रहा हूँ बिना काम के। बीमार रहता हूँ। तब से सोच लिया था किसी लड़की से दोस्ती नहीं करूंगा। पर तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगा।

प्रीति : में भी तो अलग धर्म से हूँ।

अहमदः धर्म, मजहब क्या होता है। सब इंसानों के बनाए हुए हैं। तुम और में इस जमाने के हैं। ये सब नहीं मानते। हम जब शादी करेंगे तो बस एक दूसरे को खुश रखेंगे। नफ़रतों के लिए कोई जगह नहीं होगी हमारे बीच। प्रीतिः तुम शादी करोगे मुझसे? अहमदः हाँ और क्या। लो ये गाना सुनो " चाहा है तुझको चाहूंगा हरदम"। प्रीतिः बहुत अच्छा लगा तुमसे सुनकर की तुम शादी करोगे मुझसे। और ये गाना तो मेरा बहुत फेवरेट है।

अहमदः जैसे फिल्मों में हीरो और हीरोइन दोनों अलग धर्मो से होते हैं, पर प्यार हो जाता है दोनों के बीच। ठीक वेसे ही हम भी ज़िंदगी गुजरेंगे। हर साल

अपनी सालगिरह ताजमहल पर मनाया करेंगे। में तुमको बहुत खुश देखना चाहता हूँ। में अपने पेरेंट्स को मन लूँगा। और वो मेरा कहना कभी नहीं टालेंगे।

प्रीतिः मेरे पेरेंट्स नहीं माने तो?

अहमदः उनको में मनाऊँगा। आपकी बेटी से प्यार करता हूँ। तुम बिल्कुल निश्चित रहो, सब में कर लूँगा। हिन्दू रीति रिवाज से शादी करूंगा तुमसे। अभी तुम खूब अच्छे से पढ़ो, गेट की तैयारी करो। काम्पिटिशन निकालो और फिर दिल्ली शिफ्ट हो जाओ। में तुमको बहुत आगे बढ़ते देखना चाहता हूँ।

प्रीति मेरे सपनों का राजकुमार है ये तो। ठीक वेस ही जैसा मैने अपने लिए मांगा था। अपना घर बसाऊँगी इसके साथ, खूब प्यार से रहेंगे हम दोनों। क्या हुआ की वो दूसरे धर्म का है। दूसरी जातीयों और धर्मों मे भी तो शादियाँ होती ही हैं । और अहमद तो हिन्दू रीति रिवाज से शादी करना चाहता है मुझसे। अब तो मेरे पेरेंट्स को भी कोई दिक्कत नहीं होगी।

दिन ऐसे ही बीत रहे थे। अहमद ने प्रीति को कृष्ण और गीता की कई बातें सुनाई। जो खुद प्रीति को भी नहीं पता थी। उसके लिए आश्चर्य का ठिकाना न रहा की दूसरे धर्म का हो कर भी ये इतना कुछ जानता है। फिर एक दिन हनुमान जी पर बात छेड़ दी अहमद ने पूछा

अहमदः तुम्हारे घर में हनुमान जी की पूजा होती है?

प्रीतिः हाँ पापा करते हैं। छोटा भाई भी।

अहमदः में भी हनुमान मंदिर जाता था। हनुमान जी राम के सबसे बड़े भक्त थे। हनुमान जैसा कैरिक्टर पूरी रामायण में नहीं है। उनको अपनी ही शक्ति की याद दिलानी पड़ी थी। बिल्कुल निस्वार्थ भाव से सेवा करते रहे। और जब वो छोटे थे तब एक बार उन्होंने सूरज को ही निगल लिया था। बहुत अच्छे मैनेजर थे हनुमान जी।

प्रीतिः सच ! तुम हनुमान मंदिर जाते थे?तुम्हें तो बहुत कुछ पता है उनके बारे में।

अहमदः लंका में आग भी तो उन्ही ने लगाईथी। कैसे रावण का घमंड चूर किया। प्रीति हस पड़ी और बोली तुम तो बहुत कुछ जानते हो, मेरी तुम्हारी खूब जमेगी।

एक दिन अहमद का फोन आया और मिलने की बात कहने लगा।

अहमदः मिलने कब आ रही हो मुझसे? कितने दिन हो गए हमारी बात होते हुए

प्रीतिः हाँ बात तो ठीक है, तुम ही आ जो यहाँ। में तो अपने शहर से बाहर कभी गई ही नहीं। फिर दिल्ली कैसे आऊँगी?

अहमदः यार में आ सकता तो आ ही जाता। मेरे पास अभी पैसा नहीं है आने का,कमाता नहीं हूँ ।

प्रीतिः टिकट में भेज दूँगी। आ जाओ

अहमदः यार तुम ही आ जो। एक दोस्त की हैसियत से ही मिल जाओ।

प्रीति उसकी बात से सहमत हो गई। और उसने फ्लाइट के दो टिकट करवाए। सुबह की फ्लाइट से जा के शाम की वापसी । बीच में दो घंटे का टाइम था। जिसमे उसे अहमद से मिलन था।

एयरपोर्ट पर अहमद प्रीति से मिला प्रीति को अपने दोस्त से बने प्रेमी से मिलने की अलग ही खुशी थी। प्रीति ने लंच मँगाया, दोनो ने साथ बैठ कर खाना खाया, खूब इधर उधर की बातें किये। बातों ही बातों में समय कैसे गुजर गया पता ही नहीं चला। अब प्रीति के लौटने का समय होने लगा।

प्रीति रायपुर वापस आ गई। रात में जब दोनों की बात हुई तो अहमद ने कहा : तुम तो ऐसे मुह मोड कर चली गई। की पीछे पलट कर तक नहीं देखा। में कितना चाहता था की तुम पलट के देखो तो तुमको गले लगा कर बाय कहूँगा। प्रीति को बहुत रिग्रेट हुआ की उसने अहमद को पलट कर क्यों नहीं देखा। उसने बहुत स्वारी बोल और कहा कि मुझे लगा की तुम पता नहीं क्या सोचोगे?

प्रीति के लौट के आये महीनों बीत चुके थे। दोनो दो जिस्म एक जान बन चुके थे। सारी सारी रात मोबाइल पर दोनो बातें करते। एक दिन अहमद ने कहा तुम दिल्ली आई तो एयरपोर्ट से ही लौट गई अब तो तुम मुझसे मिल चुकी हो, इस बार दिल्ली आओ तो तुमको लाल किला दिखाएंगे, लोटस टेम्पल घुमायनेगे, जामा मस्जिद ले चलेंगे। तुमको अपनी आँखों से दिल्ली दिखाएंगे। दिवाली के आस पास आजो साथ मिल कर दिए जलाएंगे।

नहीं इस बार तुम आ जाओ मेरे पेरेंट्स से भी मिल लेना।

अहमदः अभी नहीं, अभी अच्छे से कमा नहीं रहा, क्या कह कर उनके सामने आऊँगा? तुम ही आ जाओ फिर हम लोग घूमने चलेंगे।

प्रीति तैयार हो गई, समय निकाल कर प्रिया फिर से दिल्ली पहुँच गई। दिल्ली घूमने के बाद दोनो ने आगरा घूमने का प्लान बना।

प्रीतिः देखो मैने ये होटल बुक करव है। इसमे दो रूम लिए हैं। अहमदः यार ये कुछ ठीक नहीं दिख रहा। ये सामने 'शेरेटन' है, इसमे करवा लेते हैं। प्रीतिः वो तो बहुत महंगा है। एक रूम का किराया ही 7000/- रु है। इतने पैसे नहीं हैं मेरे पास की इसमे दो रूम बुक करवाएँ। अहमदः तो एक ही करवा लेते हैं। प्रीतिः ठीक है। रूम में पहुँच कर सामान रख कर जल्दी से घूमने चलेंगे। रूम में पहुँच कर अहमद बोला अहमदःमेरी तबियत खराब हो रही है। प्लीज लाइट बंद कर दो। प्रीति ने लाइट बंद कर दी घूमने जाने का प्लान चौपट हो गया। प्रीतिः लो जूस पी लो थोड़ा ठीक लगेगा। अहमदः रख दो और अपने लिए भी कुछ ले लो खाने को। सुबह से तुमने कुछ नहीं खाया। प्रीतिः हाँ में नीचे से जा कर कुछ ले आती हूँ लौटकर प्रिया ने देखा की अहमद ने जूस नहीं पिया था। उसने वो जूस प्रीति को देते हुए कहा-अहमदः ये तुम पी लो। थोड़ा ठीक लगेगा। प्रीतिः आर ये तो तुम्हारे लिए लाई थी। अहमदः मेरा मन नहीं है तुम पी लो। जबरदस्ती अहमद ने उसको वो जूस पीला दिया। थोड़ी देर में प्रिया का सर चकराने लगा। और वो बेहोश हो कर बिस्तर पर गिर गई। सुबह जब आँख खुली तो देखा की उसके पूरे कपड़े उतरे हुए हैं। और उसके साथ वो सब हो चुका था जिससे वो अब तक बचती आ रही थी।

प्रीतिः (रोते हुए प्रीति बोली) ये तुमने क्या किया अहमद। मेरे साथ ये सब क्यों किया?मेरा भरोसा तोडा तुमने।

अहमदः नहीं प्रीति में तो तुमको बहुत ज्यादा प्यार करता हूँ। ये सब तो मैने अपने दोस्तों के कहने पर किया। मेरे दोस्तों ने कहा था की यदि लड़की को खोना नहीं चाहते तो उसके साथ ये सब जरूर करना। पहले शबाना भी सिर्फ इसलिए ही मुझसे दूर हो गई थी की मैने उसके साथ ये सब नहीं किया था। अहमद बुरी तरह से रो रहा था। उसका शरीर एकदम लोहे की तरह ताप रहा था। अपने किये पर बहुत शर्मिंदा हो रहा था।

प्रीति को विश्वास हो गया की अहमद ने गलत इरादे से उसके साथ ये सब नहीं किया। ये तो बहुत सीधा है। दोस्तों के बहकावे मे आ कर उसने ये कदम उठाया।

प्रीतिः अच्छा अब उठो और मुझे दिल्ली छोड़ दो। मुझे घर जाना है। अब मुझे यहाँ नहीं रुकना।

वो आगरा से दिल्ले और दिल्ली अगली फ्लाइट पकड़ के अपने शहर रायपुर वापस आ गई।

अब अहमद उससे फोन पर भी सभी तरह की बातें करने लगा था। कुछ ऐसे फोटो और बीडियोज़ भी भेजने लगा था जिससे प्रिया को थोड़ी हिचक होती थी। अहमदः आर इतना क्या शर्माना?भले तुम्हारे होशो हवास में हमारे बीच कुछ नहीं हुआ। पर हुआ तो है ना। इसलिए अब तुम शर्माया मत करो। देखो वैसे भी हम जल्दी शादी कर ही लेंगे।

प्रीतिः हाँ वो तो है, पर फिर भी थोड़ा ठीक नहीं लगता अहमदः आर क्या ठीक नहीं लगता। अब तुम शर्माना बंद करो। और अपनी कुछ अच्छी तस्वीरें भेजो।

प्रीतिः नहीं में नही भेजती।

अहमद :प्रीति बात तो फोटो की थी ही नहीं । बात तो बात की थी। की तुम कितना प्यार करती हो मुझसे। बस यही देखना चाहता था। इतने समय बाद भी में तुम्हें गैर ही लगता हूँ। खैर में तुम्हें फोर्स नहीं करना चाहता। प्रीतिः तुम ऐसे मत्त बोल करो। अच्छा भेजती हूँ अभी।

प्रीति ने कुछ अपनी तस्वीरें भेज दी और पूछा अब तो खुश । जबाब में अहमद का एक हसता हुआ ईमाजी आ गया । प्रीति भी हस पड़ी। समय बीतता जा रहा था, अचानक अहमद के फोन आना बहुत कम हो गये। एक दिन प्रीति ने अहमद से पूछा क्या बात है तुम बात ही नहीं करते आजकल?

अहमदः आर क्या बताऊँ मेरी शादी घर वालों ने काही और तय कर डी है। और मेरे पापा की किड्नी भी खराब हो गई है। उन्ही के इलाज में परेशान हूँ। पैसा तो मेरे पास है नहीं।

प्रीतिः आर पैसा क्या, तुम परेशान मत हो, पैसा में भेज देती हूँ। अपना अकाउंट नंबर दो में अभी ट्रान्स्फर कर देती हूँ।

प्रीति ने उसके पिता के लिए करीब 3-4 लाख रुपया दिया। और बाकी के खर्चे भी प्रीति ही करती रहती थी अहमद पर। इस बीच दोनों का मिलन भी खूब हुआ। प्रीति अब अहमद के बिना रहना नहीं रह पा थी। जब से उसने अहमद की शादी की बात सुनी तब से तो वह बिल्कुल ही नहीं रह पा रही थी।

प्रीति अहमद से शादी करने का सपना लिये रायपुर को हमेशावो फिर दिल्ली पहुंची । लेकिन दिल्ली में कहानी तो कुछ थी उसका इंतजार कर रही थी।

अहमद का फोन नहीं लग रहा था, किसी तरह व अहमद के बताये हुए पते को खोजते हुए अहमद के घर एक मलीन बस्ती में पहुँची। अहमद उसे घर के बाहर ही मिल गया। प्रीति को वहाँ से देख कर अहमद चौंक गया। वह तेजी से उसके तरफ आया और वहाँ से उसे एक पार्क में ले गया।

प्रीतिः मैं नही रह पाऊँगी तुम्हारे बिन अहमद। मेरे चलो शादी कर लेते हैं, मैं अपने साथ पैसे और जेवर लेकर आई हूँ। तुम्हारा साथ हमेशा दूँगी।
मैं अभी शादी नहीं कर सकता तुमसे अचानक अहमद ने उसका हाथ छुड़ते हुए कहा। मगर अहमद कुछ सुनने को तैयार ही नहीं था, वह अपने परिवार और परिवार की समस्या की दुआई दे रहा था।
प्रीति ने उसके पैरों में झुकते हुए बोली मेरे अहमद मत करो ऐसा मेरे साथ। मगर अहमद पत्थर हो चुका था। प्रीति रोते रोते बेहोश हो गई। अहमद उसे वही पास के अस्पताल में ले गया जांच करवाने पर पर पता लगा की प्रिया प्रेग्नेंट हो चुकी है। अब तो प्रीति का रो रो के बुरा हाल था।
अहमदः मुझे बहुत खुशी होती की हम ये बच्चा रख पाते। लेकिन अभी हालात ऐसे नहीं हैं। तुम इस बच्चे को हटा दो। प्रीतिः नहीं ऐसा नहीं करवाना मुझे। तुम शादी करो मुझसे। अहमदः शादी तो में करूंगा ही पर अभी हालात हमारे फ़ेवर मे नहीं हैं। तुम समझो मेरी बात। इसे एबार्सन करवा दो।

हार मान को प्रीति को वह बच्चा गिराना पड़ा, लेकिन अभी भी वह अहमद को गलत मानने को तैयार नही थी। लेकिन अब वह वहाँ रहना भी नहीं चाहती थी।
प्रीतिः अहमद में जा रही हूँ वापस अपने घर। कुछ दिन आराम करना चाहती हूँ। प्रीति वापस घर आ गई, उसे समझ आ गया था की प्यार मांगने और दबाब बनाने से नहीं मिलता, अब जब अहमद को उसकी याद आएगी तभी अब वो बात करेगी। वह मन ही मन बुदबुदाई।

लेकिन प्रीति अपने फैसले पर बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकी। अहमद का प्यार उसे सताने लगा। वह अहमद को फोन लगाई तो उसका फोन नहीं लगा।सोशल मीडिया पे भी उसे ब्लाक कर दिया गया। जैसे तेसे किसी और नंबर से अहमद से बात हुई ।
प्रीतिः हैलो अहमद में प्रिया बोल रही हूँ। तुमने मुझसे बात करना क्यों बंद कर डी। सोशल मीडिया से भी ब्ल,क कर दिया। आखिर बात क्या है बताओ तो ?“रोते हुए प्रीति बोली”
अहमदः ओ प्रीति में बहुत ज्यादा परेशान हूँ। अच्छा हुआ तुमने फोन किया। मेरे घर वाले मुझे बहुत परेशान कर रहे हैं, इसलिए मैने फोन बंद किया हुआ था। और सोशल मीडिया पर भी उनको तुम्हारे बारे में पता चल गया था। में नहीं चाहता था की वो लोग तुमको परेशान करें। इसलिए तुम्हें वहाँ से हट दिया। अच्छा एक काम करो , दिल्ली आ जो आखिरी बार तुमसे मिलना है, घर वालों को बता कर तुमसे शादी करनी है।बस ये आखिरी बार है। तुम एक काम करना की दिल्ली आते ही कनाट प्लेस पर आ जाना, में वही मिलूँगा । “अहमद एक साँस में बिना प्रीति की कुछ सुने बोल गया।”

कहते हैं न कि प्यार अंधा होता है। प्रीति बिना कुछ सोचे समझे एक बार फिर दिल्ली पहुँच जाती है। अहमद से तय हुए समय पर वह कनाट प्लेस पहुँचती है, बहुत इंतजार के बाद भी अहमद का न फोन आया न वह खुद आया। वह अहमद का फोन ट्राई करती है लेकिन अहमद का मोबाइल बंद मिलता है। वह उसके घर जाती है लेकिन वहाँ भी सब गायब। थे । प्रीति इधर से उधर भटक रही थी। वह अहमद के साथ कुछ बुरा न हुआ हो यह सोच कर पुलिस के पास जाकर सारी बात बता कर मदद माँगती है। पहले तो पुलिस उसे समझाती है लेकिन जब वह नहीं मानी तो पुलिस ने जैसे तैसे उसका पता मालूम कर प्रीति को दिया।

सुबह होते ही वह दिल्ली से दूर अहमद के घर पहुँचती है अहमद के घर में बहुत सारी औरतें हैं। एकदम भीड़ जैसी थी। अहमद की नानी, अम्मी, बुआ, बहनें भाभी। प्रीति कुछ समझती उससे पहले ही उसे बंदी बना लिया गया। उसे घसीटते हुए एक अंधेरे कमरे में ले गए। प्रिया बार बार एक ही बात पूछ रही थी- अहमद किधर है अहमद किधर है?
अहमद की अम्मीः तु यहाँ क्यू आई?और क्या चाहती है ? प्रीतिः अहमद कहाँ है ये तो बताओ। उसकी मम्मी ने उसकी बात का जबाब न देते हुए फिर से पूछा तु क्या चाहती है ये बता। बहुत देर तक इसी बात पे बहस चलती रही। किसी एक आदमी ने जोर से प्रीति के गाल पर थप्पड़ मारा। झन्नाटे हुए प्रीति जमीन पर गिर गई कर बेहोश हो गई। पिछले 2-3 दिन से कुछ भी न खाने के कारण बहुत कमजोरी भी हो गई थी। देर रात जब नींद खुली तो उसने बात करते हुए पाया की उसे शमशान के पास कहीं ले जाने की बात कर रहे हैं वो लोग। अंदर आ कर बोले चलो अभी चलो अहमद से मिलवाना है तुमको। रात के करीब 3 बज रहे थे।
प्रीतिः आपको पता है की में पुलिस में इन्फार्म कर के आई हूँ यहा। मेरे साथ कुछ गलत हुआ तो पुलिस तुम सबको छोड़ेगी नहीं। इतना सुनते ही सब चुप हो

गए। सब उसे मारने का मन बना के ले जा रहे थे। पर किसी तरह वो बच गई। सुबह उसे दिल्ली ले जाया गया। जहां अहमद के पिता पहले से थे। उसे बहुत सताया गया। पर उसे भरोसा की अहमद उसे कभी धोखा नहीं देगा।

दिल्ली में जिस जगह प्रीति को ले जाया गया वो को अच्छी जगह नहीं थी। वहाँ उसे अपने पिता को बुलाने का दबाब बनाया गया। प्रीति के मना करने पर उसे मारा गया। उससे फोन छीन लिया गया। और उसके पिता को फोन करके बताया गया की तुम्हारी लड़की बहुत गिरी हुई है ,इन दिनों हमारे लड़के के पास है और भी न जाने कितने लोगों के संपर्क में रही है। तुमने अपनी बेटी को अच्छी परवरिश नहीं दी। उसका अबोरशन भी हमने करवाया।

प्रीति चीखती रही, नही ये झूठ है पापा। मैने ऐसा कुछ नहीं किया। ये लोग झूठ बोल रहे हैं। इन्होनें मुझे कैद किया हुआ है। तब तक अहमद की अम्मी ने आकर उसका मुंह दबा दिया। और एक कमरे में बंद कर दिया। अहमद रोज उसके शरीर को जानवरों की तरह नोचता।

एक दिन उसी बंद कमरे में प्रीति का अहमद के संग निकाह पढ़ दिया गया। प्रीति अब शबाना हो गई थी। उसे वही पुराने दिनों की शबाना की कहानी याद आई, जो अहमद ने उसे सुनाई थी।

एक दिन झगड़े के बीच प्रीति ने चीख कर कहा ओ अहमद तुमने शबाना के साथ भी ऐसा ही किया था। अब समझ आया मुझे।

अहमदः हाँ किया था मगर अब तु कुछ नहीं कर पाएगी। कहीं मुह दिखने लायक भी नहीं बची है। अच्छा है की तु इस्लाम धर्म एक्सेप्ट कर ले।

इतना सुनते ही प्रीति के होश उड़ गये, उसने चीख कर कहा कि तब वो तुम्हारा प्यार और हनुमान की कहानीयाँ नाटक थी।

हाँ वो सब नाटक था तुम्हें पाने के लिए, हिन्दू धर्म की लड़कीयों को अपने के लिए।

प्रीति के होश उड़ गये, बीते हुए दिन चलचित्र की भाँति उसके मानस पटल पर आने लगे। प्रीति जो अब शबाना बन चुकी थी, पूरी तरह अपनी ज़िंदगी खुद बर्बाद कर चुकी थी। उससे उसका सब कुछ छिन गया था। उसके माता पिता ने अब उसे ढूँढना भी बंद कर दिया था। रोज अपना शरीर परोसना, मार खान और सबके लिए खाना बनाना। यही काम रह गया था। अपने प्रेम को याद कर कर के प्रिया बहुत रोती थी। माँ बाप और बाकी लोगों की काही बातें याद आती। वह सबसे कही "मेला छोना बाबू ऐसा नहीं है वह छबसे अलग है, बहुत प्यार करता है"। पर अब उसे अपने किये पर सिवाय पछतावे के कुछ और नहीं बचा था। उसने अहमद को बहुत समझाया कि मुझे जाने दो। में फिर कभी तुम्हारी ज़िंदगी में नहीं आऊँगी। पर पर नहीं माना।

प्रीति एक साल तक ये सब सहती रही। कई बार रूह कंपाने वाली आवाज़ें उस घर से आती रही। बहुत मारा जाता था प्रीति को। सबने अपने अपने तरीके से उसे दुख दिया। प्रीति अब एक जिंदा लाश बन गई थी। उसे एक अंधेरे कमरे में ही रखा जाता था। जहां से उसे बस्स खाना बनाने और घर के कामों के लिए ही बाहर निकाला जाता था।

एक दिन प्रीति उस चंगुल से भागने में सफल हुई। और दो-तीन दिन में अपने घर में पहुंची। घर वालों ने देखा तो उनके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। प्रीति को इस हालत में देख कर सबके होश उड़ गए। प्रीति तो घर में कदम रखते ही बेहोश हो गई। उसे डाक्टर को दिखाया गया। बहुत लंबे समय तक उसका इलाज चला। मानसिक रोगी हो चुकी प्रीति को करीब 1 साल लगा सामान्य होने मे। पूरी तरह तो वो अब भी ठीक नहीं। जिंदगी ने उसे तोड़ कर रख दिया। उसके अनुभव इतने कडवे हो गए की अब वो चुप अकेली ही रहना पसंद करती है। सपने में भी अहमद और उसका परिवार उसे डर जैसे महसूस होते थे। कितनी रातो वो इसी डर में सोती नहीं की फिर वो उसे न ले जाएँ।

एक अच्छी पढ़ी लिखी लड़की का जीवन जरूरत से ज्यादा किसी आँख मूँद कर विश्वास कर लेने से पूरी तरह खराब हो गया।

धर्म क्षेत्र
बातें हिन्दुत्व की,जानकारी धर्म की
पत्रिका व सनातन सेवा सदन

**कहानी**

## हाथरस से संतोष शर्मा "शान" की "तारीफ"

मैं हमेशा परिवार के प्रति सजग और इमानदार रही लेकिन कभी भी पूरा परिवार तो क्या पति तक के मुंह से प्रसंशा के दो शब्द नहीं सुनाई दी मेरे कानों में फिर भी अपनी गृहस्थी संभालकर एक अच्छी बहू बनने का प्रयास हमेशा की और बनी भी। जब भी घर में मेहमान या कोई रिश्तेदार आते तो सासु माँ लग जाती उनके मुँह से निकली हर बात का समर्थन करने। साथ में परिवार के अन्य सदस्य भी हजारों तारीफें कर देते उन परायों के घर की बहूओं के लिए, कभी कभी मन बहुत ही दुखी होता तो कभी बड़ा क्रोध आता उनकी हॉ में हॉ तो ऐसे मिलाते और साथ में कहते जाते अरी हमारी कहाँ ऐसी किस्मत जो हमें ऐसी बहू मिलती। जैसे वो हर दिन इन्हीं सब लोगों की सेवा करती हो। और ये सभी सब कुछ जानते हों। कभी कभी तो मेरी सहनशीलता से ज्यादा बोल जाते और मै दुखी मन को समझा लेती की क्या फायदा जवाब दे कर माहौल खराब करने से ये लोग तो चले आएंगे रहेगा मेरा परिवार और मै इन्हीं के बीच ये तो बदलने से रहे? हाँ मैं ऐसी नहीं हूँ बस।

ऐसे ही कल हमारी बुआ सास की बड़ी बहू आ टपकीं और मैने हमेशा की तरह उनकी सेवा चाकरी में कोई कमी नहीं छोडी जबकि मुझे मालूम है नौकरी पेशा बहू होने के कारण वह घर परिवार को अपने ठेंगे पर रखती हैं और मोटी रकम कमाने का धौंस भी झाड़ती रहतीं हैं।उनके दोनों बच्चों को बुआजी ने ही पाल पोस कर बड़ा किया बावजूद इसके यदि उनको एक गिलास पानी भी चाहिए होता है तो गिरते पडते उन्हें स्वयं लेना पड़ता है और यहाँ देखो। उसकी तारीफ तो ऐसे की जा रही है मानो वह सेवा की साक्षात प्रतिमूर्ति हो? शाम को जैसे ही मैंने सभी को खाने के लिए बैठाया वो खाने पर ही शुरू हो गईं मैंने एक बारगी उन्हें टोका की पहले शांति से भोजन कर लें बाद में बतिया लिजिएगा.... सो वे बोली" अरे हां ! बतियाने की बात तो मैं भूल ही गई। मैं तो अब कार भी चला लेती हूँ बाइक और स्कुटी में तो आपको पता है मै पहले ही एक्सपर्ट थी अब कार भी पूरा संभाल लेती हूँ।"

अब तो मेरी सहनशक्ति जवाब दे गई और मैने पहली बार परिवार वालों के सामने जुबान खोल" जीजी मुझे कोई गाड़ी नहीं चलाना आता परंतु घर चलाना आता है और मुझे कार नहीं अपनी गृहस्थी और परिवार चलाना है और हाँ...! बेटा बड़ा हो गया है सो सास बहू के आपसी सामंजस्य बिठाने की तैयारी कर रही हूँ वह भी अपनी ही सासु माँ से बाकी जीजी।मुझे किसी टीन के डिब्बे को सम्भालने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं तो रसोई घर में अपना काम करने चली गईलेकिन ये अच्छी तरह जानती हूँ कि मेरे शब्दों का किस किस पर और कितना असर हुआ होगा। बस पतिदेव को कनखियों से देखा वे निरूत्तर और अव्वाक दिखाई दे रहे थे।

## हाजीपुर बिहार से डॉ प्रतिभा कुद्र पराशर" की "निशान"

मालिनी सदैव अपनी ड्यूटी के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रही। कार्यालय पहुँचने के बाद किसी भी परिस्थिति में वह जी नहीं चुराती, फिर भी उसके सहकर्मी कुछ-न-कुछ ऐब निकालते रहते। एक दिन मालिनी ने अपनी सहेली से कहा -' आशा! एक बहुत बड़ी उलझन है। ' आशा ने कहा- क्या, बोलो ।' मालिनी ने कहना प्रारंभ किया मेरे कार्यस्थल पर कुछ लोग यों ही बैठकर गपशप करते हैं फिर भी किसी का मुँह नहीं उठता। देर से आनेवाले या पहले जानेवाले को कोई कुछ नहीं कहता। नजदीक वाले मध्याह्न में अपने घर या किसी काम से चले जाएँ , कोई बात नहीं। कुछ लोगों के सामने तो प्राचार्य भिगी बिल्ली बने रहते हैं। कुछ अनुचित भी दिखता है तो हँसते हुए बड़े ही विनम्र भाव से बोलते हैं ' हें हें हें हें आपसे एक शिकायत है ।' वहीं मेरे लिए कोई झूठी बात कह दे तो चिल्लाने लगते हैं। एक दिन विलम्ब हो जाये तो तुरंत टोक देते हैं।मेरी समझ में नहीं आता कि आखिर मेरे ही साथ ऐसा क्यों होता है?मुझे ही निशाना क्यों बनाया जाता है।'

आशा ने पूछा -' कहीं जातिवाद तो नहीं। अगड़ी - पिछड़ी में आज भी भेदभाव करते हैं लोग। 'मालिनी ने कहा -' मैं नहीं मानती जाति-पाति को, यह तो तब की बात है जब समाज का असंख्य वर्ग अशिक्षित और अति पिछड़ा था ।' हें हें अरे मालिनी! किस भ्रम में पड़ी हो, आज भी अच्छे पढ़े-लिखे लोग स्वयं को अति पिछड़ा ही मानते हैं। वरना ...।

**कहानी**

# पोर्ट ब्लेयर से आशा गुप्ता 'आशु' की "रोटी"

"**मत** मारो बापू.. . मत मारो, अब कभी नहीं जाऊंगा वहां... माफ कर दो बापू.. माफ कर दो " मासूम १० साल का सतिया लगातार हरि प्रसाद से बख्श देने की गुहार लगाता रहा। रो रो कर उसकी आँखें लाल हो गई थीं। डंडे की मार से शरीर बुरी तरह से दुख रहा था, कहीं कहीं मोटे मोटे लाल निशान भी पड़ गये थे पर हरि प्रसाद को फिर भी उस पर दया न आई। मां बीच बचाव करने आई तो दो-चार डंडे उसे भी पड़ गए। "साले पासी चमार के टोले में जायेगा, तेरा तो गला ही टीप देता हूं.. न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी" यह कहते हुए लपक कर हरि प्रसाद सतिया का गला दबाने लगा । मां ने देखा तो दहाड़ मार कर रोने लगीं। पास पड़ोस के लोग चीख पुकार सुनकर वहां पहुंचे और सतिया को हरि प्रसाद के चंगुल से मुक्त कराया तो भुनभुनाते हुए वो बाहर निकल गया । मां अर्ध बेहोशी की हालत में सतिया को कोठारी में ले गई और उसे गले से लगा के खूब रोई। कुछ देसी उपचार के बाद सतिया सामान्य हो पाया। तन की थरथराहट लिए वो फटी फटी आँखों से वो छत की तरफ देखता ही रहा। मां आहत स्वर में विलापते हुए बोली, "क्यों गया था रे अछूतों के टोले में, देख तो तेरे बापू ने कैसी गत बना दी तेरी... आज तो तु मर ही जाता, क्यों इतना कष्ट दे रहा?बोल सतिया?" सतिया ने करूण भाव से मां को देखा, खरखराती आवाज़ में बस इतना ही कह पाया - रोटी।

मां अपनी छाती से सतिया को लगाये सिसक उठी। बढ़ती उम्र के साथ पेट का दावानल भी भड़कने लगता है। आठ भाई बहनों में वो सबसे बड़ा था। बापू फेरी का काम करता था । आमदनी चवन्नी बराबर थी और उस पर दनादन हर वर्ष बच्चों की संख्या में बढ़ोत्तरी ने घर की स्थिति को और भी अधिक खराब कर दिया। दिन भर में बस एक समय का ही भोजन नसीब होता, वो भी इतना कि भूख की अमरता घटती ही नहीं। जब नन्हें सतिया से भूख बर्दाश्त नहीं हुई तो वो गांव के उस तरफ चला गया जहां चमड़े का काम करने वाले अपना बसेरा किए हुए थे। किसी ने प्रेमवश सतिया को रोटी दे दी खाने को। रोटी देखते ही भूखे सतिया के मन से जात-पात का डर भाग गया। उसने रोटी को दोनों हाथ से कस कर पकड़ रखा था। उसे डर था कि कहीं रोटी छिन्न कर कोई उसे वहां से भगा न दे। रोटी तो खा आया था पर साथ में बापू की मार ने उसकी सारी संतुष्टी पर पानी फेर दिया था।

बच्चे बढ़ रहे थे, उसके साथ साथ भूख प्यास भी, जिसकी चिंता ने हरि प्रसाद को बेचैन कर रखा था । उसे समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे वह सभी बच्चों का पेट पाले?न पैसे थे पास में और न खेत। अनाज आता कहां से। बैठे बैठे बड़बड़ाने लगता, "ससुरे मर भी नहीं जाते एक आध, जान छूटे।" मां सुनती और अपनी बेबसी पर आँसू पी कर रह जाती। अनपढ़ कमज़ोर शरीर और नोचने को आठ आठ बच्चे, बेचारी कैसे और क्या करती।

एक दिन सतिया घर के द्वारे बैठा मां के साथ दूसरे के खलिहानों से बटोरे गए खर पतवार में से अनाज के दाने बीन रहा था तभी गांव के कुछ लोग गठरी बांधे वहाँ से गुजरने लगे। हरि प्रसाद पास बैठा बीड़ी फूंक रहा था। राम राम करते हुए उन्होंने बताया कि वे लोग शहर जा रहे हैं काम की तलाश में। हरि प्रसाद की आँखों में एक चमक आ गई, उसने उन लोगों से अपनी घर की बदहाली बयान करते हुये कहा कि वे लोग उसके बड़े बेटे सतिया को भी शहर ले जाए। वे मान गए और इस तरह सतिया शहर आ गया।

शहर का जीवन भी ढोल की तरह होता है बस दूर से ही बढ़िया दिखता है। यह बात सतिया को कुछ ही दिन में समझ में आ गई थी। दिन भर सतिया नाले सफाई करने का काम करता और रात होते ही किसी फुटपाथ पर सिकुड़ कर सो जाता। ज़िंदगी कठिन थी पर फिर भी मन बांवरा आसमान तलाश ही लेता है अपने सपनों की उड़ान के लिए। थोड़ा बहुत मेहनताना भी मिलने लगा था उसे।

सतिया पाई पाई जोड़ने लगा, आखिर उसे अपने सपनों में रंग जो भरना था। वहां न मां का फटा हुआ आंचल था, न प्यार से सिर पर फेरते मां का प्यारा स्पर्श। न भाई बहनों की गुत्थम गुत्थी थी, न सिर पर कोई छाँव। इन सब का अभाव तो था ही पर बापू की डांट-मार भी नहीं थी और न भूख का भूत उसके साथ था। इन सब के बावजूद अब वो खुश था और संतुष्ट भी क्योंकि सबसे बड़ी बात जो थी वो यह कि यहां उसे दो वक्त की रोटी तो नसीब थी।


जय माँ कामाख्या

भारत में जासूसी उपन्यास के जनक कहे जाने वाले प्रसिद्ध जासूसी उपन्यासकार गोपाल राम गहमरी की स्मृति में 8वाँ वर्ष

गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्वस एवं सम्मान समारोह

23 से 25 दिसम्बर 2022 शुक्रवार शनिवार रविवार

गहमर इन्टर कालेज, गहमर, गाजीपुर उ0प्र0 232327

स्व गोपाल राम गहमरी

स्वागतकर्ता-:

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका साहित्य सरोज

आनलाइन पत्रिका धर्मक्षेत्र

चंदन टेंट हाउस, सुनील जायसवाल गहमर

8वां गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव एवं सम्मान समारोह

23-25 दिसंम्बर 2022, गहमर, गाजीपुर(उ0प्र0)

23 दिसम्बर 2022 शुक्रवार -

दोपहर 2 बजे कार्यक्रम शुभारंभ , पुस्तक प्रदर्शनी, शार्टफिल्म महोत्सव शुभारंभ, चित्रकला प्रदर्शनी, साझा संकलन.विमोचन, अतिथि स्वागत परिचय एवं वर्तमान कार्यक्रम पर चर्चा ।तथा समस्त अतिथियों से एक दूसरे के परिचय का कार्यक्रम मेल-मिलाप।

(02) शाम 04 बजे से कार्यक्रम पर चर्चा ।

(03) शाम 07 बजे से गहमर क्षेत्र की प्रतिभाओं द्वारा कार्यक्रम। फैशन शो।

-:24.दिसम्बर 2021 शनिवार

(01)प्रातः 10 से 12 वर्तमान में जासूसी कहानीयों का बदलता स्वरूप परिचर्चा

(02)प्रातः 12:30 से हिंदू धर्म के त्यौहारों के बदलते स्वरूप पर परिचर्चा

(03)दोपहर 2:30 से 3:30 तक शार्ट फिल्म के महत्व पर परिचर्चा

(03)शाम 4 बजे से 6:30 तक मेरी कहानी सुनो कार्यक्रम, एवं कार्यशाला

(04)शाम 07 बजे कवि सम्मेलन।

-:25 दिसम्बर 2019 रविवार:-

प्रातः 6 बजे से गहमर भ्रमण, माँ कामाख्या दर्शन पूजन।

(02) प्रातः प्रातः 11 बजे से 12 बजे तक साहित्यकारों द्वारा भेजे गये लेख, मैं और मेरे सपने (आप पर आधारित सत्य लेखन), कहानी, चित्रकारी, प्रतियोगिता का परिणाम एवं पाक कला व हस्त लेखन प्रतियोगिता का आयोजन।

(03)दोपहर 12:30 से 2 बजे तक अतिथियों द्वारा लोक/भाव नृत्य, मन की बात, अभिनय कला की प्रस्तुति

(04)दोपहर 2:30 से 3:30 तक स्वास्थ ही सुख का मार्ग पर एक विशेष कार्यक्रम।

(05)शाम 4 बजे से 5 बजे तक वर्तमान समय में रोजगार के अवसर विषय पर कार्यशाला

(06)शाम 6 बजे से 7:30 तक सम्मान समारोह

(07)रात्रि 8 बजे से कवि सम्मेलन एवं विदाई । अखंड गहमरी

कहानी

# सेफ-अनसेफ

**बा**र-बार नजर घड़ी पर जा रही थी।"ये दिया कब आयेगी ?आये तो घर के लिए निकलूँ।आँटी को अकेले छोड़कर भी नहीं जा सकती। उफ कैब भी मिलनी मुश्किल होगी अब। क्या करूँ ?आदि को फोन करूँ?तो कौन सा लेने आ ही जायेंगे। उल्टा प्रवचन ही मिलेंगे सुनने को। जाने की ही क्या जरुरत थी? चली ही गईं थी तो जल्दी निकलती। तुम्हें नहीं पता क्या कहने को महानगर है ये ?लेकिन सात बजे के बाद आटो, कैब कुछ नहीं आयेगा इधर। मैट्रो से भी आधे रास्ते ही पहुँचा जा सकता है। वो तो और ही अधर में लटकना है।"डोर बैल बजती है। मैं लपककर बाहर भागती हूँ।

"दिया आ गई तू। कितनी देर कर दी तूने।हद लापरवाह है।सारे काम आज ही खतम करने थे तुझे। किसी और दिन कर लेती बचे काम। फिर आ जाती मैं।" "स्वारी दी। माँ को अकेले छोड़कर नहीं निकल सकती । दीदी को आने में महीने लगेंगे। आप को भी जल्दी नहीं बुला सकती दी। कितना व्यस्त रहते हो आप। मिनी को घर छोड़कर कैसे निकलते हो, सब पता है मुझे। दी आप इस शहर में न होती तो..।"

"बस बस अब शुरू मत हो।छोड़ अब ये सब बात। मैं भी तेरी दीदी ही हूँ। तू भी परेशान ही हो जाती है। बस कुछ महीने और। फिर आ जाएगी तेरी दीदी। मैं अब आदि के साथ ही आऊँगी। मेरे फोन का नेटवर्क नहीं आ रहा यहाँ। तू बुक कर कैब जल्दी।कितने अनसेफ होते जा रहे ये महानगर।" "ओके दी। लेकिन इतनी टेंशन में क्यों हो आप ? साढ़े दस ही तो बजा है अभी।" "दिया.. ।"

"स्वारी दी। समझ गई।कर रही हूँ बुक। " "अपना ख्याल भी रखा कर। देख कैसी हो रही है। तेरा खाना मैंने किचन कैबिनेट में रख दिया है। खा लेना।""दी आ गई आपकी कैब। जाइये अब निकलिए और देर हो जायेगी।" "हाँ!निकल रही हूँ।अपना और आंटी का ख्याल रखियो।बाय।" पर्स उठाकर मैं बाहर आती हूँ।बाहर टैक्सी देख कुछ चैन की साँस आती है। मैं जल्दी से दरवाजा खोल कैब में बैठ जाती हूँ। "जल्दी चलिए भैया। " "मैम ओटीपी बताइये।" "हाँ।एक मिनट देखती हूँ।" "कहाँ जाना आपको ?" " बुकिंग के वक्त बताया था न। " "मैम कन्फर्म करना था। "

"ओके।" "जल्दी से जगह का नाम बताती हूँ।

"बस कोई और फॉरमैलिटी?" "नहीं।" "चलिए फिर।पहले ही इतनी देर हो चुकी है। "

"ये तो है मैम।कुछ और देर बाद आपको इस एरिया के लिए टैक्सी मिलती ही नहीं ।"

अँधेरा चारों तरफ फैल रहा है।ड्राइवर की शक्ल भी कुछ अजीब सी नजर आ रही है।

घबराहट की एक लहर मेरे चेहरे पर दौड़ जाती है।वो फोन में कुछ कर रहा है। मैं घबराहट को गुस्से से दबा जोर से बोलती हूँ "अब जल्दी चलो ।"

वो पूरी मुस्कुराहट से मुड़कर मेरी ओर देखता है। और गुनगुनाते हुए कैब चला देता है।मेरे गुस्से की डिग्री एक सैन्टीग्रैड बढ़ जाती है।

फोन की स्क्रीन पर नम्बर चमकता है।घबराहट में और पसीना आ जाता है। उफ अब दो जबाब बेटा। इतनी देर कैसे हुई ?कहाँ रह गई।ये तो नहीं सांत्वना के दो शब्द बोल दें और चिल्लाना ही।ऐसे ही डर से जान निकल रही है।

"हेलो.. हैलो

"आदि मैं कैब में हूँ। ......आदि प्लीज़ अब दिमाग मत खाओ। वैसे ही परेशान हूँ।.......आदि बाहर बहुत अँधेरा है।आदि फोन मत रखो अभी। "

फोन कट से कट जाता है। चिड़िया की तरह मन उछल कर हलक में आ जाता है। मन ही मन भगवान को याद करती खुद को कोसती हूँ। क्यों निकली घर से अकेली ?निकल आई तो इतनी देर तक रुकने की क्या जरूरत थी?और ये दिया.. जल्दी नहीं आ सकती थी। टैक्सी के ब्रेक लगने के साथ ही मेरी सोच को भी ब्रेक लग जाते हैं।

"क्या हुआ ?

"महानगर की मुख्य समस्या मैम। रोड जाम। "

"कितनी देर लग जाएगी। "

खुलने को एक मिनट लगे और न खुले तो रात निकल जाए।" मैं घबराकर आदि को फोन लगाती हूँ ।आदि रोड जाम.....पता नहीं कितना समय लगेगा.. मुझे नहीं पता अब एक्जैक्टली कहाँ हूँ ?....

नहीं-नहीं ये रास्ता मुझे पता तो है।....नहीं बिलकुल नहीं। वैसे भी महानगर अब बिलकुल सेफ नही।..... हाँ नम्बर नोट कर लिया है। हाँ वो सब है।. नहीं, घबराना क्या?..... ठीक तुम मिनी को सुलाओ।मेरे बिना तंग कर रही होगी।....

हाँ मैं बताती हूँ।"

गाड़ी चींटी की रफ्तार से आगे बढ़ती है।

"खुल गया जाम। "

"मैम आगे बहुत लम्बी लाइन है।"

मैं आँखें बंद कर सीट से सर टिकाती हूँ।एसी की ठंडक में भी पसीने की बूँदें माथे पर झिलमिलाती हैं।
”कुछ कीजिए भैया।बहुत देर हो रही है।”
”मैम इसमें मैं क्या करूँ?मुझे भी घर पहुँचना है।”
मैं रुआँसी हो जाती हूँ। फोन बज रहा है।
”हाँ आदि पता नहीं कितना समय लगेगा.....
मिनी बहुत परेशान कर रही है।पता नही किस घड़ी में निकली थी घर से। हाँ तुम उसे देखो।. हाँ ठीक है।” एक उदासी मुझे अपने घेरे में ले लेती है।मिनी का चेहरा बार बार नजरों में घूमता है। अचानक टैक्सी की रफ्तार बढ़ जाती है। मैं बाहर देखती हूँ।एकदम सुनसान सड़क दिखाई देती है। रास्ता कुछ अनजान सा नजर आता है। मैं घबरा जाती हूँ। ”ये कौन सी जगह है?” “मैम उधर से न जाने कितनी देर लगती। ये रोड कम चलता है।यहाँ से जल्दी पहुँच जाएंगे।” मुझे निर्भया की याद आ जाती है।हाथ -पैर ठंडे पड़ जाते हैं।ड्राइवर मुझे राक्षस नजर आने लगता है। फोन उठाती हूँ।नो सिग्नल। मेरी आँखों से टप -टप आँसू फिसल जाते हैं। मैं बार बार फोन उठाती हूँ। नो नेटवर्क । अँधेरा उभर उभर कर आ रहा है।मैं भगवान को याद कर रही हूँ। एक -एक पल युग के समान बीत रहे हैं।टैक्सी सड़क पर दौड़ रही है।मुझे अपनी ही चीखें सुनाई दे रही हैं। मैं घबरा कर बाहर देखती हूँ। चिरपरिचित सा रास्ता दिखाई देने लगता है। मैं चिड़िया की तरह चहक उठती हूँ।”यहाँ से तो पास ही है अब।””जी मैम।बस पन्द्रह मिनट और। वहाँ अभी भी जाम है। आप गूगल मैप पर देख लीजिए।”मेरी आँखों से अविश्वास की लहरें अब छिटक रही हैं। फोन फुल वौल्यूम चिल्ला रहा है। मैं कॉल पिक करती हूँ। ”आदि बस पहुँचने वाली हूँ।.. हाँ सिग्नल नहीं थे।क्या करती फिर...पता है तुम कितने चिन्तित हो गये होगे.. मिनी अभी जाग रही है.बात कराओ. बस बेटा मम्मा आ रही है। ””मैम आपने लोकेशन यहाँ तक की बताई थी। यहाँ से घर कितनी दूर है आपका?””आप यहीं छोड़ दीजिए मैं आदि को कॉल मिलाने लगती हूँ।आदि मैं रोड पर हूँ।हाँ ...तो और क्या ऑप्शन।... मैं वेट कर लेती हूँ।तुम आराम से आ जाओ। ” “मैम कितनी दूर है घर है बताइये।रात में आपका अकेले खड़े होना ठीक नहीं। ””हाँ...।””आपका अकेले खड़ा होना ठीक नहीं। ”“यहाँ से दायें ले लीजिए। अब इधर यू टर्न। स्ट्रैट चलिए अब। आगे गली है आप चल पायेंगे। ”जी मैडम। ”टैक्सी गेट पर रुकती है।आदि मिनी को थामे गेट लौक कर रहे हैं। मिनी हाथ छुड़ा मुझसे आ लिपटती है।
आदि टैक्सी वाले का पेमेन्ट करते हैं। मैं टैक्सी वाले को मुस्कुराकर थैंक्स बोलती हूँ।वो मधुर मुस्कान के साथ मिनी को एक चाकलेट पकड़ाता है। मिनी मेरी ओर देखती है।
”ले लो बेटा। बिटिया ने दो मँगवायी थे उसे एक ही दे दूँगा।” मिनी थैंक्यू बोलती है। टैक्सी मुड़ जाती है।मैं उसे जाता हुआ देखती हूँ। खिड़की से सर बाहर निकाल वो चिल्लाता है
”महानगर इतने भी अनसेफ नहीं हैं मेम। ”

**डाक्टर उपमा शर्मा**
**बी–1/248 यमुना विहार**
**दिल्ली 8826270597**

# ग़ज़ल

नित नए ताने सुनाए जा रहे हैं।
जान से प्यारे बताए जा रहे हैं।।

काटकर पर कह रहे आज़ाद हो।
इस तरह रिश्ते निभाए जा रहे हैं।

जान से ज्यादा जिन्हें चाहा सदा।
वो हमारी जान खाए जा रहे हैं।।

क्यों दुखी हो इस तरह से खुश रहो।
मायने हमको बताए जा रहे हैं।।

हमने सारी जदगी खाया दग़ा।
हमपे सब तोहमत लगाएं जा रहे हैं।।

जी नही सकते ”विजय” तेरे बिना।
हो खफ़ा पर हम मनाएं जा रहे है।।

**विजय बेशर्म**
**गाडरवारा मप्र 9424750038**

**लघुकथा**

# संस्कार

गृहिणी हो या मां हो बहुत काम करने से थक जाती है ।आखिर वह भी इंसान है ना। सुधा भी दीपावली का काम करते करते थक गई ।रोहन सब देख रहा था और जितनी बन सके उतनी मां को मदद भी कर रहा था। मां को ज्यादा थकी हारी देखकर उसने कुछ सोचा और मां को कहा, ” मां आप खाना तो बहुत अच्छा ही बनाती हो, पर आज बाहर के खाने का मन कर रहा है, मैं आर्डर करता हूं आज शाम में खाना मत बताना ” ।

और वह मानने वाला नहीं था यह बात सुधा को पता थी। कुछ देर बाद खाने का पार्सल आ गया। रोहन ने ही खाने के टेबल पर सब लगाया। मां और पिताजी को आवाज दी। तब सुधा ने देखा कि तीनों के हिसाब से खाना कुछ ज्यादा है। तब उसने उत्सुकता वश रोहन से पूछा रोहन खाना ज्यादा मंगाया क्या? तब रोहन ने कहा,” मां आप रोज शाम को देर से आती है इसलिए अपनी काम करने वाली लक्ष्मी मौसी को खाना खिला कर ही भेजती हो, और आज तो तुम नहीं बनाओगी ना। फिर उसको भी खिलाना है ना। तो इसीलिए उसके लिए भी पहले से ही मंगवाया है। यह सुनते ही मां का दिल भर आया और उसने बडे प्यार से कहा ”मेरा प्यारा रोहन”।

**सुवर्णा जाधव**
**पुणे**
**9819626647**

**हकीकत**

# वरिष्ठता पाने के हथकंडे

”हैलो, नमस्कार जी” संचालिका महोदया ने कहा । ”नमस्कार, मेरी आवाज ठीक से आ रही है ?” संध्या ने उत्तर में कहा । ”हाँ हाँ आ रही है ।” सफर से थकी संध्या घर का काम जल्दी-जल्दी से निपटाकर ३ बजे गूगल मीट पर लघुकथा संगोष्ठी के लिए बैठी थी और आयोजन के लिंक से जुड़कर संचालिका से वंदन अभिनंदन कर रही थी। गोष्ठी तीन-चार लोगों का ही था ।

अध्यक्ष महोदय और एक रचनाकार भी जुड़ गए । वंदन अभिनंदन के बाद आयोजन का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुई । फिर लघुकथा और रचनाओं पर चर्चा हुई। अध्यक्ष विनोद जी कह रहे थे कि ”आजकल लोग स्वयं ही खुद को वरिष्ट साहित्यकार मान लेते हैं और दूसरे की रचनाओं की समीक्षा में कमियां ही कमियां निकालते रहते हैं । इसीलिए मैं किसी आयोजन में शामिल नहीं होता हूँ ।”संचालिका महोदया उनकी बातों में ”हूं..हूं..” कहकर हामी भर रही थी । दरअसल ये आयोजन विनोद जी ही करवाते हैं । जो प्रतिदिन अलग-अलग रचनाकार को बुलाते हैं । फिर परिचय से आगे का कार्यक्रम शुरु हुआ । ”आप क्या करती हैं संध्या जी ?” अध्यक्ष महोदय का सवाल। ”मैं एक गृहिणी हूँ ?”। ”साहित्य में रुचि कब और कैसे हुई ? वैसे तो साहित्य में रुचि छठी-सातवीं से ही थी, किन्तु शादी के बाद घर गृहस्थी में उलझ गई। लेखन छूट गया ।” संध्या कह रही थी -”२३-२४ साल के बाद जब बच्चे बड़े हुए और अपनी-अपनी रह पकड़ लिए मतलब पारिवारिक कुछ जिम्मेदारियों से मुक्त हुई तो मैंने पुनः लेखन शुरु किया ।”

”मतलब साहित्य आपके लिए टाईम पास है ?”

”ऐसी बात तो नहीं है।”

”अभी आपने कहा तो कि जब जिम्मेदारियों से मुक्त हुए तब समय बिताने के लिए लेखन शुरु की ।”

”मुझे लगता है आदरणीय, गृहिणी की जिम्मेदारियों को आप बहुत कमतर आंक रहे हैं । वैसे तो मैं यहाँ भी अभी आने से मना की थी, क्योंकि मेरे पास अभी समय नहीं था लेकिन संचालिका महोदया के विशेष आग्रह पर समय निकाल कर मैं आ पायी हूँ ।”

”बात तो वही हुई कि आपके लिए साहित्य टाइम पास मुंगफली की तरह है ?”

”साहित्य में हम क्या लिखते हैं यही निर्भर करता है साहित्य के भविष्य के लिए, ना कि कब और क्यों लिखते हैं । इतना ही नहीं आप एक गृहिणी की जिम्मेदारी को बहुत कम आंक रहे हैं ।”

”संध्या जी सर का कहने का ये मतलब है कि...” संचालिका बीच-बचाव करते हुए कहने की कोशिश की, लेकिन संध्या ने उनकी बातों को अनसुना करते हुए कहा ”मुझे लगता है कि आप जो सभी को बुला-बुलाकर सबकी रचनाओं और रचनाकारों की समीक्षा करते रहते हैं , उससे पहले आपको एक बार अपनी समीक्षा भी करवा लेनी चाहिए।”

फिर गूगल मीट के लेफ्ट बटन को दबा दिया संध्या ने ।

**पूनम झा 'प्रथमा' जयपुर, राजस्थान**

आलेख

# लीव-इन-रिलेशनशिप

हर मां-बाप का सपना होता है कि उनकी संतान अच्छी शिक्षा ग्रहण करे। योग्य नागरिक बने और उनका नाम रौशन करे। अच्छी शिक्षा पाना इतना आसान नहीं है। हर विद्यार्थी को उसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। सन् **2021-22** में पूरे संसार में कोरौना महामारी फैली थी। विदेश में पढ़ने गए विद्यार्थियों को स्वदेश लौटना पड़ा। यदि देश में मेडिकल और इंजीनियरिंग की शिक्षा सहज सुलभ होती तो उन्हें विदेश में क्यों जाते। अनेक विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए बैंकों से ऋण लेना पड़ता हैं। देश विदेश जहां भी अवसर मिलता है वे शिक्षा ग्रहण करने के लिए चले जाते हैं।

ऋण हासिल करने में उनका जीवन बैंक का बंधक हो जाता है। पढ़ाई के बाद ऋण की भरपाई करना उनकी जिम्मेदारी है। अपने कैरियर को सवांरते- सवांरते उनकी आधी जिंदगी पार हो जाती है। कर्ज का बोझ उतारना उनकी प्रथम वरीयता होती है। आय का बड़ा भाग किस्तें भरने में चला जाता है। सीमित संसाधनों में गुजारा करना उनकी मजबूरी होती है। उहापोह की स्थितियां उन्हें न जीने देती हैं और न मरने देती हैं। ऐसी परीस्थितियों लीव इन रिलेशनशिप एक विकल्प खुला दिखाई देता है। यह विकल्प जीवन उन्हें पारिवारिक बंधनों और संतानों के दायित्व से मुक्त रखता है। यद्यपि सर्वोच्च्य न्यायालय ने "लीव इन रिलेशनशिप' को अब मान्यता प्रदान की है तद्पि इस तरह का विवाह भारतीय समाज में पहले भी होते रहे हैं।

भारतीय धर्म शास्त्रों में आठ प्रकार की वैवाहिक पद्धतियों कि उल्लेख मिलता हैं यथा- 'ब्रह्म, दैव, आर्श, प्राजापत्य, असुर, गन्धर्व, राक्षस और पिशाच।' वर एवं कन्या पक्ष की सहमति और दोनों पक्षों की आपसी सहमति से किया गया विवाह ''ब्रह्म विवाह'' कहलाता है। इस विवाह को पुरोहितों के द्वारा मान्य विधि विधान से संपन्न कराया है। इस विवाह को सर्वोत्तम माना जाता है। किसी धार्मिक कार्य की पूर्ति के लिए अपनी कन्या को किसी विशेष व्यक्ति को सौंप देना ''दैव विवाह'' कहलाता है। इस कोटि का विवाह मध्यम विवाह माना जाता है। देवदासी प्रथा इस विवाह पद्धति की देन मानी जाती है। जब कन्या-पक्ष उसका निर्धारित मूल्य चुकाकर विवाह किया जाता है तब वह 'अर्श विवाह' कहलाता है। भोजपुरी के सेक्सपियर भिखारी ठाकुर ने 'बेटी बेचवा' नामक नाटक में इस विवाह पर तीखा प्रहार किया है।

प्रजापत्य विवाह की प्रथा आजादी के पूर्व प्रचलन में थी। उस समय कन्या की सहमति बिना उसका विवाह किसी दबंग एवं धनवान वर (सामंत) से कर देना 'प्रजापत्य विवाह' कहलाता है। कालांतर में इस प्रथा का नाम 'कन्यादान' पड़ गया और वह प्रथा रूढ़ हो गई। इस प्रकार के विवाह में वर (राजा) का निर्णय अंतिम होता था। राज्य की प्रजा का इस मामले में वश नहीं चलता था। इस विवाह पद्धति के कारण राजाओं की अनेक रानियां हो जाती थीं। आधुनिक युग में प्रेम विवाह का चलन जोरों पर है। परिवार के लोगों की सहमति के बिना वर और कन्या मान्य रीति- रिवाजों को किनारे करके विवाह कर लेते हैं। ऐसा विवाह 'गंधर्व विवाह' कहा जाता है। गंधर्व विवाह को प्रेम विवाह अर्थात 'स्वअम डंततपंहम' भी कहा जाता है। इस विवाह का एक नया रूप 'लिव इन रिलेशनशिप' के नाम से आजकल चर्चा में है। भारतीय आख्यानों में दुष्यंत और शकुन्तला का संबंध को प्रेम विवाह का एक उदाहरण है।

कन्या को आर्थिक आधार पर खरीद कर विवाह कर लेना 'असुर विवाह' कहलाता है। कन्या की सहमति के बिना उसका अपहरण कर के जबरदस्ती विवाह कर लेना 'राक्षस विवाह' कहलाता है। आधुनिक युग की संचार क्रांति ने सामाजिक परिवर्तन की गति को पंख लगा दिए हैं। फिल्म, वीडियो तथा सोशल मीडिया का युवा मस्तिष्क पर गहरा असर पड़ा रहा है। असमाजिक तत्त्व उसका फायदा उठाते हैं। इस क्रम में कन्या की मदहोशी, मानसिक दुर्बलता आदि का लाभ उठाकर उससे शारीरिक संबंध बना लेते हैं। इस तरह संबंध बनाने को शास्त्रों में 'पैशाच विवाह' की संज्ञा दी गई है।

मानव मनोविकारों मोटे तौर पर पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है। विकारों की अति को पंच महा विकार कहा जाता है। तथागत बुद्ध ने इन महा विकारों से छुटकारा पाने हेतु पंचशील का अनुशासन किया था। संसार कभी पूरी तरह से सभ्य नहीं रहा है। समय समय पर सभ्यता के मानक बदलते रहे हैं। कल जो नैतिक और सर्वमान्य था आज वह अनैतिक माना जा रहा है। देवदासी प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, कन्यादान प्रथा, सती प्रथा, बहुत पत्नी विवाह, नर बलि प्रथा आदि कभी सामाजिक रूप से मान्य था। आज इन प्रथाओं को अपराध माना जाता हैं। सरकार को ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए कि युवा वर्ग को स्थानीय स्तर पर अच्छी शिक्षा और रोजगार मिल सके। वे देश के लिए अच्छे नागरिक बन सकें। उनके जीवन में दर-दर पर भटकाव न हो और वे गुमराह होने से बच सकें।

**डॉ. गिरीश कुमार वर्मा**
**मोबाइल नंबर**
**9336089753**

आलेख

# एक नया पागलपन

स्वयं से प्रेम तो बहुत से मनुष्य करते हैं, मैं भी करता हूँ। किन्तु विवाह तो किसी अन्य से ही किया है। विवाह का उद्देश्य प्रेम होता है पहली बार पता चला। हमारी सनातन परंपरा में तो दो अनजाने लोग विवाह करते रहे हैं बच्चे पैदा करते रहे हैं परिवार का विस्तार करते रहे हैं। उनमें कभी प्रेम हुआ तो ठीक नहीं हुआ तो ठीक। मेरे अपने विवाह को 26 वर्ष हो गए। मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ निश्चय करके नहीं कह सकता। पत्नी को छोड़िये मेरे जानने वालों को को यह बता दे कि विमल कुमार शुक्ल को किसी से प्रेम भी है तो विश्वास नहीं करेंगे।

विवाह का कारण प्रेम है तो यह भी आवश्यक नहीं। हमारे समाज में तमाम लोग हैं परस्पर प्रेम करके जीवन बिता देंगे पर विवाह नहीं करेंगे। विवाह किसी और से प्रेम किसी और से यह भी चलता है।फिल्म वालों ने लैला मजनूँ और शीरी फरहाद से टपोरियों को दिमाग में इस तरह भर दिया है कि अब प्रेम पहले फिर शादी और कभी कभी शादी से पहले ही ब्रेकअप।

मैं कुछ लोगों को जानता हूँ जो विवाह करके अपना घर तो बसाही नहीं पाये हाँ प्रेम के चक्कर में दूसरे का तोड़ जरूर दिया। ऐसे लोग भी समाज में हैं विवाह नहीं करेंगे लेकिन हर फूल का आस्वाद ग्रहण करने के चक्कर में रहेंगे। एक उम्र पर जब स्थायित्व चाहेंगे तो फूलों के द्वारा स्वतः फेंक दिए जायेंगे।

खैर आप विवाह करें न करें। आपकी इच्छा। संविधान अनुमति देता है। किन्तु बायोल,जी का क्या? बायोल,जी सभी सजीवों में (पेड़ पौधों सहित) अपनी सृष्टि विस्तार के लिए लैंगिक व अलैंगिक दो प्रकार के साधनों को इंगित करती है। लैंगिक व अलैंगिक जनन करनेवाले प्राणियों की पृथक पृथक विशेषताएं होती हैं। स्पष्टतः मनुष्य लैंगिक प्राणी है। जैसे ही बालक बालिकाएं किशोरावस्था में पहुँचते हैं विपरीत लिंगियों में आकर्षण बढ़ जाता है। इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है।

हाँ हमारी सामाजिक परम्पराओं व मान्यताओं के कारण हम लड़के लड़कियों के स्वतंत्र मेलजोल को अनैतिक मानते रहे हैं। इस अनैतिकता को नैतिकता का स्वरूप प्रदान करने के लिए ही विवाह को स्वीकारा गया है। दूसरे आयुर्वेद के जानने वाले जानते है कि शरीर के चौदह वेग भूख, प्यास, खाँसी, श्वास, जम्भाई आदि में एक वेग यौनेच्छा का भी है। इन सारे वेगों को रोकने से शरीर विकारग्रस्त हो जाता है। विवाह मनुष्य की यौन इच्छाओं की तृप्ति का साधन भी है। भौतिकी में भी न तो धनावेश-धनावेश आक षत होते हैं और न ;णावेश-;णावेश। ये सदैव प्रतिकर्षित ही करते हैं। कार्यफलन के लिए धनावेश वर्णिावेश का संगम आवश्यक है। इसी प्रकार चुम्बक में ध्रुवों का व्यवहार भी होता है। उत्तर-उत्तर व दक्षिण-दक्षिण ध्रुव कभी नहीं मिलते। एकल ध्रुवीय चुम्बक का तो अस्तित्व ही नहीं होता।

ठीक इसी प्रकार आप सनकी या महामानव हो सकते हैं किन्तु परिवार नहीं हो सकते। परिवार के लिए धनावेश-ऋणावेश, उत्तर ध्रुव-दक्षिण ध्रुव जैसे ही स्त्री-पुरूष तथा प्रेम और घृणा दोनों की ही आवश्यकता होती है। यह सम्भव है कि आपको अपने मनोनुकूल साथी मिलने में समय लगे इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करें किन्तु मिलेगा अवश्य। न मिले फिर दूसरे को अपने मनोनुकूल बना लें। सबसे सरल है स्वयं दूसरे के मनोनुकूल बन जाएं। प्रेमी का यह भी एक स्वरूप होता है और सर्वोत्तम स्वरूप है कि हम वह बनें जो हमारा प्रेमी/प्रेमिका चाहता है/चाहती है। मार्ग अनन्त हैं हठ छोड़ कर देखें।

संक्षेपतः विवाह एक आवश्यक व नैतिक शर्त है, आप करें न करें आपकी मर्जी, किन्तु उपयुक्त अवस्था प्राप्त कर, पूर्ण स्वस्थ होकर भी विवाह नहीं करते तो आप मनोविकारी हैं हाँ सन्यासी हो जाएं अलग बात है। तो मेरा सुझाव है यदि आपकी उम्र हो गई है नैसर्गिकता का आनन्द लें विवाह करें और वैवाहिक धर्म का पालन करें। जिस प्रकार मार्ग सदैव समतल नहीं होता उसी प्रकार जीवन भी समतल नही होता। पर्वतारोहण से घबरायें नहीं ।

**विमल शुक्ल हरदोई**

व्यंग्य

# श्री ओलम्पिक चिन्तनम

इस समय टीवी चैनलों पर बड़ी तेजी से काँव-2 जारी है कि हमारा महान भारत आखिर ओलंपिक में अमेरिका,चीन,जापान आदि देशों की तरह स्वर्ण पदक क्यों नहीं जीत पाता? तो सुनो हम किसी से कम हैं क्या?अगर यूज़ एंडथ्रो,मतलब लेथन फैलाने, घूसखोरी, कामचोरी, बेईमानी आदि में कोई अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा करा दी जाए तो सारे स्वर्ण और रजत हमारे बन्दे ही न झटक लें तो मेरा नाम बदल देना। अब जिस देश मे केवल क्रिकेट को ही राष्ट्रीय खेल और राष्ट्रधर्म माना जाता हो। क्रिकेटरों को भगवान का दर्जा हासिल हो।

भारत रत्न जैसा पुरस्कार बिना सरकारी देर के युवावस्था में ही प्राप्त हो जाए, किन्तु तीन बार देश को हाकी में ओलम्पिक स्वर्ण पदक दिलाने वाले ध्यानचंद जैसे महान हाकी के जादूगरों को मरणोपरान्त भी यह सौभाग्य नसीब न हो वहाँ क्रिकेटर के अलावा कोई और क्या बनना चाहेगा? गनीमत है ध्यानचंद जी मे आधुनिक आइआइ टियन्स और एमबियन्स बालकों जैसे संस्कार नहीं थे अन्यथा वे हिटलर के ऑफर पर जर्मनी में सेट हो लिए होते। मीडिया ने भी इस मामले में बड़ी खूबसूरत भूमिका निभाई है। इसीलिए कुछ लोगों ने आरोप लगाते हुए कहा है कि ये ट्रिपल सी की पिछलग्गू है मतलब क्रिकेट,सिनेमा और क्राइम ही उसकी नज़र में न्यूज़ मैटेरियल हैं।

हमें पिता जी के द्वारा सुनाया गया एक संस्मरण याद आ रहा है।जो पड़ोसी गाँव के बाँकेलाल के सम्बन्ध में है।गुलाम भारत में एक बार अंग्रेजों ने गांव में लम्बी कूद का आयोजन कराया। बाँकेलाल परिवार पालने के लिए भारे में झोंकने के लिए बाग में आम के पत्ते बटोरने गए थे। कूद होते देख वे भी पहुँचे और गोरों से बोले हम भी कूदना चाहते हैं।गोरों ने व्यंगात्मक लहजे में कहा हाँ-हाँ ,क्यों नही-2?लम्बे कद के बाँके ने जो छलांग लगा तो गोरों की आंखें फटी रह गईं।उनकी अधिकतम कूद से लगभग पांच फीट आगे। उसके बाद बाँकेलाल अपना फट्टा उठाकर यह कहते हुए चल दिये कि हमें देर हो रही है।भार झोकना है जब कोई यहां तक पहुंच जाए तो हमें फिर बुला लेना।हमारी मड़इया यहाँ से बस आधा मील दूरी पर है।संस्मरण का सार यह है कि ऐसे कितने बाँके यूँ ही नमक,तेल,लकड़ियों की पारिवारिक आपूर्ति के चक्कर मे अभावों में ही दुनिया से गुमनाम चले जाते हैं जोकि इतिहास रचने का माद्दा रखते हैं किंतु उन्हें अवसर ही नहीं मिलता। इस देश मे आज भी एकलव्यों के अंगूठे काटे जाने की परम्परा बदस्तूर जारी है। किसी महापुरुष ने कहा था दिल्ली से भेजा गया एक रुपया जब बुधवारी,इतवारी तक पहुंचता है तो घिसते-2 दस पैसा रह जाता है।जहाँ जिम्मेदार बच्चों के और प्रशिक्षुओं के भोजन से पौष्टिकता खा लेते हैं,धात्री और गर्भवती महिलाओं का राशन चट कर जाते हों, सड़कों से कोलतार,पुलों और इमारतों से सरिया- सीमेंट हज़म कर लेते हो,जिस देश में लुच्चई और हराम का माल समेटने की होड़ लगी हो,वहाँ ऐसा भी हो जाना किसी चमत्कार से कम है क्या ?हमारे देश के लोग बड़े कंतड़ी है एक बार किसी चीज को देख लें कुछ दिनों में ही उसकी कॉपी मार्केट में उपलब्ध करा देते हैं।बालीवुडिए कितनी कहानियां हालीवुड से उड़ाकर ब्ल,कबस्टर फ़िल्में बना डालते हैं। आज का स्वीटलेस म्यूजिक टोटली वहाँ से इंस्पायर्ड है। किन्तु एक बात मेरी समझ में घुसपैठ को बिल्कुल तैयार नहीं है कि देश के इतने उच्च बौद्धिकता वाले लोग ओलम्पिक चिंतनम पर ध्यान क्यों नहीं देते?आखिर बार-2 हम फिसड्डी क्यों रह जाते हैं?

लानत है हमारे कंतड़ी होने पर।उनकी ट्रेनिंग, प्रबन्धन और रणनीतियाँ हम आज भी कॉपी करने में क्यों असफल हैं?इस तकनीक के समस्त पीएचडी धारकों को मैं दण्डवत प्रणाम करके निवेदन करता हूँ।इन देशों से वो तकनीकें भतह्न परीक्षा के पेपरों की तरह लीक करके भारत में भी कॉपीपेस्ट करने का कष्ट करें जिससे आबादी के ओलम्पिक में रजत पदक प्राप्त करने वाला हमारा देश ओलम्पिक खेलों में भी पदकों के कीर्तिमान गढ़ डाले।हाँ नही तो.....................................

**रामभोले शर्मा पागल**

**हरदोई, उत्तर प्रदेश**

**कहानी**

# बंटवारा

**घर** भर में कोहराम मचा था,तारा जी सीढ़ी से गिर गई थी, सिर पर भारी चोट लगी थी, डाक्टर ने बताया कि शायद दिमाग की कोई नस फट गई थी, जो उन्हें यूं अचानक दुनिया को छोड़ अलविदा कहना पड़ा। यूं तो तारा जी अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो चुकी थी,तीन बेटे थे, सभी की शादी हो चुकी थी और सभी अपने अपने परिवार में मस्त थे।

लेकिन तारा जी का यूं अचानक जाना उनके पति राधेश्याम जी पर पहाड़ टूटने जैसा था, क्योंकि राधेश्याम जी थोड़े से अस्वस्थ रहते थे, और उन्हें हर पल तारा जी के साथ की जरूरत महसूस होती थी, असल में यही वह उम्र होती है,जिसमें हमें अपने जीवनसाथी की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, और जीवन साथी की जैसे आदत सी हो जाती है, इसी समय पर आकर हम जीवनसाथी का सही मायनों में अर्थ समझ पाते हैं,और फिर पूरी ज़िंदगी तो जिम्मेदारियों में निकलती ही है, ठहर कर जिंदगी जीने का आनंद तो अभी शुरु हो पाता है। अभी आकर हम एक-दूसरे के सुख-दुख में भागी होते हैं। पर ईश्वर के आगे क्या किसी की चली है ....?

राधेश्याम जी के दिमाग में हजारों सवाल चल रहे है कि अब उनकी जिंदगी किस प्रकार कटेगी, कौन उनके सुख दुख में उनके साथ होगा क्योंकि तीनों ही बेटे शहर से बाहर रहते हैं।तारा जी की तेरहवीं के बाद उनका सारा सामान बांटा जा रहा है तारा जी के पास सोने के काम की दो बहुत भारी साड़ियां है, जिनका मूल्य आज बहुत अधिक होगा, और शायद आज तो ऐसा काम साड़ीयों पर मिले भी नहीं। मंझली और छोटी बहू झट से कहती हूं कि मां ने ये साड़ी उन्हें देने का वादा किया था, राधेश्याम जी कहते हैं अगर ऐसा है तो तुम रख लो, और थोड़ी ही देर में तारा जी के सारा सामान चीज जेवर, कपड़े आदि का बंटवारा हो जाता है, लेकिन अफसोस किसी ने भी अभी तक इस बारे में जिक्र नहीं किया कि राधेश्याम जी अब किसके साथ रहेंगे और कहां रहेंगे? ये सोचकर राधेश्याम जी की आंखें नम हो जाती हैं, वो पूजा घर की तरफ जाते हैं, तभी उनकी बड़ी बहू सुनिधि आकर उनसे कहती है, पापा एक चीज का देने का वादा तो मां ने मुझसे भी किया था, क्या आप मुझे वो दोगे? राधेश्याम जी कहते हैं जो कुछ था तुम्हारे सामने है, अब क्या दे सकता हूं? सुनिधि कहती है आपका स्नेह और प्यार पापा। मां ने एक बार कहा था कि उन्हें सबसे ज्यादा फिक्र आपकी है, कहा था यदि उन्हें कुछ होता है तो मैं आपकी सेवा करूं, हां पापा आपका आशीर्वाद आपकी छत्रछाया देने का मां ने मुझसे वादा किया था ,तो पापा आप मुझे ये दोगे ना.. इतना सुनना था कि राधेश्याम जी कुछ कह तो नहीं पाते पर उन्होंने अपना कपंकपाता हुआ आशीर्वाद भरा हाथ अपनी बहू सुनिधि के सर पर रख दिया और सही मायनों में बंटवारा अब पूरा हुआ।

**ऋतु गुप्ता**
**खुर्जा बुलंदशहर (उ0प्र0)**
**मोबा 9568432833**

## भोर हुई

भोर हुई  चिड़िया है गाती,
निज कलरव से तुझे जगाती।
कहती सो कर व्यर्थ गँवा मत,
जीवन बड़ी अमूल्य थाती।

सोये सोये जीवन बीता,
भीतर का घट रह गया रीता।
तेल चुका जाता जीवन का,
व्यर्थ जले श्वासों की बाती।

काटा चौरासी का फेरा,
मूरख अजहूँ न भीतर हेरा।
चकाचौंध में ऐसा अटका,
माया बुद्धि को भरमाती।

मोह के  धागों ने उलझाया,
भूल गया तू काहे आया।
एकाकार न होने देती,
'अंजु' मृगतृष्णा भटकाती ।।

अंजु कपूर गांधी

**जानकारी**

# पारम्परिक कलाएँ

माँ, ये कहाँ की तस्वीरें है ?अरे ! ये तो मैं हूँ यह कहते हुए गगन के चेहरे पर जिज्ञासा व प्रसन्नता के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। हाँ ,तुम ही हो और ये सब तस्वीरें मथुरा और वृंदावन की हैं। पर तुम्हें ये अलबम कहाँ से मिली ?माँ ने चकित होते हुए पूछा। इसे छोड़ो माँ, पहले ये बताओ कि जो मन्दिरों की दीवारों पर चित्र बनाए गए हैं उन्हें कौन सी पेंटिंग कहते हैं? बारह साल के गगन ने बात को बीच में काटते हुए कहा बेटा, जिस चित्रकला की तुम बात कर रहे हो न ,उसे यमुना घाट की चित्रकला के नाम से जाना जाता है ।मन्दिरों की दीवारों पर बनाई गई चित्रकला और मूर्तिकला हजारों वर्ष पुरानी है । अनेक राजवंश आए और चले गए किंतु आज भी यह लोककला कलाकारों के बीच परम्परागत रूप में यमुना घाट की चित्रकला के रूप में जीवित है । मुगल काल के समय कुछ चित्रकारों ने इसे लघु चित्रकला के रूप में विकसित किया।

क्या इसमें सभी चित्र भगवान कृष्ण के ही हैं?( गगन ने प्रश्न किया) हाँ, इस चित्रकला के विषय श्री कृष्ण से ही संबंधित हैं। उनकी बाललीलाएँ, महारास, राक्षस वध , यमुना तट के सभी प्रसंग, गीता उपदेश आदि सभी घटनाओं को चित्रित किया गया है । माँ, इन तस्वीरों  में आँखें कितनी बड़ी और सुन्दर बनाई गई हैं। सही कहा, बड़ी -बड़ी आँखें, कृष्ण जी की मोहक मुस्कान सभी को बरबस आकर्षित करती हैं । इसमें शारीरिक गठन और अनुपात का विशेष ख्याल रखा गया है । साथ ही साथ वस्त्रों और आभूषणों की बारीकी पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

क्या ये केवल दीवारों पर ही बनाई जाती है? गगन की जिज्ञासा बढती ही जा रही थी। इसे कपड़ों पर और लघु चित्रकला के रूप में भी बनाया जाता है। मुगल काल में जब इसे भी मिनियेचर के रूप में बनाया गया तो इसमें रंगों के स्थान पर कहीं -कहीं सोने का भी प्रयोग किया गया। वृंदावन के कन्हाई चित्रकार ने इस परम्परागत लोक कला को आगे बढ़ाते हुए इस शैली में कुछ नये प्रयोग भी किये हैं जैसे कि उन्होंने इसमें सच्चे आभूषणों को टाँकने का काम प्रारम्भ किया और इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचा दिया । नवीनतम प्रयोग के लिए उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया है। वृंदावन में कृष्ण कन्हाई जी की एक कला दीर्घा भी है, जहाँ से इन चित्रों को खरीदा जा सकता है। माँ, आप बार-बार लोककला की बात कर रही हैं, ये लोककला क्या होती है? गगन के सवाल मानों समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रहे थे। लोककलाएं पारम्परिक कलाएं हैं जो पीढी दर पीढी चली आ रही हैं। जैसे कि मधुबनी वरली ,बाटिक, पिथौरा,काँगड़ा , कलमकारी आदि।

क्या हमारे पंजाब की भी कोई लोककला है? पंजाब की लोककला फुलकारी है,माँ ने जवाब दिया।  क्या ये भी कोई चित्रकला ही है?  नहीं, ये एक किस्म की कढाई है जो रेशमी धागों से दुपट्टों पर की जाती है । फुलकारी अर्थात् फूलों की कलाकारी। इसका एक -एक धागा इतनी बारीकी और सफाई से काढा जाता है कि एक दुपट्टा पूरा करने में लगभग एक महीना लग जाता है। देखो, मैं तुम्हें दिखाती हूँ (यह कहकर माँ ने बरसों पुराना सहेज कर रखा हुआ दुपट्टा निकाल कर दिखाया) ये तो सच में बहुत सुन्दर है ! माँ, फुलकारी के बारे में कुछ और बताओ न... कहते हैं पंद्रहवी शताब्दी में मध्य एशिया के जट इसे भारत में लाए । कुछ का मानना है कि यह पर्शिया से भारत में आई,जहाँ इसे गुलकारी के नाम से जाना जाता है। प्राचीन काल में घर की औरतें इसे अपने इस्तेमाल के लिये बनाया करती थी। शादी, बच्चे के जन्म,त्योहारों आदि विशेष मौकों पर फुलकारी का प्रयोग आज भी किया जाता है.

आजकल न सिर्फ सूट और दुपट्टा ही अपितु पर्स , स्कार्फ, जूती ,साड़ी, लहँगे, कुशन कवर, बैल्ट आदि पर इसे किया जाने लगा है. देखा जाए तो अब यह काम मशीनों द्वारा किया जाने लगा है। हाथ से की जाने वाली फुलकारी बहुत कम ही देखने को मिलती है। किंतु इस पर तो केवल ज्यामितीय डिजाईन ही हैं, फूल तो कहीं पर दिखाई नहीं दे रहे! इसमें अधिकतर ज्यामितीय आकृतियाँ ही बनाई जाती हैं। फूल पत्तियों के अतिरिक्त कहीं -कहीं लहरें, मकड़ी का जाल आदि भी बनाए जाते हैं। फुलकारी की कढाई चार प्रकार से की जाती है बाग, थिरमा,बावन और दर्शन द्वार। बाग एकदम घनी कढाई होती है जिसमें नीचे का कपड़ा दिखाई नहीं देता।

थिरमा सफेद कपड़े पर की जाती है ,जिसका इस्तेमाल बुजुर्ग महिला और विधवा करती हैं। बावन में  अलग -अलग बावन आकृतियों के नमूने बनाए जाते है।दर्शन द्वार फुलकारी का प्रयोग गुरुद्वारों पर चढाने के लिये होता है। इस पर फूल -पत्तियों के अतिरिक्त जानवरों  और इंसानो के भी नमूने बनाए जाते हैं ।माँ, रूको मैं अभी आता हूं... लेकिन जा कहाँ रहे हो? (माँ ने आवाज देते हुए कहा) अपनी स्कैच बुक और रंग लेने... मुझे कृष्ण जी की तस्वीर बनानी है।

**किरण बाला चंडीगढ़**

व्यंग्य

# बाढ़ नहीं बहार है

बाढ़ राहत समीक्षात्मक कार्यो की प्रगति रिपोर्ट जारी करने के लिए मंत्री जी ने अपने पार्टी कार्यालय में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया। पेन, पेनड्राइव, कलम,कैमरा आदि लेकर लगभग सभी रिपोर्टर नेताजी के कार्यालय पहुंच गए। तय समय पर नेताजी पहुंचे और जैसे ही दोनों हाथ जोड़कर उपस्थित पत्रकारों का अभिवादन करते तब तक शोरगुल चैनल के रिपोर्टर ने उनके दोनों हाथों के बीच माइक घुसेड़ दिया। पत्रकार- सर...सर! जैसा कि आप जानते हैं कि हर साल आने वाले बाढ़ के कारण प्रदेश का अधिकांश क्षेत्र डूब जाता है फिर भी आप या आपकी सरकार द्वारा इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है ऐसा क्यों ?

नेताजी "भुनभुनाते हुए- ''अजीब बुड़बक हो भाई कौनो मैनर  है कि नही तुमको !अरे भाई  थोड़ा सांस त लेने दो अभी आए नहीं कि टपक पड़े माइक लेकर...देखिए आपकी जानकारी के लिए आपको बता दें कि हम और हमारी सरकार बाढ़ आने से एक महीना पहले से ही एनडीआरएफ और एसडीआरएफ टीम को अलर्ट मोड पर रखते है।बाढ़ पीड़ितों के लिए हजारों टन चुड़ा-गुड़,मुड़ी रिजर्व रखवाते हैं। पीड़ितों के लिए नाव और अपने क्षेत्र भ्रमण के लिए हेलीकाप्टर तैयार रखते हैं। बाढ़ से बचाव के लिए टीवी एवं अखबार हेतु विज्ञापन तैयार करवाते हैं और आप कहते हैं कि हर साल आने वाले बाढ़ के उपर हमारी सरकार ध्यान नहीं देती।...हद है मरदे.." शोरगुल चैनल के रिपोर्टर को दुत्कारते हुए नेताजी बोले। शोरगुल चैनल के पत्रकार की किरकिरी होते देख मन ही मन प्रसन्न हो उपर से संवेदना भाव व्यक्त कर स्थिति को संभालते हुए चीख-पुकार लाइव के रिपोर्टर ने कहा-"सॉरी सर  दरअसल हमारा आशय ये था कि हर साल आने वाली इस त्रासदी का स्थायी समाधान क्यों नह  करते आपलोग...!"!

"कौन भकचौंधड़ सब पत्रकार को बुलाय लिए हो जी! हमको बोलने ही नहीं दे रहा ससुरा खुदही भौंक रहल है" पत्रकार के इस प्रश्न पर कुनमुनाते हुए कार्यकर्ता की ओर देखकर धीरे से बुदबुदाए फिर लंबी मुस्कान बिखेरते हुए बोले- देखिए जी करोड़ों की जनसंख्या है,और बिजली, शिक्षा, चिकित्सा, सड़क, अपराध आदि सहित प्रदेश की हजारों स्थायी समस्या है जिस पर ध्यान देते देते पांच साल कब निकल जाता है पता ही नहीं चलता और रही बात बाढ़ की, इत सीजनल है कभी आया त कभी नही आया। वैसे भी नियमित पार्टी बैठक, पार्टी प्रचार, शिलान्यास  कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति, परिवार आदि की व्यस्तता के कारण पांच साल में अपने विधानसभा क्षेत्र में एकाध बार भी घूमने का समय नहीं मिल पाता।समयाभाव के कारण ही बाढ़ के स्थायी समाधान पर ध्यान नहीं दे पाते हैं.. .हे हे हे "। नेताजी की बात खतम हुई नहीं कि भड़कदार न्यूज़ के रिपोर्टर ने माइक उचकाते हुए पूछा-सर पक्के बांध का निर्माण क्यों नहीं  हो पाया अबतक"! नेताजी टेढ़ी नजरों से रिपोर्टर को देखकर बोले-बड़ा बकलोल हो जी!दर्शन शास्त्र अर कुछ पढ़े हो कि नही! अरे भा
नदी की धार प्राकृतिक है और मिट्टी का कच्चा बांध भी प्राकृतिक। प्रकृति का प्रकृति के साथ नैसर्गिक रिश्ता होता है फिर कृत्रिम पक्का बांध बनाकर प्रकृति के विरुद्ध हम क्यों जाए! वैसे भी सीमेंट,बालू और गिट्टी से बना बांध का कौन्हो भरोसा है कब प्रकृति अर्थात मिट्टी के जमीन से नाता तोड़ ले।

नेताजी अपनी बात पुरी करते तब तक एक कार्यकर्ता बोल पड़ा "अभी हाल में न एगो पुल पानी से दह गया है नेताजी"। नेताजी कार्यकर्ता की ओर उंगली दिखाकर पत्रकारों से बोले-" बड़ी होशियार है राम भरोस, पुरा दिन न्यूज़ देखते रहता है! हाँ त हम कह रहे थे कि प्रकृति का तोड़ सही नही होता।
"बट द लेक ऑफ परमानेंट सॉल्यूशन इज डेंजरस फोर फ्लड इफेक्टेड एरिया एंड देयर नेटिव्स" चिल्ल पों इंग्लिश चैनल के रिपोर्टर ने चिल्लाते हुए आगाह किया। अंग्रेजी सुनकर नेताजी की भौंह में भाइब्रेशन होने लगा। पास खड़ा कार्यकर्ता नेताजी के कान में फुसफुसाने लगा।संभवतः वह पत्रकार की बातों का हिन्दी अनुवाद कर रहा था।
नेताजी गले में पड़े पार्टी गमछा के दोनो सिरा पर हाथ फेरते हुए बोले-" या या... आ  ... अंडरस्टैंड... देखिए बाढ़ हमेशा बुरा नहीं  होता। आप बाढ़ का सकारात्मक पहलू देखिए। बाढ़ के दौरान वैसे घरों तक भी पानी पहुंच जाती है जहाँ हमारी सरकारी हर घर जल योजना के तहत भी पानी नहीं पहुंच सकती।

लाखों-करोड़ों के खर्च पर स्वीमिग पुल या वाटर पार्क की बजाय बाढ़ ग्रस्त गड्ढे और खेतों के नेचुरल वाटर पार्क में बच्चे स्वीमिंग का प्राकृतिक आनंद लेते हैं।बाढ़ के महीना में आपके चैनल को टीआरपी बढ़ाने के लिए प्राकृतिक न्यूज़ मिल जाता है और बाढ़ के पश्चात प्रभावित इलाकों का दौरा कर लेने से हमे भी जन प्रतिनिधित्व निभाने का मौका मिल जाता है। अब आप तो जानते ही हैं कि हमारी भोली भाली जनता नदियों को गंगा मैया, कोसी मैया,गंडक माता के रूप में पूजते हैं, इसलिए उनकी निश्छल आस्था पर माता स्वयं उनके घरों में पधारती और उन्हें धन्य करती है! उ कहते है न कि मन चंगा तो कठौती में गंगा "!

"लेकिन सर हर साल बाढ़ रूपी त्रासदी तो जनता को ही झेलना पड़ता है और कभी बाढ़ पीड़ित जनता ने आपकी इस उदासीनता पर सहनशीलता को त्यागकर हल्ला बोल कर दिया तो..."!हो-हल्ला न्यूज़ का एंकर बोल पड़ा।

"अजी चिंता मत करिए हमारी जनता काफी सहनशील और धैर्यवान है, जब ये लोग डेली के मंहगाई, भ्रष्टाचार, गरीबी, बेरोजगारी आदि स्थाई प्राब्लम को काफी हिम्मत और हौसला से झेल लेते है त फिर इ एकाध साल में आने वाला टेम्पररी बाढ़ इनकी सहनशीलता का क्या बिगाड़ लेगा जी! खैर चलिए इ पुछाताछी बहुते हुआ अब हमें निकलना है... और हाँ आपलोग भोजन करके जाइएगा पीछे हॉल में भेज-नॉनवेज दोनों का बूफे वाला इंतेज़ाम है "। इतना कह चिर-परिचित अंदाज में हाथ जोड़ नेताजी मुस्कुराते हुए कांफ्रेंस हॉल से बाहर निकल गये।

**विनोद कुमार विक्की**
**ग्रा+ पो.-महेशखूंट बाजार**
**जिलाः खगड़िया (बिहार)**

# संजय की ग़ज़लें

**(1)**

बेहद करीब आ के नगीना थमा गई।
है प्यार बेपनाह हसीना बता गई।।
कैसा हुआ है हाल सुनाऊँ मैं आपको
ज़ख्मों को वो प्यार में सीना सिखा गई।।
आया था' गाँव से कुछ' कमाने मैं' दोस्तों
आयी जो उसकी याद तो पीना सिखा गई।।
मुझको नहीं पता था कि होता है इश्क क्या
कैसे करूं मैं' इश्क सकीना पढ़ा गई।।
माना ते'रे हिसाब से' 'संजय' न जी सका
लेकिन तू ज़िन्दगी का आईना दिखा गई।।

**(2)**

'

नहीं मिलती हैं खुशियाँ हर किसी को।
भुला बैठा हूँ अपनी तिश्नगी को।।
मैं मांगू हाथ भी फैला के कैसे।
बता सकता नहीं इस बेबसी को।।
बहुत खोया है मैंने जिन्दगी में।
छिपाऊँ कैसे आँखों की नमी को।।
जला के खून अपना शायरी में।
लिखा करता था केवल खत उसी को।।
सहा है गम जुदा का भी जिसने।
वही बस जानता है आशिकी को।।
निकाला खूब मतलब जिस किसी ने।
वो' जानेगें कहाँ मेरी खुशी को।।
किनारा क्यों किया है सबसे मैंने।
को समझेगा क्या इस बेबसी को।।

**संजय कुमार गिरि**
**चित्रकार ,पत्रकार एवं कवि**
**,करतार नगर , दिल्ली 10053**
**दूरभाष -9871021856**

**गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव एवं सम्मान समारोह 2022 में आये सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है।**
**सुभाषचंदर "व्यंग्यकार" उपाध्यक्ष सम्मान चयन समिति गा0गा0सा0स0**

बाल कहानी

# नया नियम बाल कहानी

सर पर सुंदर सा टोपी वाला सेहरा, चारों पैरों में मोटे मोटे घुंघरू,पीठ पर रंग-बिरंगा दुशाला, दूल्हे रामू की सुंदरता को और बड़ा रहा था। उसी के पीछे पीछे चल रही दुल्हन सीता के गले में कमल के फूलों की बड़ी ही सुंदर माला थी।उसका मस्तक चमकते नगों वाली छोटी-छोटी सुंदर सी बदियों के दमदमा रहा था। सीता की पीठ पर लटके दुशाले की झालर बहुत शानदार थी। उसके पैरों में बंध पायल व उस में लगे घूंघरूओं की छम-छम आज सीता की चाल को और मतवाला बना रहा थी।

राम-सीता की जोड़ी बहुत ही प्यारी लग रही थी। सुंदर वन की रौनक आज देखते ही बनती थी। मनमोहक हरियाली में गाजे-बाजे की धुन ने वातावरण को और सुरमई बना दिया था। सभी के मन की खुशी छलक-छलक कर उनके मुख पर आ रही थी। सब खुशी और आनंद के सरोवर में गोते लगा रहे थे, और लगाए भी क्यों न उनके पक्के दोस्त रामू हाथी का विवाह सीता हाथिनी से जो हो रहा था। अनोखे विवाह को देखने के लिए, आस-पास के सभी जंगलों के जीव वहाँ एकत्रित हुए थे। क्योंकि रामू ने एक न रीति से विवाह करने का ऐलान किया था जिसे देखने की जिज्ञासा सभी को यहाँ खींच लाई थी। अपने मित्र की शादी में खुश हो मानव बंदर जबरदस्त ठुमके लगा रह था, तो मिनी बिल्ली शहनाई बजा रही थी, भोलू भालू की ढोलक की थाप ने तो वहाँ मौजूद सभी के पैरों को थिरकने के लिए मजबूर कर दिया था।उस थाप पर राजा खरगोश और सोनू हिरण का नृत्य देख सभी ने दांतों तले उँगली दबा ली थी।

"अरे! भाई राजा और सोनू तुम इतना सुंदर नृत्य करते हो, हमें तो पता ही नहीं था।" डपी मोरनी अपनी आंखों को गोल घुमाते हुए बोली। हरियल तोता नानू कबूतर को समझा ते हुए बोला, "यह विवाह अनोखा इसलिए है, क्योंकि दोनों ने जंगल के बीचो-बीच लगे बड़ पीपल, नीम, जामुन, और आंवले के वृक्ष के चारों ओर परिक्रमा करके अपना जीवन आरंभ करने का निर्णय लिया है।"

आज से पहले जंगल में ऐसा कभी नहीं हुआ था, लेकिन राम-सीता ने धड़ा-धड़ कट रहे वृक्षों की रक्षा खातिर यह निर्णय लिया था। साथ ही यह संदेश भी सभी को सुना दिया था, कि "यह पांचों वृक्ष अब हर सुख दुख में हमारे साथी हैं, अब यह हमारे परिवार का हिस्सा है। हम आजीवन इनका ध्यान रखेंगे।"

उनकी अनोखी सोच की सभी प्रशंसा कर रहे थे। राम का व्यवहार सभी से बहुत अच्छा था। वह सदा सबकी मदद करता था, इसी से उसके दोस्तों की गिनती भी बहुत ज्यादा थी। उसने अपनी शादी में सभी को बुलाया था, और सभी उसकी एक बुलावे पर सपरिवार विवाह में शामिल होने आए थे। उनका विवाह खूब धूम-धाम से चल रहा था।

सब आनंद मग्न हो उन्हें पांचों पेड़ों की परिक्रमा कर नये जीवन की शुरुआत करते देख रहे थे कि अचानक तेजी से बचते सायरन को अपनी ओर आते देख सभी एकदम सुट्ट हो गए। वहां कोलाहल एकदम गायब हो गया। राज-दरबार की गाड़ी विवाह मन्डप के पास आकर रुक गई थी, पर सायरन अभी भी बज रहा था। सब टकटकी लगाए गाड़ी को देख ही रहे थे, कि उसमें से महामंत्री चालू भेड़िये के पीछे ही जंगल के राजा शेर सिंह को उतरते देख सबके दिल की धड़कन इतनी तेजी से बढ़ गई थी, कि उन्हें आपस में एक दूसरे की धड़कन की आवाज सुनाई दे रही थी। जंगल में जब भी किसी की शादी होती, तो बुलावा तो सभी का शेर सिंह के दरबार में जाता था, लेकिन वे आज से पहले कभी किसी शादी में नहीं आए थे।

आज अचानक उनका आना कोई समझ ही नहीं पा रहा था, कि आखिर वे यहाँ क्यों आए हैं। आते ही शेर सिंह की दहाड़ ने माहौल को एकदम पलट दिया था। "अनोखी शादी.......अनोखी शादी.. ... लो और आओ, मैंने तो पहले ही कहा था, मत चलो लेकिन खुद तो आई जो आई अपने साथ अड़ोसी-पड़ोसी को भी ले आई , मैंने कितना मना किया था, अब ना जाने हमारे साथ क्या होगा।" कह डबलू हिरण, लालू हिरणी को चुपके-चुपके कोहनी मारते हुए, आंखें दिखा रहा था। शेर सिंह धीरे-धीरे चल सीधे राम और सीता के पास पहुँचते ही गंभीर आवाजमे में बोले "मैं जानता हूँ आप सभी मेरे यहाँ

आने से हैरान हैं, मैं तो क्या मेरी कोई भी पीढ़ी आज तक जंगल की किसी भी शादी में नहीं आये ।

"पर आज मुझे आना पड़ा।" शेर सिंह शांत हो इधर-उधर देखने लगे। सब के मन में एक ही बात चल रही थी, इस नए नियम के कारण राम व सीता के साथ हम सब को भी आज सजा भुगतनी पड़ेगी।

तभी शेर सिंह ने महामंत्री चालू भेड़िए को इशारा कर कागजों का एक बंडल मंगवाया और सबको एक-एक कागज बांटने को कहा। बंडल को देख सभी समझ गए कि इसमें सभी के नाम के साथ-साथ सजा मुकर्रर की गई है। सब कांपते हाथों से पर्चा लेते जा रहे थे, किसी की आँखें पनीली हो गई थी, तो किसी को पर्चा हाथ में लेते ही चक्कर आने लगे थे।

सब उस पर्ची को लेकर सुन्न से बैठ गए, लेकिन पढ़ा किसी ने भी नहीं कि उसमें क्या लिखा है। अब तक तो राम और सीता का भी मुँह उतर गया था, कि हमारी वजह से यह सब भी मुसीबत में पड़ गए, दोनों एक दूसरे को देख अपने निर्णय पर दुखी होने लगे। "अरे भाई! इसमें दुखी होने वाली क्या बात है, आप पर्चा पढ़ें तो सही, मैं यहाँ इस अनोखी शादी के लिए राम और सीता को सम्मानित करने आया हूँ।"

"साथ ही आप सभी को भी लिखित में यह शपथ दिलाने आया हूँ कि सब अपने अपने पाँच पेड़ों की परिक्रमा कर ही विवाह करेंगे, व आजीवन उनकी रक्षा करने का प्रण लेंगे, तभी उन्हें विवाह की आज्ञा मिलेगी।" इतना कहते ही शेर सिंह दहाड़ लगाकर हँसते हुए फिर बोले "इस तरीके से हमारे जंगल भी सुरक्षित रहेंगे, पर्यावरण संतुलन भी बना रहेगा, और कोई भी बाहर का प्राणी हमारे जंगल को काटने की हिम्मत नहीं करेगा, सब चैन का जीवन जी सकेंगे।"

शेर सिंह की ऐसी दहाड़ती की हुई हँसी जंगल वालों ने शायद पहली बार सुनी थी। थोड़ी देर बाद राम और सीता का अनोखा विवाह फिर प्रारंभ हुआ, राम और सीता की परिक्रमा पूरी होते ही, माहौल खुशनुमा हो गया। सब खुशी के आलम में इस कदर डूब गए कि शेर सिंह के पंजे पकड़ उसे भी अपने साथ नचाने लगे।


**अनीता गंगाधर शर्मा**
**'अजमेर राजस्थान'**
**'फोन नं 9462329731'**


# महेन्द्र की ग़ज़लें

मैं लड़ूं किसकी तरफ़ से इतनी हक़दारी मुझे।
हर क़बीला सौंपना चाहता है सरदारी मुझे।।
मैं बदलने की करूं ख़्वाहिश ज़रा सी भी अगर।
चैन से रहने कहां देती है ख़ुद्दारी मुझे।।
मैं किसी की चाह में डूबा हुआ समझा नहीं।
एक दिन ले डूबेगी उसकी तरफ़दारी मुझे।।
वक़्त, क़िस्मत बेवसी झुंझला रहा धृतराष्ट्र भी।
बांध कर पट्टी लगी संतुष्ट गंधारी मुझे।।
मैं ग़ज़ल का शुक्रिया वर्षों अदा करता रहूं।
हां इसी ने हैसियत दी और दमदारी मुझे।।
शेर अच्छा है, मगर कुछ तो सलीक़े से पढ़ो।
मंच पर अच्छी नहीं लगती अदाकारी मुझे।।
मैं फ़क़त शायर समुन्दर पार कितना नाम है।
यार रूसबा मत करो यूं कहके ज़रदारी मुझे।।

(2)

चले जब से अंधेरों में उजाले ही नहीं आये।
ग़नीमत ये रही पांवों में छाले ही नहीं आये।।
निज़ामत बेअसर है या हैं कारिन्दे करिश्माई।
उन्होंने रोटियां भेजीं निवाले ही नहीं आये।
लड़ाई सरहदों पर यूं लड़ी सीने अड़ाकर भी।।
मुक़ाबिल तोप के हम को तो भाले ही नहीं आये।
मोहल्ले में किसी से आस क्या करते ग़रीबी में।।
नहीं आये भतीजे, भाई, साले ही नहीं आये।।
कभी थे सबसे आगे हम पिछड़ते ही गये अब तो।
नये ढ़ब ज़िन्दगी को ये निराले ही नहीं आये।।


**डॉ महेन्द्र अग्रवाल**
**शिवपुरी म प्र**
**मो 9425766485**

कहानी

# आह !स्टेट्स वाह! स्टेट्स

आज दुल्हन की भांति घर आंगन सजा है। रोशनी की जगमगाहट और सजावट मेरे घर जैसी कहीं नहीं। अहा ! कितनी खुशी की बात है, दूर अपने घर के बरामदे से देख हिंदा बड़ी खुश हो रही थी । चारों ओर की रोशनी देख मन हर्षित हो गया । काश हर दिन ऐसी ही ज्योति जगमगा कर रंगीन कर दे जीवन को । आज अमावस्या की काली रात भी रोशन हो गई । आतिशबाजियों की आवाज एक अलग रौनक लिए है । आसमां में जाकर में पटाखे कैसे रंग बिखेर देते हैं,एक जोर की गड़गड़ाहट के साथ। नज़ारे को देखते हुए मन में सोचते-सोचते कहने लगी कि क्या मेरे घर पर पटाखे आएंगे।

अभी निशांत को फोन कर देती हूं कि आते वक्त कम से कम बीस हजार के पटाखे तो लेते आए ।१० /२० हजार के पटाखे होते ही कितने से।आतिशबाजी का आनंद लेना साल में एक बार जरूरी है । दिवाली पूजन के बाद बिना पटाखे तो कोई रोचकता न रहेगी । हिंदा मन ही मन में सोचते हुए अपने मोबाइल को उठा निशांत को फोन करने लगी ।

हैलो निशांत हेलो! हेलो ! सुनो आते वक्त कुछ आतिशबाजी हेतु पटाखे फुलझड़ियां लेते आना ।

लेकिन

क्या, लेकिन दिवाली में इन सब की क्या जरूरत है । पटाखों का बेकार खर्चा । नुकसान ही होने वाला है पैसे का पर्यावरण का ।

हिंदा : तुम बेकार की बातों पर ध्यान ना दो ।ये बेकार का भी ज्ञान ना दो।

निशांत : ज़रा सोचो तुम ज़िद्द न करो ।

हिंदाः मुझे शर्मिंदा ना करो यहां आस पड़ोस में रहने वाले सभी लोगों ने दो /तीन कार्टून पटाखे को लेकर आए हैं और मैं दस - बीस हजार के पटाखे न ले सकती । मेरी तो बेइज्जती होगी । मैं कुछ सुनना नहीं चाहती ।

निशांत : तुम समझती क्यों नहीं इसमें किसी की बराबरी क्यों ?

हिंदा : मेरी बेइज्जती करवाने की कोशिश ना करो ।

शाम को आते वक्त पटाखे लेते आना इतना कहते हैं उसने फोन काट दिया । निशांत असमंजस्य में था कि अपनी पत्नी को कैसे समझाए । दूसरों को देखकर वो खुद को बराबरी की हौड में आत्म चिंतन को समाप्त कर रही है । पटाखे तो मुझे लेकर ही जाने होंगे वरना उसकी नाराजगी त्योहार के दिन भी हावी हो जाएगी ।इधर हिंदा के हृदय में जमकर द्वंद्वचल रहा था । निशांत को पैसे की फिजूलखर्ची लगती है । प्रदूषण की चिंता दिखती है । लाखों लोग पटाखे और आतिशबाजियों का जश्न मनाएंगे मुझ अकेली के पटाखे चलाने पर पाबंदी । हाय ! ये किस्मत। मेरे स्टेट्स की परवाह नहीं उसे जरा भी । मेरे आस पड़ोस में मेरा स्टेट्स पानी -पानी हो जाएगा। अभी तो इस बात की भी खबर नहीं कि पड़ोसन सरिता कोने रंग की और कितने हज़ार की साड़ी पहनने वाली है । मेरी इस चिंता का समाधान नहीं है । किस से पूछकर पता लगाऊं।

तभी उसके मन में कामवाली बाई का ख्याल आता है । कामवाली बर्तन की सफाई कर रही थी,हिंदा ने उसे बुलाकर कहा कि जाओ और देखकर आओ इस पड़ोसन सरिता ने कोनसे रंग की साड़ी पहनी है ।हिंदा ने जैसे ही कहा निशांत का घर में कदम रखना हुआ । निशांत को बहुत खराब लगा और उसने कहा तुम्हें क्या करना कोन क्या करता, क्या पहनता है ?इस तरह के काम अच्छे नहीं हैं, हिंदा।

कामवाली के सामने ही निशांत ने कहा दिया । हिंदा गुस्से से आग बबूला हो गई ।अपनी पैनी निगाहों से निशांत को घूरने लगी । निशांत समझ गया कि अब सातवें आसमान पर दिमाग पहुंच चुका है । बात को पलटते हुए उसने कहा पटाखे पूरे बीस हजार के लाया हूं। देख लो जरा, तुम भी । काफी वजन हो गया था पटाखों का २२.कहते कहते रूक गया । हिंदा ने आवेश में कहा क्या जताना चाहते हो तुम मुझे। एक तो मेरी बेवजह बेज्जती की कामवाली बाई के सामने तुमने ।निशांत ने कहा तुम गलत समझ रही हो हिंदा ।तुम जो कर रही थी गलत कर रही थी । खूब समझती हूं पटाखे मांगवाए तो उसकी नाराजगी अब यूं निकाली । निशांत किसी के घर की जांच पड़ताल करना ग़लत है । तुम अपने में खुश क्यों नहीं रहती ।सब कुछ तो है पास तुम्हारे ।

हिंदा : तुम नहीं जानते कि स्टेट्स क्या होता । कोई ये न कहें मेरे पास कोई कमी है।ये सब दिखावें बाजी छोड़ क्यों नहीं देती तुम । अपने आप में खुश रहना सीखो । इस तरह लोगों की बराबरी करके तुम खुद की आत्मा को समाप्त कर रही हो । तुम जिस खुशी की तलाश में सब करती हो दरअसल वो तुम्हारी कमजोरी है, अवगुण है जो जीवन में तुम्हें कभी खुश नहीं रहने देगा । हिंदा नजरें जमीन गड़ा कर सब सुन रही **थी ।** निशांत बोलकर जैसे ही चुप हुआ । हिंदा ने निशांत की निगाह में देखकर कहा मैं अकेली ही ऐसा थोड़ी करती हूं सभी करते हैं बराबरी । इतने बड़े अफसर की पत्नी को स्टेट्स देखना ही पड़ेगा ।निशांत ने कहा स्टेट्स और ख्याति कपड़ों, गहनों और शानो - शौकत से नहीं होती ।स्टेट्स तुम मेरे साथ कदम मिलाकर खड़ी होकर बनाओ । आखिरकार मुझे भी लगे एक अफसर की पत्नी हो तुम ।

**हमेलता गोलछा, गुवाहाटी**

# अद्भुत मिलन

सेवानिवृत्त रामाधार जी का साधारण सा परिवार था जिसमें पत्नी जानकी,पुत्र राजे और पुत्री रोज़ी। राजे एम.बी.ए.करके नौकरी की तलाश भर हैं, और एक बढ़िया कंपनी में नौकरी लग गई घर में बहुत ही खुशी का माहौल बन गया। माँ जानकी कहने लगी कि कोई अच्छी सी लड़की और मिल जाए तो राजे की शादी और हो जाये, सुनते ही सब मुस्कुरा उठे। राजे का पहला दिन, जहाँ ऑफिस काफी बड़ा था। जब वह दूसरे दिन गया तो फर्नीचर वाला वर्ग उसे दे दिया गया। ऑफिस में पहचान भी बढ़ती गई। बाबूजी की बात को उसने गाँठ बाँध ली थी,वे कहते हैं,"बेटा हमेशा अपना काम सच्चाई से करना,कंपनी तुम्हारे अच्छे काम के लिए पैसा देती है।" जब वह अपने काम में व्यस्त था तभी एक युवा महिला आयी, उन्हें उसने इससे पहले कभी नहीं देखा था।वे सीधे राजे के चेम्बर में आईं और बोली,"आज का आर्डर पूरा कर दिया मि.राजे?मैं जया हूँ , अग्रवाल सर की पर्सनल सेकेट्री "। जिस कंपनी में आप कार्यरत है वे उसके मालिक हैं अग्रवाल जी।

राजे ने आँख उठाकर जब उनकी तरफ देखा , तो देखता ही रह गया। ।वे बहुत ही खूबसूरत महिला थी, उनका आकर्षक व्यक्तित्व और सुंदर नेत्रों में वह ऐसा खो गया कि देखता ही रह गया। उन्होंने कोई बढ़िया सा परफ्यूम लगा रखा था जिससे एक मन को खींचने वाली खुशबू चारों तरफ व्याप्त हो गई थी। वे पुनः बोल,"मि.राजे आप क्या सोच रहे हैं ?आज का आर्डर पूरा कर दिया आपने ? जी हाँ, जी हाँ पूरा हो गया।"।अभी भी खुशबू से सारा चेम्बर महक रहा था।समय बीतता गया।

आज सबेरे बहुत जल्दी तैयार हो गया खूब देर तक नहाया,माँ ने खटकाया भी कि बाथरूम में सो गया क्या? कंघी गीले बालों में ही की क्योंकि बाल फिर सेट हो जाते हैं। समय बीतता गया आज जब अ,फिस पहुँचा तो,सामने जया जी खड़ी थी,बोली मि. राजे सर अग्रवाल जी आपसे बहुत खुश हैं। आपने सब पर जादू सा कर दिया है ।अग्रवाल सर कह रहे थे जैसा हम चाहते थे वैसा व्यक्ति मिल् गया। राजे -"आप मेरी तरफ से सर को धन्यवाद दे दीजिएगा। मुझे भी सभी अपने से लग रहे है।।जया जी रोजाना अग्रवाल जी के साथ राउंड पर निकलती थी।रोज सुबह- शाम उनका मुख देख लेता था और मानो मेरा तो दिन ही बन जाता था।कुछ लोग होते ही ऐसे हैं।धीरे -धीरे ना जाने कुछ- कुछ हो रहा था।जया जी का धीरे से मुस्कुराना घायल कर जाता था। सुना है,जब एक बार आदमी प्यार खोज लेता है तो भीतर ही भीतर उसकी अनुभूति होने लगती है और उसकी अस्फुट झलक भी दिखने लगती है।प्रेम की अद्वितीयता और उसके महत्व का एहसास होने लगता है।मैं अपने चेम्बर में आ गया और सोचने लगा कि अभी जुम्मे- जुम्मे नौकरी में आये चार दिन हुए हैं और ये उसे क्या हो रहा है।वक्त की प्रतीक्षा करनी चाहिए। प्रेम के मुख्य तत्त्व हैं-आलाप मिलाप और आवेग।अभी तो गाड़ी आलाप पर भी नहीं आई।

अरे ये में क्या सोच रहा हूँ।यह तो मेरे मन की सोच है। प्यार के मामले में कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि जो भाव हमारे मन में हैं वही भाव उनके भीतर भी उठ रहे हों जिसे हमने अपना प्रेम बिन्दु माना है।दअनेक बार कुछ कहना चाहते हैं पर कह नहीं पाते। कभी एकांत मिलता ही नहीं।हर वक्त यही आभास होता है कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा। जया जी को जब भी मैंने देखा तो कुछ लगता तो है कि उनकी चितवन भी मुझ में अपने प्रीतम को खोज रही हैं।मुझे ऐसा क्यों लगता है जैसे वे मुझसे कुछ कहना चाह रही हैं।

आज जब वे राउंड पर आईं तो उनके चेहरे पर एक विचित्र सा भाव नजर आया।मन किया कुछ कहूँ,कुछ पूछूं बस उनकी आवाज ही सुन लूँ। जया जी का मदभरी निगाहों से हमारी तरफ यूँ देखना,मैं तो पानी- पानी हो गया। मुझे लगा कि ये हवा की मरमरी चाल, ये क्यारियों के फूलों की ताजी महक, ये डालियों का झुकाव,सब कुछ मेरी ओर इंगित हो रहा है।एक फुरफुरी सी होने लगी। कानों के पर्दों में सुरसुरी जैसे दिशाऐं कह रही हों पागल तू कब समझेगा। "कुछ तो समझ ऐ भोले सनम" दोनों तरफ प्यार उमड़ रहा है। जया जी को भी लगता है कुछ तो हुआ है।वह शान्त सा व्यक्तित्व मचलने लगा है। इससे पहले ऐसा उन्हें कभी नहीं हुआ ।बस तीन शब्दों में समाधान निकल आता।इतना ही तो कहना था ।हम क्यों नहीं कह पा रहें।

आज सबेरे से ही मुझे लग रहा था कुछ तो अच्छा होने को है।कभी -कभी मन में एक सुखद अनुभूति सी होती है ।अचानक जया जी चेम्बर में आईं और मैं उनकी तरफ भोंचक्का सा देखता रह गया

क्योंकि ऑफिस से संबंधित बातें तो सबेरे ही हो चुकी थी। वह सोचने लगा कहीं कुछ गड़बड़ी तो नहीं हो गई। जया जी को स्वयं आना पड़ा "राजे जी ब्रेक में मिलियेगा,आपसे मुझे कुछ काम है"। जया जी ब्रेक में आईं और मैं अपना टिफिन लेकर उनके पीछे -पीछे चल पड़ा। दिल धक- धक कर रहा था। वे ही बोल ,"राजे जी आपसे मुझे कुछ निजी बातें करनी हैं।"मैं सोच रहा था कि वे शायद मुझे विश्वास योग्य समझने लगी हैं।-राजे जी यह बताइये कि क्या आपकी शादी हो गई है? या आपको कोई पसंद है?

राजे -जी नहीं जया जी,माँ खोजती रहती हैं पर अभी तक खोज जारी है।" मैं भी अविवाहित हूँ। वे बोलीं,"मुझे घुमा फिरा कर बातें करना नहीं आता राजे जी,क्या आप मुझे अपनी जीवन संगिनी बनायेंगे? आप सोच रहे होंगे राजे जी कि आज मैं आपसे कैसी बातें कर रही हूँ। मैं आपको बहुत समय से देख रही हूँ आप एक अच्छे भले इंसान लगे। हाँ या ना जो भी हो मैं बुरा नहीं मानूंगी। पर अभी ऑफिस में किसी से भी चर्चा मत करिएगा। आप पर मुझे विश्वास है इसलिए बात की।"

राजे तो यह सुनने के लिए कब से बेचैन था।आज तो खुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था। घर जाकर अम्मा का हाथ जोरों से पकड़ बैठक में ले आया। अम्मा--अरे रे रे ..क्या हो गया रे, इतनी जल्दी प्रमोशन? राजे-"अरे प्रमोशन नहीं अम्मा, आज तो गजब हो गया। आप अब तैयारी कर लो बहू आने की," और पूरा किस्सा माँ को सुना डाला। राजे -अम्मा जया जी अपने घर आकर खुश तो रहेंगी ना? माँ--हाँ, शुरुआत में तो अनुशासन में रहना होगा, फिर तो आज़ादी है। अगले दिन राजे ने इशारे- इशारे में वह बात कह दी,जिसका इंतजार जया जी कर रही थी। विवाह तय हो गया। सब कुछ भलीभांति निपट गया। जया के घर के सभी लोग बेहद प्रसन्न थे। इधर राजे के घर के लोग तो खुशी से झूम रहे थे। घर में नववधू का प्रवेश हुआ,आस-पास की बूढ़ी बुजुर्ग महिलाओं ने रीतिरिवाज़ों के गीत गाना प्रारंभ कर दिए।

शाम होने को थी सारे रीतिरिवाज़ निपट चुके थे,उनको निभाते- निभाते जया थक कर चूर हो चुकी थी।सासू माँ ने कहा बहूरानी आज तुमको उपास करना पड़ेगा रात में भी फलाहार करना है।जैसे ही कमरे में से सब निकले जया ने तुरंत दो किलो की चुनरी उतार कर पलंग पर रख दी और अब वह वास्तव में बहुत हल्का महसूस कर रही थी।शीशे में अपना चेहरा निहारने लगी।नाक पर लगा सिंदूर पूरे गाल पर बुरी तरह फैल गया था।गर्मी के कारण और इतने भारी भरकम कपड़ों को पहनने के कारण काजल और सिंदूर का मिश्रण पूरा मुखड़ा "कालीमा "सा लग रहा था। कोई मायके में देखता तो कहता--"काली मॉ काली मॉ दीयासला ,भागो रे बच्चों भुतनी आई।" राजे की माँ ने कह रखा था जया बेटा ये टटका सिंदूर है इसे ना धोना होगा ना पोछना होगा। यह सिंदूर सुहाग का होता है,इसे धोना तो कभी नहीं चाहिए ,दूसरे दिन स्नान करते में भले ही धो लो।अपने फैले हुए बालों को ऊपर की तरफ कंघी करके द्वार पर खड़ी हो गई।सामने ही आम का वृक्ष था जिसपर बौर आ रहा था। मन किया,जाकर पेड़ के नीचे लेट जाऐं,बौर झरता रहे परंतु एकदम से ख्याल आया कि "जया तू ससुराल में है ।

मैं धड़ाम से पलंग पर जा गिरी।मैं सोच में पड़ गई कि जो इंसान मुझे देखने के लिए इतना व्यथित रहता था ।मुझे देखे बिना उसे चैन नहीं पड़ता था,आज उसके पते नहीं हैं। आज मैं उसके आगोश में खो जाने को तैयार हूँ मगर जनाव गायब हैं,अब तो डाँट भी नहीं सकती। जी और हाँजी ,सुनिये जी! बस यही कहना होगा।पता चला श्रीमान आगरे वाली बूआजी को स्टेशन छोड़ने गए हैं।थोड़ी देर तो बैठी रही पर थकान की वजह से नींद कब लग गई पता ही नहीं चला जैसे ही आँख लगी थी कि ननदोई जी गुनगुनाते जा रहे थे--मेरे सामने वाली खिड़की में एक चाँद का टुकड़ा रहता है"।वे ना जाने अब तक कितने गाने गा चुके थे।मन में खीज भी हो रही थी पर रिश्ता कुछ ऐसा था कि जबरदस्ती मुस्कुराना पड़ता था। ससुराल में थे वर्ना ऐसे लफूटों को कान के नीचे दो लफाड़े धर देते अब तक और फिर इसके बाद कभी हमारी तरफ देखता भी नहीं।ये ननदोई लोग कितने गए गुजरे होते हैं पर ससुराल में इतनी खातिर तबज्जो होती है कि ये सबकी खोपड़ी पर चढ़ जाते हैं।

वैसे दुल्हन का हँसना तो सख्त मना था ।अभी तक राजे लौटे नहीं थे।मैं दूध पीकर व सेब फल खाकर सोने की कोशिश कर रही थी तो समय देखा रात के ग्यारह बज चुके थे।सब रिश्तेदार सोने चले गए ।नीचे खिड़की से झाँका तो चाँदनी का मजा लेते हुए सब लोग खुले आकाश में सो गए थे,ना उढ़ैया की फिक्र ना बिछैया की फिक्र कुछ ने तो फर्श पर ही लोट लगा ली।

मुझे ना जाने कब नींद लग गई पता ही नहीं चला और जब नींद खुली तो देखा राजे की गोद में मेरा सिर था और वे धीरे- धीरे पंखा झल रहे थे।

जया--"अरे आप कब आये"?
राजे--बस थोड़ी देर हुई,आप जाग क्यों गईं?
जया--"अरे नींद खुल गई,आप सो जाइए ना!कितनी गर्मी है,पंखा झल देती हूँ"।यह कहते हुए मैंने राजे जी के हाथ से पंखा ले लिया।
राजे--"गर्मी बहुत है ,बाहर चलेंगी?"
जया--"अरे नहीं अम्मा गुस्सा करेंगी,यदि उन्हें मालूम पड़ा तो। राजे--"थोड़ी देर के लिए चलते हैं फिर आ जाऐंगे हम लोग पिछले दरवाजे से चलेंगे किसी को पता नहीं चलेगा।" जया तो यही चाहती थी,उसका बड़ा मन कर रहा था बाहर की हवा खाने का।जैसे ही बाहर निकली तो पायल बज उठी और चूड़ियाँ खनकने लगीं। तभी राजे ने जया को गोद में उठा लिया,अब पायल बजना बंद हो गया।राजे और जया के दिलों में धक-धक तो हो रही थी और साथ ही सुखद मिलन की घंटियाँ भी बज रही थी।

अगले ही पल दोनों आम के पेड़ के नीचे थे। हल्की-हल्की हवा के साथ आम का बौर मेरे मुख को मानो चूम रहा हो,राजे जी उन नन्हें फूलों को समेटने में अपना सौभाग्य समझ रहे थे। परंतु ननदोई जो अभी तक सोये नहीं थे आँखे खोल- खोल कर नयन सुख ले रहे थे,अभिनय ऐसा था कि गहरी नींद में हैं। अब थोड़ी आहट होना स्वाभाविक था और तभी... अम्मा जी -(खिड़की से झाँकते हुए)"अरे उठो जी,देखो ये दोनों बाहर क्या कर रहे हैं।गजब हो गया!!?वे जोर से आवाज लगाने ही वाल थी  कि ससुर जी ने उनके मुँह पर ऊंगली रख दी और चुप रहने का इशारा किया। चाँदनी प्रेम बरसा रही थी। पति -पत्नी के विविध रसमय कल्लोल को देखकर बाल बच्चों का स्वाभाविक सरल सुखद हास्य देखकर बोले", जानकी जी हमारे जीवन में रस नहीं था। रस था भी तो रस का आश्रय लेने के लिए हमारे चित्त में रस का नितान्त अभाव रहा यह तो आप मानती हैं ना? हमारी जीवन लता को प्रफुल्लित करने के लिए कभी प्यारा बसंत आया ही नहीं और हमारे हृदय की कलियों को खिलाने के लिए मलयानिल कभी बहा ही नहीं  ।जानकी, रामाधार जी के गले में बाँहें डालकर छाती से लग गईं। उस समय पर एक साथ कई दिल दूल्हा दुल्हन बन मिल रहे थे। आज बाबूजी और अम्मा जी दिव्यानंद में खो गए।

**डॉ रंजना शर्मा, भोपाल --**

## मूल्यहीन

कल की बातें
आज मत कहो
कल कहना ।

बातें क्या हैं
जमा खर्च दिन रातों का
लेखा जोखा
जीवन में शह मातों का
क्या खोया
क्या पाया भ्रम में
मत रहना ।

रिश्ते नाते
सबके अपने अपने तर्क
नई पीढ़ियाँ
पाल रही हैं मन में फर्क
किसे भुलाऊँ
और करूँ क्या याद
मुश्किल कहना ।

मूल्यहीन
सा संबंधों का बौनापन
बंद हुये सब
अपनेपन के वातायन
दुःख अपने
सहो मगर इनके आगे
मत झुकना ।
,,,,,

## हारता गांव

.....
नई इबारत
लिखने बैठा
आज हमारा गांव।
सड़कों पर
छल की महफिल
दफ्तर गुलजारी के
गली गली
स्थापित टपरे
पान सुपारी के
इधर सिमटता
उधर फैलता
फिरे उघारा गांव।
घर आंगन
सहमे सहमे से
दीवट देहरी द्वार
बूढ़ा छप्पर
गुपचुप सहता
मंहगाई की मार
मौन तोड़ता
द्वंद्वओढ़ता
लगे विचारा गांव।
राजनीति का
मोहरा बनकर
खोता अपनापन
जाति धर्म के
खेमों में बंट
लुटा रहा जीवन
कभी सियासत
कभी नियति से
पल पल हारा गांव।

**जयप्रकाश श्रीवास्तव**
**सैनिक सोसायटी**
**शक्तिनगर जबलपुर**
**मो.7869193927**

व्यंग्य

# प्यार तेरे कितने रूप

## बचपन का प्यार

हम दोनों साथ ही साथ स्कूल जाते, एक ही बैंच पर बैठते, साथ ही लंच करते और फिर साथ ही घर आ जाते। दोनों का घर पास पास ही था। दोनों के घरवालों में पारिवारिक संबंध था। दोनों की उम्र और कक्षा एक ही थी, और स्कूल में नामांकन भी एक ही साथ हुआ था तो एक साथ रहना स्वाभाविक ही था। दिन भर मैं उसके घर या फिर वो मेरे घर। समय बदला हम कुछ बड़े हुए, वो लड़कियों वाली कक्षा में और मैं लड़कों वाले कक्षा में दिन गुजारने लगे, मगर स्कूल आना और फिर स्कूल से जाना बना रहा। मगर समय था कि या फिर घरवाले ऐसे थे कि हमें अलग कर दिया। वो उसी स्कूल में रही और मैं उसके भाई के साथ दूसरे ब्वायज स्कूल में जाने लगा। अब हम पूरे दिन अलग रहने लगे, और एक दुसरे के घर आना जाना भी पहले से कुछ कम हो गया, शायद घरवालों को अब हमारा मिलना पचता नहीं था, तो हमने एक न्यूट्रल जगह और सेफ जगह की तलास कर ली। हम दोनों के परिवारों की एक काफी नजदीकी पड़ोसी थे, वो बुजुर्ग भी थे उन्हीं के घर हम एक दम समय से जाने लगे, उनके पास हम बैठते, उनके साथ हम खेलते, उनसे हम बातें करते, कभी कभी उनकी पुस्तकों को पलटते और उनसे अध्यात्मिक, दर्शन, शास्त्र और ज्ञान की बातें सुनते, बड़ा मजा आता। मगर हम ऐसा क्यूं करते थे, उस समय पता नहीं था। बस अच्छा लगता था। कभी कभी वह नहीं आती या फिर आने में देरी करती तो मन बेचैन हो उठता। उसके आते ही मन के फूल खिल उठते, जैसे ओस की एक बूंद फूल की पंखुड़ी से होते हुए अंतः स्थल में समा गई हो। मगर समय बड़ा ही कठोर होता है, उसमें हृदय नहीं होता।

उसने हमें एक बार फिर से दूर कर दिया, और वो भी आजीवन के लिए। मैं वहां से सात सौ किलोमीटर दूर भेज दिया गया, पढ़ने के लिए। यहां जानकारी के लिए बताते चलूं कि मैं उस समय सातवीं कक्षा की पढ़ाई कर रहा था और आठवीं में नए शहर के नए स्कूल में मेरा दाखिला करवाया गया। समय का काम तो बस चलाना है तो वह चल ही रहा है, कभी कभी हम ही ठहर जाते हैं तो कभी पीछे मुड़कर ताक लेते हैं, एक गाना उसके लिए गा लेते हैं...

जानू मेरी जानेमन
बचपन का प्यार मेरा भूल नहीं जाना रे
जैसा मेरा प्यार है , जान तुझे किया है
बचपन का प्यार मेरा भूल नहीं जाना रे

दूसरा प्यारा, दाखिला वाला प्यार था। उस प्यार की शुरुवात की कहानी भी मजेदार है। हुवा यूं कि मैं अपने दाखिले के लिए एंट्रेंस एग्जाम देने एक स्कूल में गया हुआ था। मैं जहां बैठा था, ठीक बगल में वो भी बैठी थी। मैंने उसे देखा उसने भी मुझे देखा और हो गया प्यार। धत्त! ऐसा कहीं होता होगा हमारे साथ ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। हम दोनों कौन हैं, कहां से आए हैं, किस कक्षा में नामांकन कराना है?

यह हम दोनों में से किसी ने भी नहीं पूछा। दोनों ने अपनी अपनी परीक्षा दी,और परिणाम के इंतजार में परिमाण का ध्यान किए बिना ही हम अपने घोंसले में आ गए। समय सबसे बड़ा खिलाड़ी है। वह हमसे खेलता है और तब तक खेलता है, जब तक हम हार ना जाएं। उसने अपना खेल शुरू कर दिया था और हम थे कि उससे अनजान थे। एक दिन सदद्द की धूप सेंकने के लिए, हम छत पर थे। हमारे साथ हमारे भाई भी थे, हम अपने में ही मशगूल थे कि एकाएक हमारी नजर ठीक सामने के छत पर उसी को देखा, जो हमारी तरफ ही देख रही थी और शायद पहचानने की कोशिश कर रही थी। हमने उसे देखा, झट से पहचान गए, चौंके और फिर बिना कुछ बोले, बिना कुछ सोचे, झट से छत से नीचे उतर गए।

उस दिन तो हम छत से नीचे उतर गए, किंतु अब रोज धूप में पढ़ने के बहाने छत पर जाने लगे। मगर सर्दी को हमसे गर्मी होने लगी, शायद उसे हमसे जलन होने लगा था, शायद वह भी उसका आशिक था। तभी तो उसने सूरज महाराज को रिश्वत देकर हमें नीचे भगा दिया, मगर हम भी जिद्दी थे, हमने भी छत पर जाने का समय शाम को चुना। तब तक सर्दी अपना रास्ता बदल चुका था, अब वह आड़े नहीं आता था। बिन बोला प्यार चार साल तक चला। हमनें बारहवीं पास की, और हमारे घर वाले, हमें

पढ़ने
के लिए बड़े शहर की पास थमा दी। दाखिला वाला प्यार, जीवन में बिना दाखिल हुए ही, घरवालों द्वारा बेदखल कर दिया गया।

तेरा मेरा एक होना नसीब नहीं,
साथ है, मगर आज करीब नह ।
हां! माना कि तुमसे बिछड़ना
किस्मत में पहले से ही लिखा था,
यकीन कर मेरा कि मैंने दूर से ही
तूझसे जी भरकर इश्क़ किया था।

मेरा कालेज वाला प्यार

बड़े शहर के एक अच्छे कॉलेज में मेरा दाखिला हो गया था। बड़ा ही मजा आ रहा था। कुछ दोस्त भी बन गए थे, उनमें सिर्फ लड़के ही थे। कक्षा रंगीनियत से भरी हुई थी, हर तरह के रंग थे यहां। कोई पढ़ाकू तो कोई आवारा, कोई माडर्न तो कोई बेचारा। लड़कों के साथ यहां लड़कियां भी पढ़ती थीं, मगर बैठने के लिए दोनों दो तरफ बैठते थे। उन्हें पहली बार तब देखा, जब वो कक्षा में प्रवेश करने के लिए प्रोफेसर सर से आज्ञा मांग रही थी,साथ ही कभी अपनी जुल्फों को तो कभी अपनी किताबों को सम्हाल रही थी। हमारे साथ पूरी कक्षा उसकी ओर आकर्षित हो गई। वह आई, जगह देखा और बैठ गई। हमारी तो ड्यूटी सी लग गई, रोजाना समय से आना और उसका इंतजार करना। वह आती, बिना किसी की ओर देखे सीधे अपनी जगह पर बैठ जाती। उसका ना देखना बड़ा ही अखरता, मगर खुशी इस बात की थी कि उसे रोजाना जी भरकर देख पा रहा था। हमें कभी कभी ऐसा लगता है कि कहीं मोहब्बतें फिल्म हम से इंस्पायर हो कर तो नहीं बनाया गया था, क्योंकि एकतरफा और अधूरे प्यार की कहानी पर फिल्मा गई यह फिल्म, ठीक एक साल बाद ही आई थी।

एक दिन क्लास में, सर एक सवाल सीखा रहे थे, मगर वो बार बार एक जगह आकर अटक जाते थे। जब वो उस गलती को पकड़ नहीं पाए तो उन्होंने हम सबसे कहा कि अगर किसी को मेरी गलती दिख रही हो तो यहां आकर बोर्ड पर दिखा दे, नहीं तो मैं कल बता दूंगा, आज के लिए अब बस। उसके बाद वो यह कह चले गए, मैने अपने दोस्तों के साथ मिलकर उस सवाल को हल कर लिया, हमें करते हुए शायद वह देख रही थी। इसीलिए उसने बिना कुछ बोले ही तुरंत अपनी कॉपी हमारी ओर बढ़ा दी। हमने भी कुछ बोला नहीं, सीधे सावल को उसकी कॉपी पर बनाया और उसे वापस पकड़ा दिया। अब आप सोच रहे होंगे कि मैं उसके साथ इतना रूखा व्यवहार क्यों किया?तो भाई साब मैंने जान बूझकर कोई रूखा व्यवहार नहीं किया था, सच कहूं तो उसके एक्शन का यह रिएक्शन था, उस समय मैं नर्वस नाइंटी का शिकार हो गया था। मेरे तो पसीने छूट गए थे। किसी तरह उससे उस समय पीछा छुड़ाना था। कभी कभी हद से ज्यादा खुशियां भी इंसान बर्दास्त नहीं कर पाता। मैं ये भागा वो भागा, और सीधे ग्राउंड में आकर घास पर बैठ गया। काफी देर तक बैठा रहा, कभी हंसता, कभी चुप हो जाता तो कभी अपने से ही बड़बड़ाता। उस समय कुछ पागल सा हो गया था। पागलपन का दौरा अभी कुछ और देर तक चलाता,अगर मेरे दो खास मित्रों ने आकर मुझे टोका नहीं होता। वो मेरी नजर में तो थी ही, उस दिन के बाद से मैं भी उसकी नजरों में आ गया। रोजाना नजरों से बाते होती।

आँखें खुली हो या हो बंद
दीदार उनका होता है,
कैसे कहूँ मैं ओ यारा
ये प्यार कैसे होता है।

इस बार हमने दिल से ठान लिया था कि हर बार की तरह अब अपने प्यार को पा कर ही रहूंगा। इसके लिए मेरे दोनों दोस्तों ने प्रोत्साहित किया और साथ भी दिया। हम तीनों ने यह तय किया कि पहले उसके घर का पता लगाया जाए, मगर कैसे?तभी एक ने कहा, 'उसकी गाड़ी का पीछा करते हैं।' हम तैयार हो गए। एक साइकिल पर हम तीन लोग और वो मोटरकार में थी। पीछा शुरू हुआ और तुरंत खत्म भी हो गया, क्योंकि कार चालू हुई, आगे बढ़ी और एक मोड़ पर जाकर गायब हो गई। हम निराश हो गए, मगर एक मित्र ने कहा, 'इसमें निराश होने कोई बात नहीं है, हम कल इस मोड़ पर आकर पहले से ही खड़े होंगे और उसकी गाड़ी जैसे ही आएगी हम उसके पीछे लग जायेंगे।' दूसरे दिन भी वही

हुआ,गाड़ी मोड़ से मुड़ी, कुछ दूर तक दिखती रही, फिर दूसरे मोड़ पर गायब हो गई।

तीसरे दिन हम दूसरे मोड़ पर खड़े हो गए, फिर चौथे दिन, पांचवे दिन.... इस तरह सत्रह दिन के कठिन परिश्रम के बाद उसके घर का पता चल ही गया। अब सबसे बड़ा सवाल यह था कि अब क्या करें? जिसका जवाब हममें से किसी के पास नहीं था तो वापस अपने अपने डेरे के कमरे में आ गए। हम आज तक यह समझ नहीं पाए कि हमने इतनी मेहनत क्यूं की थी, जब उसके घर के पास कभी जाना ही नहीं था। रोजाना एक दूसरे को देखना, आंखों से बाते करना, क्लास में जाना, पढ़ना और फिर वापस अपने अपने घोंसले में वापस जाना, यही दिनचर्या थी। हां! एक बार उसने हमें बधाई देने के लिए तब बोला था, जब मैं फर्स्ट क्लास फर्स्ट से पास हुआ था। उसके बोल थे, 'बधाई हो'।

पूरे तीन साल बीत गए, हम तो ग्रेजुएट हो गए, मगर हमारा प्यार बिना ग्रेच्युटी के ही रह गया। फिर से यायावर वाली जिंदगी जीने के लिए अन्य शहर की ओर निकल गए।

खिज़ा के फूल पे आती कभी बहार नहीं ,
मेरे नसीब में ऐ दोस्त, तेरा प्यार नहीं ...
तेरी क़सम है मेरा को , ऐतबार नहीं
मेरे नसीब में ऐ दोस्त, तेरा प्यार नहीं ...

एक बार फिर बचपन वाला प्यार...

हम वापस अपने पुराने शहर में आ गए, वापस अपने उसी मुहल्ले में आ गए, जहां कभी हमारा बचपन गुजरा था। पूरे सात साल बाद आना हुआ था। सात सालों में बहुत कुछ बदल चुका था। जो कभी किशोर थे,पूरी तरह जवान हो चुके थे। सड़कें तो वैसी ही थीं, मगर नए मकान हो चुके थे। कभी जहां हम पले थे,वो अब विरान हो चुके थे। कुछ बुजुर्गों को छोड़ा था, आज वो शमशान हो चुके थे। मासूमियत यहीं रह गई थी, अब हम बेईमान हो चुके थे।कभी रिश्ते बहते थे हमसे आज बस सामान चुके थे। ऊंची डिग्री लेनी थी, तो ऊंचे विश्वविद्यालय की ओर मेरे कदम बढ़ चले थे। परंतु उसकी घर की ओर आकर्षित हुए बिना ना रह सका। घर के दरवाजे मुझे अब पहचानते नहीं थे। घर तो वही था, मगर बूढ़ा हो चला था, शायद इसीलिए वह भी पहचान नहीं पाया। मेरा नामांकन ऊंची पढ़ाई के लिए हो गया। रोजाना तो कोई जाना नहीं था, तो घर पर ही पड़ा रहता, कुछ पढ़ता तो कुछ खालीपन की वजह से दिनोदिन सड़ता। आखिर क्या करता ?कुछ परिचित थे, तो दो दिन में ही उनसे मिल आया। बचपन के कुछ स्कूली दोस्त थे, तो वे स्कूल तक ही सीमित थे अतः उनसे मिलने का कोई जरिया नही था। मुहल्ले के कई दोस्त मेरी तरह यायावर बन चुके थे, तो कुछ अपने खानदानी व्यवसाय में आ चुके थे, जिनकी अपनी नई जिंदगी बन चुकी थी, जिसमें मेरे लिए अब कोई स्थान खाली नहीं था।

वापसी के समय बड़े सपने संजोए थे, वो चकनाचूर हो चुके थे। ना वो मिली ना कोई और मिला। बस खालीपन था। तो उसे भरने के लिए मैंने एक जगह नौकरी कर ली। पैसे तो कम थे, मगर चैन था। अब रोज का समय से आना जाना चालू हो गया। सुबह नौ बजे निकलना शाम को सात बजे आना, और फिर अपनी पढ़ाई । अब सारी पुरानी बातें दिमाग से निकलने लगी थी, अंतर्मन में अब एक नया सवेरा होने लगा था, कि एक दिन ऑफिस जाने के लिए जैसे ही निकला, वो भी अपने घर से निकली। उसके दरवाजे पर एक गाड़ी खड़ी थी, शायद वो कहीं जा रही थी। गोद में उसके दो ढाई साल का एक बच्चा था। माँग में सिंदूर गले में मंगलसूत्र देख मैं सारी बातें भली प्रकार से समझ गया। मुझे देख वो काफी खुश हुई और बोली, 'कब आए?', 'आना तो था ही तो आ गया, अच्छा बाद में बात करेंगे, अभी थोड़ा जल्दी में हूं।' यह कह मैं झट से निकल गया। उसके बाद से आज तक, मैंने उसे नहीं देखा।

चिगारी कोई भड़के, तो सावन उसे बुझाये
सावन जो अगन लगाये, उसे कौन बुझाये
हो ओ उसे कौन बुझाये...
पतझड़ जो बाग़ उजाड़े......,

5. एक बार फिर से प्यार हो गया...

हम अब जिंदगी में आगे निकल चुके थे, बस काम काम काम और बस काम। प्यार व्यार मजाकिया शब्द जान पड़ते थे। हां कभी कभार छः महीने साल भर में किसी बात पर दिल में एक हूक सी उठती, मन बोझिल होता और फिर अपने आप सब गायब। इस दौरान प्रोफेसनल लाइफ में कितनी लड़कियां आईं कितनी गईं, उनका कोई प्रभाव मेरी जिंदगी में नहीं पड़ा और ना ही यहां उनके बारे में कोई चर्चा करने [illegible]

एक दिन की बात है, मुझे मेरे भाई के द्वारा एक लड़की की फोटो दिखाई गई। बड़ी ही खूबसूरत थी, जो मेरी मां की पसंद थी। वैसे तो विवाह पहले से ही तय था, बस वह फोटो मेरे भाईबहनों द्वारा मजे लेने के लिए दिखाया गया था, जो एक बार फिर से मेरे हृदय पटल की सुखी धरती पर फूल खिलाने के लिए काफी था। एक बार फिर से मैं खुले आसमान में उड़ने लगा था, क्योंकि एक बार फिर से मुझे प्यार हो गया था।

मेरे सपनो की रानी कब आएगी तू
ओ रुत मस्तानी कब आयेगी तू

यह उन्हीं दिनों की बात जब, अभिषेक बच्चन और ऐश्वर्या राय के विवाह की चर्चा हो रही थी और उसी समय शाहिद कपूर और अमृता राव अभिनीत विवाह नामक एक फिल्म आई थी। इस फिल्म की कहानी सगाई से लेकर विवाह तक की थी, और वही कहानी हमारी भी थी।

दो अनजाने अजनबी
चले बांधने बंधन

वो दिन आ ही गया, जब हम अपने दिल को साथ लिए विजयी   हुए। आखिकार हमने अपने स्वप्न सुंदरी को पा ही लिया, उसे अपना बना ही लिया। प्रत्यक्ष तौर पर वो परी अब हमारे सामने थी, और मैं यह गीत गुनगुना रहा था...

मेरे दिल में आज क्या है, तू कहे तो मैं बता दूँ
तेरी जुल्फ़ फिर सवारूँ,
तेरी मांग फिर सजा दूँ
मेरे दिल में आज...

**अश्विनी राय 'अरुण'**
**बक्सर बिहार**

## मौत जब मुस्कुराने लगी

सामने मौत जब मुस्कुराने लगी।
हर वसंती घड़ी याद आने लगी।

कब बचा काल से जो जनम ले लिया,
पग धरा पर पड़े तब सफर तय किया,
हर कली की हँसी भी रुलाने लगी।

याद आई बचपना, जवानी, जरा,
बात चलने की जब मौत बोली खरा,
हर रिश्तों की सुधियाँ सताने लगी।

हर अंग काम करना किया बन्द जब,
क्या मैं करता पटकता रहा सिर तब,
फ़िर विवश जिन्दगी हड़बड़ाने लगी।

चाँद-तारे दहकते से शोले लगे,
टिमटिमाहट जहाँ की भी गोले लगे,
बोझ-सीअपनी काया सताने लगी।

प्रेम-नफरत यहाँ कुछ बचा ही नहीं ,
यहाँ पक्का तो कुछ भी रचा ही नहीं ,
यह दुनिया तो आँखें चुराने लगी।

**उमेश कुमार पाठक "रवि"**
**बक्सर, बिहार**

**गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव एवं सम्मान समारोह 2022 में आये सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है।**
**कान्ति शुक्ला प्रधान संपादक साहित्य सरोज**

**साहित्य सरोज पत्रिका से जुड़ कर अपने क्षेत्र के प्रभारी बनने हेतु हमें अपना परिचय ईमेल करें**

लेख

# भारतीय सिनेमा अब तक

लूमियर ब्रदर्स, एक फ्रेचं आविष्कारक, प्रथम अन्वेषक, फोटोग्राफिक उपकरण के अग्रणी निर्माता, जिन्होंने एक प्रारंभिक कैमरा और प्रक्षेपण तैयार किया जिसे सिनेमैटोग्राफ कहते हैं स सिनेमा की उत्पत्ति सिनेमैटोग्राफ से हुई ।**22** मार्च, **1895** को लूमियर ब्रदर्स ने अपनी डेब्यू /पहली शार्ट फ़िल्म ॅorkers Leaving the Lumière Factory" प्रदर्शित की और दुनियाँ बदल दी स इस फ़िल्म को व्यापक रूप से बड़े पैमाने पर दर्शकों के लिये चलचित्र का आविष्कार माना गया।
आप इस लिंक में ॅorkers Leaving the Lumière Factory" को देख सकते हैं
https://youtu.be/DEQeIRLxaM4

**1895** में , लूईस और अगस्त लूमियर ने बड़े पर्दे को जन्म दिया स **10** दर्शकों के लिए इस लघु फ़िल्म की निजी स्क्रीनिंग की गई। लूमियर ब्रदर्स की 50 second की फ़िल्म अराइवल आफ ए ट्रेन (Arrival of a Train) की अपार सफ़लता और दर्शक वर्ग की प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखते हुये इस फ़िल्म को नावेलटी थिएटर में इस बार निम्न और रईस वर्गों दोनों के लिये आकर्षक टिकट दरें रक्खी गई स इतना ही नहीं अपरिवर्तनवादी/रूढ़िवादी महिलाओं के लिये, एक अलग महिला शो भी चलाया गया उस समय स आपको ज्ञात हो कि उस समय चार आने की सबसे सस्ती सीट थी।साहब यही चवन्नी का सिनेमा दर, सिनेमा के कलाकार/सितारे , सिनेमा निर्देशक ही दरअसल भारत के सिनेमा उद्योग ब्लकि यूँ कहें तो व्यावसायिक सिनेमा उद्योग के भाग्य विधाता हैं ।

फ़िल्म की एक टोली ने कलकत्ता के स्टार थिएटर में सन1898 में प्रोफेसर स्टीवेंसन की एक शहर्ट फ़िल्म और साथ ही एक स्टेज शो " द फ्लावर अहफ पर्सिया (The flower of Persia)" का प्रदर्शन किया स हीरालाल सेन उस प्रोग्राम से प्रभावित हुये स उन्होंने प्रोफेसर स्टीवेंसन से कैमरा उधार लिया और प्रोफेसर स्टीवेंसन के साथ, संयुक्त निर्देशन में छोटे भाई मोतीलाल सेन की सहायता से फटाफ़ट फ़िल्म बना डाली और उसका नामकरण किया, डांसिंग सीन्स फ्राम " द फ्लावर अहफ पर्सिया" (Dancing Scenes fromÞ The Flower of Persia"). हीरालाल सेन को भारतीय उपमहाद्वीप का पहला फ़िल्म निर्माता कहा जाता है स हीरा लाल सेन का जन्म ढाका के करीब मानिकगंज, बांग्लादेश में हुआ था मगर बड़े कलकत्ता में हुये स लंदन की चार्ल्स अर्बन की वारविक ट्रेडींग कंपनी से उन्होंने एक अर्बन बाईस्कोप खरीदा और उसी साल अपने भाई के साथ रायल बाइस्कोप कंपनी का गठन किया।

उधर, 1899 में हैंगिंग गार्डन, बहम्बे में एक कुश्ती पर आधारित एच.एस. भटवाड़ेकर की "द रेसलर्स" भारत की पहली वृत्तचित्र फ़िल्म हुई स एच.एस. भटवाड़ेकर ('सावे दादा'), 1901 में भारतीय विषयवस्तु और न्यूज रीलों की शूटिंग करनी शुरू की स बस क्या था, भारतीय दर्शकों के वास्ते भारत में ही शूट की गई भारतीय न्यूज रीलों का भरपूर लाभ उठाया तमाम अमेरिकी और यूरोपीय कंपनियों ने ।

हिन्दू संत 'पुण्डलिक' पर आधारित एक नाटक का फ़िल्मांकन आर. जी. टोरणी ने आयातित फिल्म स्टहक, कैमरा और यंत्रों द्वारा किया जो १८ मई १६१२ को " कोरोनेशन सिनेमैटोग्राफ" बाम्बे में रीलिज हुई स पुण्डलिक (मराठी मूक फ़िल्म) भारत की पहली फुललेंथ फ़िल्म होते हुये भी मतानुसार यह भारत की प्रथम फ़िल्म कहलाने की अधिकारी नहीं है स इसके पुख़्ता कारण हैं कि पहले तो यह फ़िल्म पुण्डलिक एक मराठी नाटक का रिकहर्डिंग मात्र थी स इसका चलचित्रकार जाँनसन एक ब्रिटिश नागरिक था और इसकी प्रोसेसिंग लंदन में हुई थी। हाँ, **1913** में "राजा हरिश्चंद्र", मूक मराठी फ़िल्म, दादासाहेब फाल्के ने संस्कृत महाकाव्यों के तत्वों को आधार बनाकर निमार्ण किया स दादासाहेब फाल्के भारतीय फ़िल्म उद्योग के अगुआ थे और वे स्वयं भारतीय भाषाओं और संस्कृत के विद्वान भी थे स चूकिं उस काल में भारतीय महिलाएँ अभिनय में हिस्सा नहीं लिया करती थीं, इसलिये पुरुषों ने ही, महिलाओं का चरित्र निभाया था स यह फ़िल्म मिल का पत्थर साबित हुई स जिसका प्रदर्शन और रिलीज़ " कोरोनेशन सिनेमैटोग्राफ" में ३ मई, १६१३ किया गया स चूँकि इस फ़िल्म को व्यावसायिक सफ़लता मिली, सो इसने आगे भी कई फ़िल्मों के निर्माण का अवसर दिया स

उधर दक्षिण भारत में रंगास्वामी नटराज मुदालियर ने तमिल भाषा में "कीचक बधम" का निर्माण १६१६ में किया जो कि एक मूक फ़िल्म थी स अब भारत में १६३० तक तकरीबन २०० फ़िल्में बननी शुरू हो गई । भारत की पहली बोलती फ़िल्म "आलम आरा" साल १६३१ में अरदेशिर ईरानी (।rdeshir Irani ) द्वारा बनाई गई स जो कि बड़े पैमाने पर लोकप्रिय हुई स बस क्या था जल्द से जल्द ही बोलती फ़िल्मों का प्रचलन और निर्माण अपने चरम पर पहुंच गया स लेकिन फ़िल्में अभी भी स्वेत श्याम ही हुआ करती थीं।बाद के सालों का आलम यह रहा कि भारत में देश विभाजन, स्वतंत्रता संग्राम और कई ऐतिहासिक घटनायें घटती गईं स उस समय की बनाई गई हिन्दी फ़िल्मों पर समसामयिक प्रभाव छाया रहा अंततः फ़िल्मों को स्वेत श्याम से रंगीन होने का अवसर १६५० के दशक में मिला और फ़िल्मों का रंगीन निर्माण होने का दौर आया स मोती गिडवानी द्वारा निर्देशित भारत की पहली सीनेकलर (Cine Color) फ़िल्म "किसान कन्या" साल **1937** में बनी, जिसके निर्माता अरदेशिर ईरानी (Ardeshir Irani ) थे। उस दशक में फ़िल्मों का विषय वस्तु मुख्यतौर पर प्रेम रहता और संगीत एक मुख्य अंग के रूप में उभर कर सामने आया स प्रेम की अधिकता जब चरम पर हुई तो फिल्म निर्माण कर्ताओ ने दर्शकों के मनोरंजन हेतु

प्रेम के साथ साथ हिंसा, मारधाड़ को भी फ़िल्मों में स्थान देना शुरू किया स नतीज़ा 1960-70 के दशक की फ़िल्मों पर हिंसा का प्रभाव बना रहा स मगर एक बार फ़िर 1980 और 1990 के दशक से प्रेम आधारित फिल्में वापस लोकप्रिय होने लगी और निर्माण प्रक्रिया में और तेजी हुई। फ़िल्मों और इस उद्योग का विकास इस तरह हुआ कि प्रवासी भारतीयों में भी इनका प्रचलन उनकी बढ़ती जनसंख्या के कारण बढ़ता गया और 1990-2000 के दशक में बनी फ़िल्में भारत के बाहर प्रचलित होती गई।सन 2000 के बाद से अब तक भारतीय फ़िल्मों की लोकप्रियता लगातार बढ़ती ही जा रही है और दर्शकों के मनोरंजन के लिये फ़िल्म जगत अग्रसर है।

**कौशल कुमार सिंह, गहमर - गाज़ीपुर, मोबाइल-9903369667**

**'जय माँ सरस्वती'**

**जय -जय-जय माँ सरस्वती**
**हे सकल विश्व भव तारिणी**
**तेरे शरण में आई माता**
**जय माँ कष्ट निवारिणी।**
**शुभ्रवस्त्रा धारिणी माता**
**जय माँ हंस सवारिनी**
**जय-जय-जय पद्मासना देवी**
**हे माँ ज्ञान प्रकाशिनि।**
**विद्या-बुद्धि दायिनी माता**
**जय माँ जग उध्दारिणी**
**ज्ञान का दीप जला दो माता**
**जय माँ वीणा वादिनी।**
**कमल आसन शोभित माता**
**वीणा-पुस्तक धारिणी**
**भक्तों का दुःख हरती माता**
**जय -जय-जय जगतारिणी।**
**तीनों लोक में पूजित माता**
**भव-बंधन भय हारिणी**
**काव्याकृति करे आरती**
**जय-जय माँ विश्वधारिणी।**

**कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'**
**योगनगरी मुंगेर, बिहार**

## उड़ने तो दीजिए

**स**माज जननी है नारी, जो नारी समाज को जन्म दे सकती है वह इतनी कमजोर नहीं है कि हम उसे अपने एहसानों तले दबा कर रखें।अपनी कविताओं, अपने कहानीयों के माध्यम से उसकी सुरक्षा की बात करें, उसे अबला, सबला बताते हुए उसके मनोबल को गिराने का काम करें। नारी को सम्मान देने का यह मतलब नहीं होता है कि हम उसे एहसास कराये कि वह अबला है, असुक्षित है और हम उसके चारो तरफ सुरक्षा कवच बना कर चल रहे हैं। इससे आपका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा मगर आने वाली नस्लें अपना मनोबल खो देगी।

मेरे पति पुलिस में हैं और मैं अपना पार्लर व साड़ी स्टोर चलाती हूँ। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आती जाती रहती हूँ। मेरे पति ने कभी मुझे अकेले जाने या अपने व्यवसाय के फैसले लेने से नहीं रोका, यहाँ तक की मैं यदि अपनी समस्या बताती भी हूँ तो उनका सीधा जबाब होता है। समस्या आपकी है इसके समाधान की तलाश भी आप करो। उनकी यह बात मुझे शुरू में बहुत बुरी लगती थी, मैं नाराज हो जाती थी कि आप मेरी समस्याओं पर मेरा साथ नहीं देते, आप मेरे व्यवसाय मे साथ नहीं चलते, लेकिन आज मैं महसूस कर रही हूँ कि उनका वह व्यवहार मुझे अंदर से मजबूत कर गया।

आज मैं किसी भी समस्या का पत्थर से भी अधिक कठोर बन कर सामाना करती हूँ, समस्या चाहे कितनी बड़ी क्यों न हो मैं उसे अपने दम पर हल कर लेती हूँ। मेरी अपनी एक अलग पहचान है। और आज मैं उनके इस व्यवहार को समझ पाई कि क्यों वह ऐसा करते थे। यदि वह इस प्रकार नहीं करते तो शायद मैं आज चुल्हे चौके से बाहर नहीं आ पाती। ये बात अलग है कि मेरे सामाने कठोर बोल कर एक मजबूत सुरक्षा घेरा वह जरूर बनाये रहे, लेकिन वह भी इतनी बारिक धागें की मेरी आँखे उसे देख नहीं पाती थी।

नारी के विषय में अपनी बातें बोल लिख कर तालीयाँ बजवाने और वाहवाही लूटने इतना भी नहीं समझ पाते कि मोम बना कर परोसे गये शब्द नारी मन पर कैसे ज्वालामुखी बन कर फट रहे हैं। मगर उन्हें उससे क्या, उनका तो काम हो रहा है। नारी अपने आपको हीन समझ कर घुटती है तो घुटती रहे। किसी को अधिकार नहीं है नारी को अबला, कमजोर बताकर, उसके कष्ट, दर्दो को समाज में सुनाकर उसके प्रति झूठी संवेदना इक्ट्ठा करने की। महिला-पुरूष के नाम पर समाज को बॉटने की। हम महिलाएं खुद में सक्षम है कि अपनी मंजिलें खुद बना लें, बस आप हमें स्वतंत्र रूप से उड़ने की आजादी तो दीजिए।

**सरिता सिंह, एस एस बुटिक भागलपुर**

व्यंग्य

# "आया ऊँट पहाड़ के नीचे"

लेखक ने किताब लिखी फिर बड़े नामधारी से समीक्षा लिखवाई। फिर बहुत बड़े प्रकाशन से छपवाई ।फिर उसे प्रकाशन ने ढोल बजा- बजा कर प्रचारित किया। फिर बड़े भव्य आयोजन में बड़े -बड़े बैनर्स के साथ बड़े बड़े लेखकों के हाथों किताब का विमोचन हुआ ।फिर किताब पुरस्कृत की गई। फिर अमेजोन फ्लिपकार्ट पर अपलोड की गई। उसके बाद निल बटा सन्नाटा आया।बोला बहुत उछल रहे थे, उछाल रहे थे, सबको पछाड़ रहे थे । अब खरीदलो खुद ही, पढ़ लो खुद ही,इतनी अक्ल नहीं थी कि किताब पढ़ने वाले कौन हैं वही जिन्हें पछाड़ कर चिढ़ाकर ऊँट बने थे ।अब लेखक और प्रकाशक दोनों सकते में हैं ,सदमे में हैं । पाठक तो वही लेखक थे जिनसे वह प्रतिद्वंदिता कर ऊँट की तरह आगे- आगे दौड़ रहा था और वे भौचक्के होकर देख रहे थे ये हो क्या रहा है?अब वे परोक्ष कह रहे हैं वे ही डूबते का तिनके की तरह सहारा बने और वे पहाड़ की तरह अकड़कर जड़ हो गए हैं । जैसे अब वे मन- मन में हँस रहे हैं और कह रहे हैं बहुत पतंग सा उड़ लिया बड्डे वाला साहित्यकार बनकर अब आजा बेटे उतर आ जमीन पर ।हम वो हैं जिन्होंने रेत की समाधि को रेत में तब्दील कर दिया । प्रकाशक कभी किताब को कभी अपने प्रकाशन को देख रहा है। चालू रखूँ या बंद करूँ? साला जेब से भी लगाया ,लेखक का भी लगवाया हम तो दोनों डूब रहे हैं।अब क्या करूँ?वह लेखक को फोन करता है बिक न रही कुछ प्रचार प्रसार करो ,लेखक पूछता है ,'और इससे ज्यादा क्या करूँ ।

प्रकाशक कहता है अपने यार दोस्तों को लिंक भेज , कुछ तो खरीदवाओ। लेखक जहाँ भी लिंक भेजता है वहाँ से हाथ जोड़कर बधाई आती है । नेट से लड्डुओं का थाल भी आता है। मगर वो नहीं आती आता जिसका इंतजार है । लगता है भैस पानी में चली गई है ।प्रकाशक अब वह कोई दूसरा धंधा करने की सोच रहा है मगर लेखक को धंधा आता तो कलम ही क्यों उठाता ।अब एक रास्ता बचा है तू मेरी पीठ खुजा मैं तेरी खुजाऊँ के बाद ।तू मेरी खरीद मैं तेरी खरीदूँ ।किसी विमोचन ,मेले में फ्री रखकर ,लगा दी जाए तो एक न बचेगी ।हम असली भारतीय हैं ।फ्री में सुगर का मरीज भी चार रसमलाई निचोड़कर खा आता है।शादी में जितने दिए उससे दस गुना वसूल आता है। हमारे सामने वाले को हर शादी के बाद दो दिन तक दस्त लगे रहते हैं।हमारी एक ताई शादी में गांव में तीन बार का घी बूरा खा जाती थी ।बाद में उसे घी बूरे की शौच लगती थी।पूछने पर इतना खा कैसे लेती हो वह बोली थी कि जीभ पर रखकर बिना टेस्ट किए निगल जाती हूँ।भला जब न जीभ ने चखा न आँतों ने पचाया न शरीर को लगा उसे शरीर में सैर सपाटे कराने की जरूरत क्या थी ।प्रसाद के नाम पर फ्री खाने वालों की लाइन लग जाती है।क्योंकि वहाँ भिखारी वाली फीलिंग नहीं होती ।सेल में हम क्यों भागते हैं? चाहे बेकार ही मिले सस्ता तो होगा ।खैर जिसकी करनी वह भुगते हम तो पीडीएफ भेज देते हैं जो पढ़े उसका भी भला जो न पढ़े उसका भी भला ।सरस्वती जी और लक्ष्मी जी का बैर है। दोनों स्त्रियाँ जो हैं ।लेखक साधना सरस्वती जी की करे और इनाम लक्ष्मी से मांगे है नहीं अक्ल का मारा ।लक्ष्मी चाहिये तो अंबानी की तरह धंधा करे ।किसे पागल कुत्ते ने काटा है दूसरों की दर्द भरी कहानियाँ /कविताएँ पढ़कर रोये ।अपनी जिंदगी के दर्द कम हैं क्या रोने को ?लोग तो कुछ मनोरंजन वाली ,हँसाने वाली, वाह -वाह टाइप वाली , आध्यात्मिक कथा टाइप वाली चीजें देखना चाहते हैं। गांव में स्त्री बने पुरुष का डांस देखने पूरा गांव जुट जाता था।I लोगों के मनोरंजन अलग - अलग टाइप के हैं उसकी लिए मोबाइल है न।लेखक बेकार चीज के उत्पादन में क्यों लगे हैं? अब कहेंगे स्वांत सुखाय तो फिर सुख अब स्वयं ही ले न ।दूसरों के दुख को खरीदकर पाठक सुख कैसे लेगा ?अब आप कहेंगे यही साहित्य है है तो मगर इसका अब अचार डलेगा या मुरब्बा ।आप कहेंगे मरने के बाद हम चाँद पर पहुंचेंगे। चाँद पर मरकर वे पहुँचे थे जिनकी कोर्स में लगा दी गईं थीं हमें मजबूरन रटनी पड़ी थीं । बाकी की तो रिसाइक्लिंग हो गई।चोरों के काम आई नाम बदलकर।आप संतोष कर सकते हैं नाम रहे न रहे रचना रहेगी भले ही अदलबदल कर रहे।अब मोबाइल किसने बनाया, मिक्सी ,फ्रिज ,ऐसी किसने बनाया ,बिजली किसने बनाई ,ट्रेन किसने बनाई ,हवाई जहाज किसने बनाया कितनों को पता? आप का उत्पाद रहे उत्पादक का नाम रहे न रहे क्या फर्क पड़ता है ।हम तो नाती पोतों से कह देंगे मेरा लिखा अपने नाम से लिखकर लेखक बन जाना ।बहुत कर ली ईमानदारी , नैतिकता,सज्जनता । भाड़ में जाएँ ये तीनों ।

जिंदगी खराब कर दी है इन्होंने जिसके गले पड़ी हैं ये तीन देवियाँ। अब हम अपने साहब के नक्शे कदम पर चलेंगे। साहब कौन है ये आपके विवेक पर छोड़ते हैं ।हम जा रहे हैं मूंग वड़ा रेसिपी देखने क्योंकि मूंग दाल भिगोकर पीसकर रखी हुई है ।बाप रे शालिनी किचन में मूंग वड़े रेसिपी पर छयालिस लाख व्यज । पेट/ जीभ से कभी कोई चीज नहीं

जीत सकती है ।ननदों को किताब की पीडीएफ भेजती हूँ तो कोई रिएक्शन नहीं देती मूंग वड़े भेजूँगी तो खुश हो जायेंगी ।खुद बनाने को वे भी रेसिपी देखकर उसके व्यूज बढ़ाएंगी ।जिनसे जिक्र करेंगी वे भी बढ़ाएंगे और जो मेरा लेख पढ़ेंगे वे बीवी से कहेंगे उनकी बीवियां भी बढ़ाएंगी।मुझे लगता है हमें लिखना छोड़ मूंग बड़े या उड़द बड़े की दुकान खोलनी चाहिये ।फिर देखना क्या भर- भर नोटों की थैलियां आयेंगी ।

पकोड़ा आइडिया बुरा नहीं था मगर वो कहावत है न गधे को दिया नमक मेरी ही आँख फोड़ दी।लोग उल्टे उन्हें ही चिपट गए।पकोड़े की दुकान खोलकर तो देखते ।मेरे पास सभी लेखकों के लिए कुछ बढ़िया वाली टिप्स है । किताब के विमोचन में खाने का इंतजाम न रखें ।हह्ल के बाहर अपनी तरफ से मूंग वड़े ,उड़द वड़े ,छोले भटूरे आदि की पेड स्टाल लगा दें ।विमोचन से छूटकर जब भूख से बेहाल लेखक स्टाल पर जाएँ तो मनमर्जी का भोजन मन- मन में गालियां देते हुए पाएँ।उस पैसे को आप किताब की बिक्री में कन्वर्ट कर फेसबुक पर पोस्ट लगा दें कि इतने की बिक्री हुई ।बिक्री किस चीज की हुई गोल कर जाएँ ।पुस्तक बेस्ट सेलर बनकर अखबार में छपेगी तो और ग्राहक मिलेंगे।

**डॉ पुष्पलता मुजफ्फरनगर**


**गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव एवं सम्मान समारोह 2022 में आये सभी अतिथियों का**

**सिंह लाइफ केयर हास्पीटल, गाजीपुर**

**हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता है।**

**डा0 राजेश सिंह**

**सर्जन**

**डा0 अनुपमा सिंह**

**महिला रोग विशेषज्ञ**


## ग़ज़ल

इतनी नफ़रत लाता कैसे।
तुझ-सा चेहरा पाता कैसे।

किया नहीं जब कुछ जीवन में,
बिना वजह इठलाता कैसे।

दरिया सूखी सावन प्यासा,
अपनी तृषा बुझाता कैसे।

अपने बैठे दूर अटारी,
मन की बात सुनाता कैसे।

पत्थर जैसे लोग सभी थे,
सबका दिल पिघलाता कैसे।

सब अपने अपने में गुम थे,
अपने गुन दिखलाता कैसे।

सबकी चाहत अलग-अलग थी,
सबका दिल बहलाता कैसे।

प्यार दूर से ही मुमकिन था,
पास सभी तक जाता कैसे।

जिसने सारे दर्द दिए थे,
वही ज़ख्म सहलाता कैसे।

इक सूरत थी इस किशोर की,
बदल बदल दिखलाता कैसे।


**किशोर श्रीवास्तव**
**दिल्ली एनसीआर**
**मो. 9599600313**

**जीवन**

# गोपाल राम गहमरी

गोपाल राम गहमरी ;१८६६-१६४६द्ध हिंदी के महान सेवक, उपन्यासकार तथा पत्रकार थे। वे ३८ वर्षों तक बिना किसी सहयोग के 'जासूस' नामक पत्रिका निकालते रहे, १०० से अधिक उपन्यास लिखे, सैकड़ों कहानियों के अनुवाद किए, यहां तक कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'चित्रागंदा' काव्य का भी (पहली बार हिंदी अनुवाद गहमरीजी द्वारा किया गया) अनुवाद किए। वह ऐसे लेखक थे, जिन्होंने हिंदी की अहर्निश सेवा की, लोगों को हिंदी पढ़ने को उत्साहित किया, देवकीनंदन खत्री के बाद अगर किसी दूसरे लेखक की कृतियों को पढ़ने के लिए गैरहिंदी भाषियों ने हिंदी सीखी तो वे गोपालराम गहमरी ही थे। इन्होंने बंगला से नाटकों, उपन्यासों का अनुवाद  हिन्दी में किया । बहुमुखी प्रतिभा के धनी गोपालराम गहमरी कविताएं, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध सहित साहित्य की समस्त विधाओं में लेखन किया। २०० से ज्यादा जासूसी उपन्यास गहमरी जी ने लिखे। 'अदभुत लाश', 'बेकसूर की फांसी','सरकती लाश', 'डबल जासूस', 'भयंकर चोरी', 'खूनी की खोज' इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

गोपाल राम गहमरी का जन्म पौष कृष्ण ८ गुरुवार संवत् १६२३ ;सन् १८६६ ईद्ध में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के गहमर में हुआ था। इनके दादा श्री जगन्नाथ साहू फ्रांसीसी छींट के व्यापारी थे। उनके दो पुत्र थे-रघुनंदन और बृजमोहन। रघुनंदनजी के तीन पुत्र हुए राम नारायण, कालीचरण और रामदास। गोपालराम गहमरी, रामनारायणजी के पुत्र थे। कालीचरण निरूसंतान थे और रामदास के एक ही पुत्र थे महावीर प्रसाद गहमरी। गोपालराम गहमरी को भी एक ही पुत्र थे इकबाल नारायण। महावीर प्रसाद गहमरी के दो पुत्र थे देवता प्रसाद गहमरी एवं दुर्गा प्रसाद गहमरी। देवता प्रसाद गहमरी बहुत दिनों तक काशी से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'आज' और 'सन्मागं' से जुड़े रहे। गोपाल राम गहमरी जब छह मास के तभी पिता का देहांत हो गया । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गहमर में हुई थी। वहीं से वर्नाक्यूलर मिडिल की शिक्षा ग्रहण की। १८७६ में मिडिल पास किया। फिर वहीं गहमर स्कूल में चार वर्ष तक छात्रों को पढ़ाते रहे और खुद भी उर्दू और अंग्रेजी का अभ्यास करते रहे। इसके बाद पटना नार्मल स्कूल में उत्तीर्ण होने पर मिडिल पास छात्रों को तीन वर्ष पढ़ाने की शर्त पर  एडमिशन हुआ। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इस शर्त को स्वीकार कर लिया। लेकिन बीच में ही पढ़ाई छोड़कर गहमरी जी बेतिया महाराजा स्कूल में हेड पंडित की  तभी पिता का देहांत हो गया । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गहमर में हुई थी। वहीं से वर्नाक्यूलर मिडिल की शिक्षा ग्रहण की। १८७६ में मिडिल पास किया। फिर वहीं गहमर स्कूल में चार वर्ष तक छात्रों को पढ़ाते रहे और खुद भी उर्दू और अंग्रेजी का अभ्यास करते रहे। इसके बाद पटना नार्मल स्कूल में उत्तीर्ण होने पर मिडिल पास छात्रों को तीन वर्ष पढ़ाने की शर्त पर एडमिशन हुआ। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण इस शर्त को स्वीकार कर लिया। लेकिन बीच में ही पढ़ाई छोड़कर गहमरी जी बेतिया महाराजा स्कूल में हेड पंडित की जगह पर कार्य करने चले गए। वर्ष १८८८ ई  में नार्मल की परीक्षा पास की और १८८६ में रोहतासगढ़ में हेडमास्टर नियुक्त हो गए। बंबई के प्रसि( प्रकाशक सेठ गंगाविष्णु खेमराज के आमंत्रण पर १८६१ में गहमरी जी बंबई चले गए। १८६२ में गहमरी जी राजा रामपाल सिंह के निमंत्रण पर कालाकांकर चले आए तो यहां वे संपादकीय विभाग से संबंध हो गए और एक वर्ष तक रहे। यहीं पर काम करते हुए बांग्ला सीखी और अनुवाद के जरिए साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास भी किया। गहमरी जी एक जगह बहुत दिनों तक नहीं टिकते थे। एक बार फिर सन् १८६३ में वे बंबई की ओर उन्मुख हुए और यहां से निकलने वाले पत्र 'बंबई व्यापार सिंधु' का संपादन करने लगे जो महज ६ महीने के बाद बंद हो गया, उसके बाद एक हिंदी प्रेमी एसएस मिश्र ने गहमरी जी को बुलाकर उन्हें 'भाषा भूषण' के संपादन का भार सौंपा मगर यह भी अधिक दिन तक नहीं चल सका । पं बालमुंकुद पुरोहित मंडला से मासिक 'गुप्तकथा' का प्रकाशन तो शुरू हुआ, लेकिन यह भी बंद हो गया, उसक बाद गहमरी जी दुबारा मुंबम्ई की तरफ रूख किया यहां इनके मित्र खेमराज जी ने 'श्री वेंकटेश्वर समाचार'  नाम से पत्र का प्रकाशन शुरू कर दिया था। यह पत्र गहमरी जी के कुशल संपादन में थोड़े समय में ही लोकप्रिय हो गया। इसी दौरान प्रयाग से निकलने वाले 'प्रदीप' (बंगीय भाषा) में ट्रिब्यून के संपादक नगेंद्रनाथ गुप्त की एक जासूसी कहानी 'हीरा मूल्य' प्रकाशित हुई थी। गहमरीजी ने इस कहानी का हिंदी में अनुवाद कर श्री वेंकटेश्वर समाचार में कई किश्तों में प्रकाशित किया। इतने संघर्ष के बाद  गहमरी जी पाठकों के मन-मस्तिष्क को समझ चुके थे। वे यह भी समझ चुके थे कि जासूसी ढंग की कहानियों के जरिए ही पाठकों का विशाल वर्ग तैयार किया जा सकता है। गहमरी जी पूरी तैयारी के साथ जासूसी ढंग के लेखन की ओर उन्मुख हुए। जनवरी, १६०० में 'जासूस ' नामक पत्रिका निकलना शुरू हुई, जिसने अपने प्रवेशांक से ही लोकप्रियता की सारी हदों को पार करते हुए शिखर को छू लिया था। इसकी अपार लोकप्रियता को देखकर गोपालराम गहमरी जब जासूसी ढंग की कहानियों और उपन्यासों के लेखन की ओर प्रवृत्त हो हुए तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा यह पत्रिका अपनी पाठकों की बदौलत और उनके अपार स्नेह के कारण एक दो वर्ष नहीं, पूरे ३८ वर्ष तक गहमर जैसे गांव से निकलती रही। हिन्दी साहित्य का यह पुरोधा वाराणसी के बेनियाबाग के पास भवन बना कर वही रहने लगा और वही ८० वर्ष की आयु में २० जून १६४६ को इस दुनिया से विदा होगया और अपने पीछे छोड गया हिन्दी साहित्य का कभी न मिटने वाला इतिहास और साथ ह दे गया लोगो को कुछ कर गुजरने की प्रेरणा।

सिनर्जी परिवार की तरफ से
आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
हम आपके स्वस्थ एवं सुखी जीवन की
कामना करते हैं।
Solid Waste
Guest
Officer
GARH MELA HAPUR 2018
Security Surveillance
Biometric System
Mobile App Development
Fleet Management
Drone Assembling
GPS Solution
Taxi Dispatch System
Radio Taxi Solution
Working together
"सिनर्जी" दे आपके सपनों को "नई दिशा"
Aarogyam
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उ.प्र.
काशी आतिथ्य
श्री योगी आदित्यनाथ जी
मा० मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
निरामय
स्वस्थ समृद्ध यथार्थ भविष्य की ओर
दर्पण
Synergy Telematics Pvt. Ltd..
A-3, A Block, Sector 59, Noida, Uttar Pradesh 201307
http://www.synergytelematics.com

## January

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

## February

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | | | | |

## March

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

## April

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| 30 | | | | | | |

## May

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

## June

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | |

## July

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| 30 | 31 | | | | | |

## August

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

## September

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

## October

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

## November

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | | |

## December

| su | mo | tu | we | th | fr | sa |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |